स्तुति पथ

रचयिता

मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज

प्रकाशक

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

सागर (म. प्र.)

- **कृति** : स्तुति पथ
- **रचयिता** : मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज
- **अंग्रेजी अनुवाद** : डॉ. प्रेमचन्द जैन, गंजबासौदा
- **संस्करण** : प्रथम, मई, 2010
- **आवृत्ति** : 1100
- **प्राप्ति स्थान** : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  सागर (म. प्र.)094249-51771
  Email - dharmodayat@ gmail.com
- **मुद्रक** : विकास आफसेट, भोपाल

आद्य कथ्य

'स्तुति' एक ऐसी विधा है, जिसमें आराधक अपने आराध्य के निकट अपने को कर लेता है। स्तुति की इस विधा का अवलम्बन लेकर पूर्वाचार्यों ने अपने प्रकृत विषय को स्तुतियों में गुम्फित किया है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने अनेक भक्तियों को लिखकर स्तुति की विधा को प्रवाहित किया है। स्तुति की विधा सदा से चली आई है। भगवान् महावीर के समवशरण में इन्द्र ने साक्षात् स्तुति की। भगवान् आदिनाथ के समवशरण में चक्रवर्ती द्वारा स्तुति करने का उल्लेख आदिपुराण में वर्णित है। यूँ तो स्तुति सभी भव्य प्राणी भगवान् के समक्ष करते हैं, चाहे भगवान् साक्षात् हों या न हों। स्तुति श्रमण और श्रावक का आवश्यक कर्म है। आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्राकृत में स्तुति की है तो आचार्य समन्तभद्र, पूज्यपाद आदि ने संस्कृत में स्तुति की है। आचार्य समन्तभद्रजी के देवागम स्तोत्र, युक्त्यनुशासन, स्वयंभूस्तोत्र आदि ग्रन्थों की रचना स्तुति प्रधान है। पूर्वाचार्यों के इन नामों के अतिरिक्त अन्य बहुत से आचार्यों ने समय-समय पर स्तुति की रचना की है। उन सभी का नामोल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक नहीं है।

'स्तुति पथ' इस कृति में अनेक स्तुतियाँ हैं और ये सभी स्तुतियाँ मात्र आठ या नौ छन्दों में हैं। लगभग आठ छन्दों में की गई स्तुतियाँ 'अष्टक' नाम से जानी जाती हैं। प्रस्तुत कृति में दश अष्टक निबद्ध हैं। इन अष्टकों में भगवान् महावीर और उनके बाद के प्रसिद्ध आचार्यों की स्तुति की है। आप यह मत समझना कि इतने ही आचार्य मुख्य या प्रसिद्ध हैं, अन्य नहीं किन्तु ग्रन्थ का कलेवर अधिक न बढ़ जाए इसलिए इतने ही आचार्यों की स्तुति को लिखकर अष्टक की विधा को प्रवाहमान किया है। साथ में यह भी भावना रही कि इन अष्टकों के माध्यम से वर्तमान के बालक-बालिकाओं को स्तुति करने में सुविधा बढ़े और अधिक छन्द प्रमाण न होने से कम समय में सरलता से संस्कृत में स्तुति करने की परम्परा अक्षुण्ण बनी रहे।

मात्र आठ छन्दों में 'अष्टक' के माध्यम से स्तुति करने की यह परम्परा अति प्राचीन है। वर्तमान में जो कुछ भी लिपिबद्ध मिलता है वह महावीर भगवान् के समकालीन या बाद का ही मिलता है। वस्तुतः यह स्तुतियाँ हमने स्वयं अपने

भक्ति भावों को उल्लसित करने के लिए रची हैं।

'प्रतिक्रमण पाठ' अत्यन्त प्राचीन माना जाता है। इस पाठ के रचयिता साक्षात् गौतम गणधर थे, यह गुरु परम्परा से अनुश्रुति में चला आ रहा है। श्रमण और श्रावक के लिए इस प्रतिक्रमण की रचना भिन्न-भिन्न रूप से गौतम गणधर ने की है। यदि यह सच है तो हम कह सकते हैं 'अष्टक' परम्परा की नींव गौतम गणधर ने डाली। उनका समय ईसा से पाँच शताब्दी पूर्व का है। 'वीरभत्ति' का कायोत्सर्ग करने के पश्चात् जो पाठ पढ़ा जाता है वह 'अष्टक' रूप में है। इसके अलावा 'गणधर वलय' भी अष्टक है, भले ही उसमें 10 छन्द हों। जिस प्रकार 'शतक' परम्परा में 100 से अधिक श्लोक होने पर भी वह शतक ही कहलाता है उसी प्रकार आठ से एक-दो छन्द अधिक होने पर भी वह अष्टक ही कहलाता है। 'समाधि शतक' में 105 छन्द हैं 'आप्तमीमांसा' में 105 श्लोक हैं। अतः गणधर वलय में 10 छन्द होने पर भी वह 'अष्टक' ही मानना चाहिए। इसके बाद आचार्य कुन्दकुन्द की प्राकृत में भक्तियाँ हैं, जिनमें कुछ अष्टक परम्परा के समीप हैं। आचार्य पूज्यपाददेव 5-6 वीं शताब्दी के आचार्य हुए हैं। आपके द्वारा रचित कुछ भक्तियाँ 'अष्टक' परम्परा को पुनर्जीवित करती हैं। जैसे बृहत् सिद्धभक्ति, योगभक्ति, आचार्यभक्ति, चारित्रभक्ति, पंचगुरु और शांतिभक्ति में क्रमशः 9, 8,11,10,11 और 8 छन्द हैं। इनमें से शांतिभक्ति तो 'शान्त्यष्टक' नाम से ही प्रसिद्ध है। इसके अलावा कुछ क्षेपक श्लोकों में 'समवशरण स्तोत्र' का नाम आता है। जो कि दश छन्दों में है। इसके अतिरिक्त 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' 'महावीराष्टक' आदि प्रसिद्ध अष्टक हैं। अष्टकों के इस इतिहास पर शायद पहले कहीं कोई स्वतन्त्र इतिहास देखने में नहीं आया। आशा है विद्वान् लोग इस परम्परा पर कोई स्वतन्त्र आलेख आगे लिखेंगे।

इस कृति में अष्टकों के अतिरिक्त आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की पूजन एवं आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का प्रशस्ति पत्र भी निबद्ध है। प्रशस्ति पत्र में चेतन एवं अचेतन कृतियों को निबद्ध करके आचार्य ज्ञानसागरजी का सम्पूर्ण कृतित्व समायोजन किया है। इस तरह इन स्तुतियों का पाठ सर्वत्र हो और आबालबृद्ध सभी लाभान्वित हों इन्हीं भावनाओं के साथ.....

रचयिता

प्रस्तावना

भक्ति की भावधारा से आप्लावित हृदय जब मुखर होता है, तब भक्ति-गीतों के रूप में स्तुतियों के रूप में प्रतिध्वनित होता है। स्तुति का स्थान हृदय-प्रदेश है। स्तुति की भाषा हृदय की भाषा है। स्तुति में आराध्य के गुण-कीर्तन की प्रधानता होती है। भक्त अपने हृदय को आराध्य के समक्ष प्रकट कर देता है, विवृत कर देता है। स्तुति में भावतत्त्व की प्रधानता होती है, जिसका प्रकटीकरण अन्तःप्रेरणा से होता है।

जैन परम्परा में ही प्रस्तुत कृति 'स्तुति पथ' में कोई एक अष्टक नहीं है- अपितु इसमें दस अष्टक हैं। यह जैन संतों , आचार्य के स्तवन का सुन्दर स्तोत्र काव्य है। स्तुति पथ के अंतर्गत विभिन्न जैन तीर्थंकरों, आचार्यों अथवा सन्तों यथा महावीर, भरतमुनि, कुन्दकुन्द मुनि, आचार्य समन्तभद्र, मुनि शांतिसागर, मुनि श्री ज्ञानसागर, विद्यासागर मुनि आदि की स्तुति की गई है। इस स्तुति काव्य के अष्टकों में भक्त-हृदय मुनि श्री प्रणम्यसागरजी की स्वच्छ सलिला गंगाधारा और कवि-हृदय की कलात्मक कविता की कलिन्द-नन्दिनी कल्लोलिनी यमुना नीरधारा का मञ्जुल संगम है। इस स्तुति पथ में भक्त को भक्ति की रसधारा मिल जाती है तो काव्य-रसिक इसमें कविता की कला की छटा निहार लेता है। कवि ने अलग-अलग अष्टकों को अलग-अलग छन्दों में निबद्धकर यह सिद्ध कर दिया है कि भक्ति की यह भाव सरिता किसी भी छन्द में स्वच्छन्द प्रवाहित हो सकती है। वस्तुतः अर्थ, छंद, अलंकारादि ऋषिधर्मी रचनाकारों की बाग्धारा का अनुगमन करते हैं-'ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति' भक्त-कवि ने संस्कृत के परम्परागत छन्दों के अतिरिक्त स्तुतियों में चौपाई, दोहा आदि का भी संस्कृत में प्रयोगकर अपनी प्रतिभा में नूतनता का समावेश किया है। भक्त-हृदय की अनुभूतियाँ यहाँ सरल शब्दों में गुम्फित हैं, अतः भाषा कहीं भी बोझल प्रतीत नहीं होती। सरलता का ध्यान रखते हुए भी कवि ने इस बात की चेष्टा की है कि काव्य सौन्दर्य कहीं फीका न पड़े।

अलंकारों की रमणीयता की भी झलक यत्र-तत्र मिलती है। यथा विरोधाभास को व्यक्त करता यह श्लोकांश-

'विद्याधरोऽपि सुतरां हृदयस्थविद्यो'

जिनवाणी पर नदी के रूप को आरोपित कर रूपक अलंकार की बड़ी सुन्दर संयोजना की गई है-

शोभितवृत्तं नययुतकूलं, हंसयतीनां मधुरसुघोषम्।
चेतनभंगोच्छलनसुपूरं, श्री जिनवाक्यनदं विनमामि॥

'निजबोधाष्टकम्' विचारों की आध्यात्मिक उच्चता से अनुप्रमाणित है। यति की समदर्शिता को व्यक्त करता एक उत्कृष्ट श्लोक हैं-

मानापमाने सदने रणे वा, कालेऽप्यकालेऽयसि काञ्चने वा।
पंके प्रियांके गगने गिरीशे, यतिर्विधत्ते तुल्यात्मवृत्तिम्॥

रचनाकार का यह श्लोक भर्तृहरि विरचित **'अहौ वा हारे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा ...'** श्लोक की बरबस याद दिला जाता है।

यह स्तोत्र-काव्य, जिसमें दस अष्टकों के अतिरिक्त अन्त में 'आचार्य श्री ज्ञानसागरप्रशस्तिपत्रम्' विद्यमान है, अन्तर्बाह्य शुचिता को प्रदान करने वाला है। चित्त की शांति , प्रसन्नता और पावनता प्रदान करने वाला तथा कायिक, वाचिक और मानसिक विशुद्धि प्रदान करने वाला यह स्तोत्र का काव्य है। स्तुतियों में अनुस्यूत भाव, उनकी श्रुति मधुरिता, शब्दलालित्य और काव्य सौन्दर्य का अपूर्व संगम इस स्तुति-ग्रंथ को अप्रतिम आभा-मण्डल से परिपूर्ण कर देता है।

मुनि श्री प्रणम्यसागर रचित यह स्तुति पथ निश्चय ही जैन-सन्तों के पुण्यचरिताख्यान के साथ-साथ भक्ति भाव-भावित अविभक्तहृदय भक्त की भक्ति की तृषा को अध्यात्म की शीतलधारा से संतृप्त करेगा। काव्य गंगा-तरंगावगाही सहृदय-हृदयों को कविता सुर-सरिता के तरलतर तरंगों में निमग्न कर अतिशय आनंद प्रदान करेगा तथा विद्वत्-समाज में अतिशय प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

चन्द्रकान्त शुक्ल 'भास्वर'
एम.ए.(संस्कृत-हिन्दी), साहित्यचार्य, पी-एच.डी., डी.लिट्
(पूर्व कुलपति एवं कुलपति का. सिंह दरभगा)
विश्वविद्यालय प्राचार्य, संस्कृत विभाग
रांची विश्वविद्यालय
राँची- 834008, झारखण्ड

दिनांकः 19 जनवरी, 2008

स्तुति का प्रयोजन

स्तुति करने से प्रशस्त परिणाम उत्पन्न होते हैं। उसमें उपास्य के गुणों का अच्छी तरह वर्णन रहे अथवा न रहे, पर गुणकीर्तन होने से कल्याण की प्राप्ति होती है। विद्वानों ने स्तोत्र को **पूजाकोटिसमं स्तोत्रं**–एक करोड़ बार पूजा करने से जो फल मिलता है, उतना एक बार स्तोत्र/स्तुति पाठ करने वाले व्यक्ति का चित्त भगवान् के गुणों में संलग्न हो जाता है, अतः स्तोत्र पाठ पूजा की अपेक्षा अधिक लाभप्रद है।

आचार्य समन्तभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में लिखा है–तुम पुण्यकीर्ति और मुनियों के इन्द्र हो। यदि तुम्हारे नाम का उच्चारण कर लिया जाय तो वह हमें पवित्र बना देता है, यही तुम्हारे स्तवन का प्रयोजन है, तथ्य यह है कि स्तोत्र /स्तुति पाठ करने से चित्त में निर्मलता उत्पन्न होती है, जिससे पुण्य का बन्ध होता है।

स्तुति रचना का उद्देश्य–जैन स्तुतिकारों का मूल भाव विषय–कषायों से दूर, संकल्प–विकल्प के भावों से पृथक् भावों की निर्मलता, चित्त की स्थिरता के लिए ही उनका उद्देश्य रहा है। भक्त यदि प्रसन्न मन से भगवान् की स्तुति करता है तो शुभभाव होने से पुण्य रूपी स्वर्गसम्पदा तो उसे स्वमेव मिल जाती है और यदि उनके सद्भक्त मुक्ति को प्राप्त कर लें तो इसमें कौन–सा आश्चर्य है। अतः यह कहा जा सकता है कि जैन स्तोत्रकारों का स्तोत्र रचने का मूल उद्देश्य पापों से बचाना, अष्ट कर्मों का नाश, अर्हत् पद की प्राप्ति व स्वान्त सुखाय रहा है।

1. पापों से मुक्ति– स्तुति की रचना पाप कर्म से बचने के लिए की जाती है। उत्कृष्ट भक्ति से आबद्ध सम्पूर्ण कर्म पाप क्षय को प्राप्त हो जाते हैं।

अतः जैन स्तोत्र, स्तुति, अर्चना, वन्दना आदि शुभ भाव होने से पुण्य के कारण हैं। पूर्वभव में संचित पापों का क्षय करने वाले हैं। इस प्रकार स्तोत्रों का उद्गम पापों को दूर करने के लिए है।

2. अष्टकर्म नाश करने के लिए–जैन कर्म सिद्धान्त के अनुसार तीर्थंकरों के गुणानुवाद द्वारा ज्ञानावरणादि अष्टकर्म नष्ट हो जाते हैं, इसी कारण जैन

स्तुतियों का लक्ष्य अष्ट कर्मों का विनाश करना भी है। जैन स्तोत्र साहित्य के आलेख में पाश्चात्य विद्वान् डॉ. शुभिंग कहते हैं कि–स्तोत्रों का प्रधान लक्ष्य मनुष्य को कर्मबन्धन से मुक्त करना है।

3. अर्हत् पद की प्राप्ति–जैनदर्शन में मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य अर्हत् पद की प्राप्ति माना गया है। अरिहन्त की भक्ति से मानव, संसार से मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। इसलिए पाँच परमेष्ठियों में प्रथम अरिहन्त भगवान् को नमस्कार किया जाता है। शास्त्रों में व स्तोत्रों में अर्हंत भक्ति को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है एवं अरिहन्त के गुणों का वर्णन सब स्थानों पर प्राप्त हैं। भक्त की भावना रहती है कि जब तक मुक्ति की प्राप्ति न हो तब तक आपके चरणों में ही बना रहूँ।

अतः स्तोत्र साहित्य का इस दृष्टि से परम लक्ष्य अर्हत् पद प्राप्ति है।

4. स्वान्तः सुखाय– जैनाचार्यों द्वारा रचित स्तोत्र साहित्य में सर्वत्र आत्म शान्ति की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। आत्मश्लाघा से दूर जैनाचार्यों ने आत्मतत्त्व की प्राप्ति हेतु ही स्तोत्रों की रचना की। जैन स्तोत्रकार यह अच्छी तरह जानते हैं कि पंचेन्द्रियों के वशीभूत होने से यह अपने आपको दुःखी पाता है। आत्मशान्ति के लिए उसे अवकाश ही प्राप्त नहीं होता। कारण कि सर्वलोक को काम भोग बन्ध की कथा ही आज तक सुनने में आई है। परिचय और अनुभव भी उसी का करता है इस कारण वह सरल किन्तु उससे विपरीत आत्मा की चर्चा को न तो सुना हे, न परिचय किया और न ही अनुभव अतः वही कठिन है।

जैन स्तुति की रचना का मुख्य उद्देश्य दुःखी एवं चिन्ता ग्रस्त मानव को शान्ति पहुँचाना है। स्तुतियों के पठन–श्रवण मात्र से ही क्रोध रूप भाव क्षमा में परिवर्तित होकर स्वान्तः सुखाय की अनुभूति होती है।

प्रस्तुति स्तुति पथ कृति में 10 अष्टकों का समावेश कर पूज्य मुनि श्री ने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। ये अष्टक पाठशाला में पढ़ने वाले बालकों से लेकर वृद्धों तक आसानी से याद किए जा सकते हैं। पूज्य महापुरुषों के गुणों के स्मरण से अन्तस् में शान्ति की अनुभूति प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. भरत जैन

अनुक्रम

1.	प्रार्थना	12
2.	वीराष्टकम्	14
3.	भरताष्टकम्	25
4.	शारदाष्टकम्	33
5.	कुन्दकुन्दाष्टकम्	39
6.	समन्तभद्राष्टकम्	46
7.	शान्त्यष्टकम्	53
8.	ज्ञानाष्टकम्	60
9.	विद्याष्टकम्	69
10.	मौनाष्टकम्	78
11.	निजबोधाष्टकम्	84
12.	आचार्य श्री ज्ञानसागरप्रशस्तिपत्रम्	90
13.	आचार्य श्री पूजन	101

प्रार्थना

जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्।

जिन शासन जयवन्त हो, जिन शासन जयवन्त हो।

Long live discipline of Lord Jina, Long live

मदन-मद-नाशकं, शिवद-सुख-शासकं।
अनात्म-विभासकं, स्वात्म-प्रकाशकं॥
जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्। (1)

काम और मद को नाश करने वाला, मोक्ष सुख का शासक, अनात्म तत्त्व को दिखाने वाला तथ आत्म तत्त्व का प्रकाशक जिनशासन जयवन्त हो, जयवन्त हो।

The discipline of Lord Jina which is destroyer of lust and pride, the ruler of the bliss of salvation, the demonstrator of non-soul element and the illuminator of the element of soul, that Jina-discipline may long live, long live.

सर्व-करुणाकरं, गुणिजनादर-करं।
दुःखिनां हितकरं, शत्रु-समताधरं॥
जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्। (2)

सभी जीवों पर करुणा करने वाला, गुणीजनों का आदर करने वाला, दुःखी जीवों का हित करने वाला और शत्रुओं पर समता धारण करने वाला जिनशासन जयवन्त हो, जयवन्त हो।

The discipline of Lord Jina which bestows compassion on all living beings, which respects the talented and virtuous, which is the benefactor of distressed (grief-stickens) and which assumes equanimity even on enemies that Jina-discipline may long live, long live.

पाप-पञ्चान्तकं, मोह-विध्वंसकं।
शान्ति-संवर्द्धकं, मोक्ष-पुरुषार्थकं॥
जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्। (3)

पाँच पापों का अन्त करने वाला, मोह का विनाशक, शांति को बढ़ाने वाला और मोक्ष पुरुषार्थ करने वाला जिनशासन जयवन्त हो, जयवन्त हो।

The discipline of Lord Jina which is the destroyer of all the five sins, which is the devastator of delusion, which augments tranquility and which efforts for attaining salvation, that Jina-discipline may long live, long live.

प्रमाण-नय-कीर्तनं, कदाग्रह-कर्तनं।
अनेकान्तार्थदं, रत्नत्रयात्मकं॥
जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्। (4)

प्रमाण और नय का कीर्तन करने वाला, कदाग्रह को कुतरने वाला, अनेकान्त रूप पदार्थ को देने वाला और रत्नत्रय स्वरूप जिनशासन जयवन्त हो, जयवन्त हो।

The discipline of Lord Jina which extols valid knowledge and standpoint, which nibbles the intransigence, which gives matter in the form of manifold predictions and which is in the nature of three jewels (right faiths, right knowledge & right conduct), that Jina-discipline may long live, long live.

विरोधिनय-मर्दनं, विवक्षित-वादनं।
परिग्रह-मोचकं, अहिंसा-घोषकं॥
जयतु जिनशासनम्। जयतु जिनशासनम्। (5)

विरोधी नय का मर्दन करने वाला, विवक्षित वस्तु को कहने वाला, परिग्रह को छुड़ाने वाला और अहिंसा का घोषक जिनशासन जयवन्त हो, जयवन्त हो।

The discipline of Lord Jina which crushes the contrary standpoint, which tells the intended/implied thing, which causes abandonment of attachment to belongings and which is declarer of non-violence, that Jina-discipline may long live, long live.

भगवान् महावीर

भगवान् महावीर जैनधर्म के 24 वें तीर्थंकर हैं। अहिंसा और अपरिग्रह जिनदर्शन के मौलिक सिद्धान्त हैं। भगवान् महावीर की चर्या और उपदेशों से ही उनके समय में प्रचलित यज्ञ हिंसा का समापन हुआ। स्वतंत्र भारत के संविधान की पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर एक मात्र भगवान् महावीर का चित्र बना है, जो अहिंसा धर्म की उपासना और आस्था का प्रतीक है। वर्ष 2007 से गाँधीजी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय रूप से अहिंसा दिवस मनाने का संकल्प, समूचे विश्व में भगवान् महावीर के अहिंसा धर्म से ही विश्वशान्ति होगी, इस बात का संकल्प है।

LORD MAHAVIR

Lord Mahavir is the 24th Tirthankar of Jainism, Non-violence and non-possession are fundamental principles of Jina philosophy.

The sacrificial violence in vogue during his time could be done away with through daily routine (routine duties) and preachings of Lord Mahavir. On the first page of the book - the Constitution of India, the portrait of Lord Mahavir alone has been portrayed which is symbol of adoration of the religion of non-violence and faith. The resolve to celebrate the birthday - 2nd October of Gandhiji as a non-violence day on international basis from the year 2007 is, in fact, the resolve that the world peace would emerge only through the non-violence of Lord Mahavir throughout the whole world.

वीराष्टकम् (बसन्ततिलकाच्छन्द)

Veerastakam (Basanttilka metre)

गोशालपूरणमतादिबहुप्रवादै -
राप्ताभिमानघनवह्निविदग्धमानैः।
तीर्थंकरोऽहमिति घोषित एककाले
चिख्याससेऽतिशयमाप्त न हि स्वकीयम्॥ 1॥

अन्वयार्थ : (आप्ताभिमानघनवह्निविदग्धमानैः) आप्त के अभिमान रूपी तीव्र अग्नि से जलने वाले **(गोशालपूरणमतादि बहुप्रवादैः)** गोशालक, पूरण मस्करी आदि लोगों ने अपने मत का खूब व्याख्यान द्वारा **(अहं)** मैं **(तीर्थंकरः)** तीर्थंकर हूँ **(इति)** इस प्रकार **(एककाले)** एक साथ **(घोषितः)** घोषणा कर दी **(आप्त)** हे वीर आप्त भगवन्! आपने **(स्वकीयं अतिशयं)** अपना अतिशय **(न हि)** नहीं **(चिख्याससे)** कहने की इच्छा की।

अर्थ : आप्त के अभिमान रूपी तीव्र अग्नि से जलने वाले गोशालक, पूरण मस्करी आदि लोगों ने अपने मत का खूब व्याख्यान द्वारा मैं तीर्थंकर हूँ इस प्रकार एक साथ घोषणा कर दी। हे वीर आप्त भगवन्! आपने अपना अतिशय नहीं कहा।

Meaning :- Burning with intense agonising pride ***Goshalak***, ***Pooran maskari*** etc. people declared themselves ***Tirthankar*** altogether by exposing well their doctrines. Oh ***"Veer"*** Omniscient you did not tell your excellence/miracle.

विशेषार्थ : भगवान् महावीर को जब केवलज्ञान हुआ था, उनका समवसरण देवों ने आकर लगाया, जो स्वयं अनेकानेक अतिशयों से सुशोभित थे, फिर भी आप्त भगवान् ने अपने अतिशय का बखान नहीं किया, अपने

आपको तीर्थंकर घोषित नहीं किया। जबकि आपके समक्ष अन्य अनेक मतावलम्बी गोशालक, पूरणमस्करी आदि अपने-अपने मत का प्रचार करके अपने आपको तीर्थंकर कहकर अपने अभिमान की ज्वाला से जल रहे थे। सत्य है, जो वास्तव में महान् होता है वह अपनी महिमा का बखान अपने मुँह से नहीं करता है, इससे स्वतः सिद्ध हो जाता है कि भगवान् वर्द्धमान आप ही सच्चे तीर्थंकर आप्त हैं।

Specific Meaning :- When Omniscience manifested to Lord ***Mahavir***, celestial beings coming there organised the Assembly of Lord ***Arihant*** (the place of resonate preaching of Lord ***Mahavir***) who himself was adorned with several many excellences/miracles, nevertheless the Omniscient Lord did not expose his excellences, did not declare himself as ***Tirthankar*** whereas many of his contemporaries adherent of other doctrines ***Goshalak***, ***Pooran maskari*** etc. were dying of agonizing with pride by preaching their respective doctrine declaring themselves as ***Tirthankar***. True it is, who is in fact, great does not expose his grandeur from his own mouth. From this it is self proved that Lord ***Vardhman***! You are a true ***Tirthankar***.

सिंहासनादिविभवैः परिवेष्टितोऽपि।
दिव्यातिदिव्यरमणीकरसंस्तुतोऽपि।
रागोरगेन चलितो न यथार्थतो यन्
नेता त्वमेव भगवन्नसि नो हितैषी॥ 2॥

अन्वयार्थ : (सिंहासनादिविभवैः) सिंहासन आदि अष्ट प्रातिहार्य रूपी वैभव से **(परिवेष्टितः अपि)** घिरे रहते हुए भी **(दिव्याति - दिव्यरमणीकर-संस्तुतः अपि)** तथा अतिशय दिव्य अप्सराओं के हाथों से स्तुत होते हुए भी **(यत्)** चूंकि आप **(यथार्थतः)** वास्तव में **(रागोरगेन)** राग रूपी सर्प से **(न चलितः)** चलायमान नहीं हुए **(भगवन्)** इसलिए हे

भगवन् **(नः)** हमारे **(नेता त्वं एव)** नेता आप ही हैं **(हितैषी असि)** तथा आप ही सच्चे हितैषी हो।

अर्थ : सिंहासन आदि अष्ट प्रातिहार्य रूपी वैभव से घिरे रहते हुए भी तथा अतिशय दिव्य अप्सराओं के हाथों से स्तुत होते हुए भी चूँकि आप वास्तव में राग रूपी सर्प से चलायमान नहीं हुए इसलिए हे भगवन्! हमारे नेता आप ही हैं तथा आप ही सच्चे हितैषी हो।

Meaning : Being surrounded by throne etc. eight auspicious emblems and even being eulogised by the hands of extra-ordinary divine celestial damsels, you really did not became unstable with the serpent of attachment. Hence O Lord! You alone are our leader and alone you are our true well-wisher.

विशेषार्थ : अतिशयकारी वैभव से युक्त होते हुए भी और स्वर्ग की अनेक सुन्दर देवांगनाओं से स्तुत होते हुए भी आप रागान्वित नहीं हुए, अतः वीतरागी होने से आप ही हमारे नेता एवं हितैषी है, अन्य तो रागमूर्ति हैं, अतः वे सच्चे आप्त तथा हितैषी नहीं हो सकते हैं।

Specific Meaning : Even being endowed with miraculous grandeur and eulogised by many handsome celestial damsels of the heaven, you did not become victim of attachment. Hence, you being free from all possessions and attachments, are our leader and well-wisher/benevolent, others are, indeed, image of attachment, hence, they can never be true omniscient and well-wisher.

संस्तूयसे बुधजनैरिह संस्तवार्ह!
संस्तौम्यहं तदपि भक्तिबलातिभाग्यैः।
यन्मार्गतः सुविगतं हि गजस्य यूथं
किं तत्र यान्ति सततं करिशावका न? ॥ 3 ॥

अन्वयार्थ : (संस्तवार्ह!) हे स्तुति के योग्य भगवन् **(इह)** इस

लोक में आप **(बुधजनैः)** गणधर आद ज्ञानीजनों के द्वारा **(संस्तूयसे)** स्तुति को प्राप्त हुए हो **(तदपि)** फिर भी **(भक्तिबलातिभाग्यैः)** भक्ति के बल से और महाभागी होने से **(अहं)** मैं भी **(संस्तौमि)** स्तुति करता हूँ। **(यन्मार्गतः)** जिस मार्ग से **(गजस्य यूथं)** बड़े-बड़े हाथियों का समूह **(सुविगतं)** निकल गया हो **(किं)** क्या **(तत्र)** उस मार्ग पर **(सततं)** निरन्तर **(करिशावकाः)** उन हाथियों के बच्चे **(यान्ति न हि)** नहीं जाते हैं।

अर्थ : हे स्तुति के योग्य भगवन्! इस लोक में आप गणधर आदि ज्ञानीजनों के द्वारा स्तुति को प्राप्त हुए हो फिर भी भक्ति के बल से और महाभागी होने से मैं भी स्तुति करता हूँ। जिस मार्ग से बड़े-बड़े हाथियों का समूह निकल गया हो, क्या उस मार्ग पर निरन्तर उन हाथियों के बच्चे नहीं जाते हैं?

Meaning : O worthy to be eulogised Lord! You were eulogised by the ***Gandhara*** etc. learneds nevertheless on the strength of my devotion and having good fortune, I also eulogise you. The road on which hordes of big elephants had passed, whether young ones of elephants do not go on that very road constantly.

विशेषार्थ : देवाधिदेव तो ज्ञानादि ऋद्धियों को धारण करने वाले गणधरादि देवों से स्तुति करने के योग्य हैं, फिर भी भक्ति की अधिकता और आपकी स्तुति करने के भाग्य से आपकी स्तुति को करूँगा ही क्योंकि जिस मार्ग से बड़े-बड़े हाथियों के झुण्ड गुजरते हैं, उसी मार्ग से क्या उनके बच्चे नहीं चलते? अर्थात् अवश्य चलते हैं।

Specific Meaning : Well, God of gods is worthy to be eulogised by ***Gandhar devas*** endowed with supernatural powers of knowledge etc., nevertheless due to excess of devotion and being fortunate enough of having a chance to eulogise you, I will precisely do lavish reverential praise on you because hordes of big elephants pass on which road whether on that very road offsprings of those elephants do not walk? i.e. certainly walk.

त्वद्दर्शनेन मनसीदृश उच्चकैश्च

जातः प्रहर्षमयभूरिविभिन्नभावः।

साक्षादवाप्य निचितां चिति सौख्यभूतिं

किं वा भवेदमुकभाव उपाश्रयामि॥ 4॥

अन्वयार्थ : (**त्वद्**) आपके (**दर्शनेन**) दर्शन से (**मनसि**) मन में (**ईदृशः**) इस प्रकार का (**उच्चकैः च**) उत्कृष्ट (**प्रहर्षमयभूरिविभिन्न-भावः**) अन्तरंग में आनंदमय अत्यन्त भिन्न जाति का भाव (**जातः**) उत्पन्न होता है। (**चिति**) चैतन्य आत्मा में (**निचितां**) अत्यन्त संश्लेष भाव से खचित (**सौख्यभूतिं**) सुख की सम्पदा (**साक्षात्**) केवलज्ञान होने से प्रत्यक्ष (**अवाप्य**) प्राप्त करके (**अमुकभावः**) वह भाव (**किं वा भवेत्**) किस प्रकार का होगा, इसलिए आपके आश्रय में आता हूँ।

अर्थ : आपके दर्शन से मन में जब इस प्रकार का उत्कृष्ट आनंदमय अत्यन्त भिन्न जाति का भाव उत्पन्न होता है। चैतन्य आत्मा में अत्यन्त संश्लेष संयोग से खचित सुख की सम्पदा प्रत्यक्ष प्राप्त करके वह भाव किस प्रकार का होगा, इसीलिए आपके आश्रय में आता हूँ।

Meaning : Visiting you such kind of excellent full of bliss thought is generated which is absolutely of different quality. Acquiring omniscience the wealth of bliss inlaid with extreme synthesised conscious soul I am steeped in emotion as to what kind of that would be. Hence I take your refuge.

विशेषार्थ : भगवान् के बिम्ब के दर्शन से या उनके स्वरूप के चिन्तन से भक्त को अपूर्व आह्लाद होता है, क्योंकि आत्मा का श्रद्धान गुण उपशम या क्षयोपशम सम्यग्दर्शन के रूप में प्रकट होता है। जब साक्षात् भक्त स्वयं भगवान् बनेगा तो उसकी अपनी आत्मा से उत्पन्न होने वाला वह अनाकुल सुख किस प्रकार का होगा ऐसी कल्पना की मुझे आपके निकट ले आती है।

Specific Meaning : Visiting idol of Lord or pondering over his form or appearance the devotee gets marvelous exultation/delight because the attribute of faith of the soul is

manifested in the form of subsidential or destruction cum-subsidence right faith. When this devotee in person would become Lord Omniscient then what kind of that unperturbed delight generated from his own soul would be, such imagination brings me near you.

गर्भोत्सवे प्रतिदिनं पृथुरत्नवृष्टि-

र्जन्मोत्सवे स्नपनपात्रमभूत् सुमेरौ।

ज्ञानोत्सवेऽशुभदतीवसभा पृथिव्यां

मोक्षोत्सवे विलसते किल सिद्धभूमौ॥ 5॥

अन्वयार्थ : (**गर्भोत्सवे**) प्रभु के गर्भकल्याणक में (**प्रतिदिनं**) 15 मास तक प्रतिदिन (**पृथुरत्नवृष्टिः**) बहुत से रत्नों की वर्षा होती थी (**जन्मोत्सवे**) जन्मकल्याणक के समय (**सुमेरौ**) मेरु पर्वत पर (**स्नपनपात्रम्**) स्नान के पात्र (**अभूत**) हुए। (**ज्ञानोत्सवे**) ज्ञानकल्याणक के समय (**पृथिव्यां**) विपुलाचल पर (**सभा**) समवसरण सभा (**अतीव अशुभत्**) अत्यन्त सुशोभित हुई थी (**किल**) तथा (**मोक्षोत्सवे**) मोक्षकल्याणक होने पर (**सिद्धभूमौ**) सिद्धभूमि पर (**विलसते**) वह प्रभु सुशोभित होते हैं।

अर्थ : प्रभु के गर्भकल्याणक में 15 मास तक प्रतिदिन बहुत से रत्नों की वर्षा होती थी, जन्मकल्याणक के समय मेरुपर्वत पर स्नान के पात्र हुए ज्ञानकल्याणक के समय विपुलाचल पर समवशरण सभा अत्यन्त सुशोभित हुई थी तथा मोक्षकल्याणक होने पर सिद्ध भूमि पर वह प्रभु सुशोभित होते हैं।

Meaning : Rainfall of many jewels used to take place every day up to 15 months on the occasion of auspicious event of conception of Lord ***Jinendra***. On the occasion of auspicious event of Birth he was worthy of anointment on the ***Meru*** mountain; at the auspicious event of omniscience the assembly of his resonant preaching on the ***Vipulachal*** was extremely adorned and on happening of the auspicious event of salvation that Lord is well embellished on ***Siddha*** land.

जातद्विषोर्विनिहतो हि विरोधभावो
गोसिंहयोश्च पिबतोर्जलमेकपात्रे।
देवाधिदेवचरणातिशयेन चित्र-
मेष प्रभाति विभवस्त्वयि साम्यभावात्।। 6 ।।

अन्वयार्थ : (**जातद्विषोः**) जन्मजातवैर रखने वाले (**एकपात्रे**) एक ही पात्र में (**जलं पिबतोः**) जल पीने वाले (**गोसिंहयोः**) गाय और सिंह का (**च**) तथा अन्य प्राणियों का भी (**हि**) निश्चित ही (**विरोधभावः**) वैरभाव (**विनिहतः**) दूर हो जाता है सो (**देवाधिदेवचरणातिशयेन**) देवाधिदेव वीर प्रभु के चरणों के अतिशय से (**चित्रं**) यह वैचित्र्य होता है। (**त्वयि**) हे प्रभो। आप में (**साम्यभावात्**) समता का भाव होने से ही (**एषः**) यह (**विभवः**) वैभव (**प्रभाति**) देखा जाता है।

अर्थ : जन्मजात वैर रखने वाले एक ही पात्र में जल पीने वाले गाय और सिंह का तथा अन्य प्राणियों का भी निश्चित ही वैर भाव दूर हो जाता है सो देवाधिदेव वीर प्रभु के चरणों के अतिशय से यह होता है। हे प्रभो! आप में समता का भाव होने से ही यह वैभव देखा जाता है।

Meaning : The inborn enmity between the cow and the lion who drink water in one and the same pot and the hostility between other beings is surely removed. Hence, this oddity happens by the excellence/miracle of the feet of God of gods, Lord Veer. Oh Lord! This grandeur is precisely seen by the existence of equanimous disposition in you.

विशेषार्थ : प्रभु के अन्तरङ्ग में समता/ अहिंसक भाव प्रकट होता है, इस बात का पता बाहर जीवों के परस्पर में साम्य भाव से दिखता है। यह वैभव आप में ही देखा जाता है, अन्य में नहीं।

Specific Meaning : Disposition of equanimity/non-violent is manifested in the inner heart of Lord. It is visible by the mutual equanimous disposition of the outer world. This grandeur is seen precisely within yourself, not in others.

ज्ञानं त्वदीयममृतास्पदमाद्यमाप्यं
रूपञ्च चामरयुतं वरदामरार्च्यम्।
त्रैलोक्यसारमननं मननीयमिष्टं
विश्रम्भधाम सुखदं सदयं सदेदम्॥ 7॥

अन्वयार्थ : (**वरद**) हे उत्कृष्ट वस्तु देने वाले प्रभो! (**त्वदीयं ज्ञानं**) आपका ज्ञान (**अमृतास्पदं**) अमृत का स्थान है (**आद्यं**) प्रमुख है (**आप्यं**) प्राप्त करने योग्य है। (**च**) तथा (**रूपम्**) आपका रूप (**चामरयुतं**) चामरों से युक्त और (**अमरार्च्यम्**) देवों के द्वारा पूजनीय है। (**इदं**) यह (**विश्रम्भधाम**) विश्वास का स्थान (**त्रैलोक्यसारमननं**) त्रिलोक में सार होने से मनन योग्य है (**मननीयं**) तर्क संगत है (**सदा इष्टं**) सभी को इष्ट हैं (**सुखदं**) सुख को देने वाला है (**सदयं**) दया से सहित है।

अर्थ : हे उत्कृष्ट वस्तु देने वाले प्रभो! आपका ज्ञान अमृत का स्थान है, प्रमुख है, प्राप्त करने योग्य है। तथा आपका रूप चामरों से युक्त और देवों के द्वारा पूजनीय है। यह विश्वास का स्थान त्रिलोक में सार होने से मनन योग्य है, तर्क संगत है, सदा सभी को इष्ट है, सुख को देने वाला है और दया से सहित है।

Meaning : Oh Lord, bestower of excellent thing! Your knowledge is the place of nectar, is prominent one, is worthy to be attained, your appearance endowed with flywhisks is worshipable by the celestial beings. This place of trust, being essence in all the three worlds, is worthy of meditation, is logical, is always favourable to all, is bestower of pleasure and is compassionate.

लोके बुभूविथ यथाऽस्मि तथाऽत्रकाले
मोहाभिभूतमनसा भ्रमधीबलेन।
हे वीरदेव! कुरुतात् करुणां कृपालो!
यस्मादहं तव महात्मसमं भवामि॥ 8॥

अन्वयार्थ : (**यथा**) जिस प्रकार (**लोके**) इस त्रिभुवन में (**बुभूविथ**) अतीत में आप थे (**तथा**) उसी प्रकार (**मोहाभिभूतमनसा**) मोह से पराजित मन वाला (**भ्रमधीबलेन**) भ्रान्त बुद्धि से (**अत्र काले**) वर्तमान में (**अस्मि**) मैं हूँ। (**हे वीरदेव!**) हे वीर प्रभु (**कृपालो!**) हे कृपालु (**करुणां**) करुणा (**कुरुतात्**) करो (**यस्मात्**) जिससे (**अहं**) मैं (**तव**) आपके (**महात्मसमं**) महान् आत्मा के समान (**भवामि**) हो जाऊँ।

अर्थ : जिस प्रकार इस त्रिभुवन में अतीत में आप थे उसी प्रकार मोह से पराजित हुआ भ्रान्त बुद्धि से वर्तमान में मैं हूँ। हे वीर प्रभु! हे कृपालु! करुणा करो जिससे मैं आपके समान महान आत्मा हो जाऊँ।

Meaning : Just as you had been in this world in the past, similarly, being defeated by delusion I am at present with astrayed wisdom. Oh Lord Veer, Oh compassionate one! have pity on me so that I may also become supreme soul like you.

विशेषार्थ : प्रभु का जो अतीत था, मेरा वह वर्तमान है, अब प्रभु से विनती है कि भविष्य आप जैसा हो जावे।

Specific Meaning : What was past of the Lord, is my present. Now I pray Almighty that my future may become like you.

(द्रुतविलम्बित छन्द)

त्वयि यतौ मम रागविचेष्टनं
परमकारणमस्ति हि मुक्तये।
इति विचार्य कृता तव संस्तुति-
र्जगति को न करोति नृपे नुतिः ॥ 9 ॥

अन्वयार्थ : (**त्वयि यतौ**) आप केवलज्ञानी भगवान् में (**मम**) मेरी (**रागविचेष्टनं**) यह राग चेष्टा (**मुक्तये**) मुक्ति के लिए (**हि**)निश्चय ही (**परमकारणं**) उत्कृष्ट साधन (**अस्ति**) है (**इति**) इस प्रकार (**विचार्य**) विचार करके (**तव संस्तुतिः**) आपकी यह स्तुति (**कृता**) की है क्योंकि

(**जगति**) इस संसार में (**कः**) कौन मनुष्य (**नृपे**) राजा के लिए (**नुतिः**) नमस्कार आदि गुणगान (**न करोति**) नहीं करता है? अर्थात् सभी करते हैं।

अर्थ : आप केवलज्ञानी भगवान् में मेरी यह राग चेष्टा मुक्ति के लिए निश्चित उत्कृष्ट साधन है इस प्रकार विचार करके आपकी यह स्तुति की है क्योंकि इस संसार में कौन मनुष्य राजा के लिए नमस्कार आदि गुणगान नहीं करता है? अर्थात् सभी करते हैं।

Meaning : My this effort with auspicious attachment in you, the Omniscient Lord, is definitely an excellent means of final emanicipation, thinking so I have performed this eulogy of yours because who does not sing praise by offering salutation etc. to the king in this world ? i.e. all do.

विशेषार्थ : जिस प्रकार लोक में महान् व्यक्ति का गुणगान रूप सराग चेष्टाएँ उस व्यक्ति की उन्नति में कारण बनती है, उसी प्रकार तीनों लोक के स्वामी प्रभु में सराग भक्ति, भक्त के उत्कर्ष का कारण है, यही सोचकर मैंने यह भक्ति की है।

Specific Meaning : Just as attempts/effort with auspicious attachment in the form of singing praise of the great personage becomes the cause of progress of that person, similarly the devotion of the master of all the three world with auspicious attachment is the cause of exhaltation of the devotee. Thinking so I have done this devotion.

भरत भगवान्

भगवान् ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत हुए हैं। कर्मभूमि में युग की आदि में आप प्रथम चक्रवर्ती थे। आपके नाम से ही इस देश का नाम भारत वर्ष हुआ है। जिन लोगों ने अहिंसा रूप परम ब्रह्मा की उपासना की उन्हें आपने ब्राह्मण वर्ण की संज्ञा दी। अनेक भोग विलासताओं को पूर्व जन्म कृत पुण्य से भोगते हुए भी आप अनासक्त थे। राजपाट को त्याग कर जब आपने संन्यास धारण किया तो अन्तर्मुहूर्त मात्र में आपको केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और भव्य जीवों को सन्मार्ग का उपदेश देकर आप सिद्ध अवस्था को प्राप्त हुए। यही कारण है कि आपकी मूर्ति बाहुबली की तरह बनाकर धर्मप्रेमी आपकी आज तक उपासना करते हैं।

Lord BHARAT

Bharat was an elder son of Lord ***Rishabhdeva***. He was the first ***Chakarvarti*** (Emperor of emperors) in the beginning of the era - ***Karambhumi*** (land of action). This country has been named as ***Bharatvarsha*** after his very name. Who adored Almighty eternal spirit of non-violence, he named them as Brahmin. Even enjoying several many luxuries by virtue of virtues earned in past births, he remained unattached to them. When he adopted asceticism/renunciation, abandoning the empire and its paraphernalia, then he attained omniscience with in ***Antarmuhurta*** (48 Minutes) and instructing the worthy people regarding right path, he attained the state of liberated soul. This is the reason that religious fellows worship him still today by making his idol like ***Bahubali***.

भरताष्टकम् (उपजाति छन्द)

Bhartastakam (Upjati metre)

आकुञ्चितस्निग्धभुजङ्गकेशं, संपाटयन्नाशु निसर्गभेषम्।

संप्राप्तकाले समवाप बोधं, नाभेयजं तं भरतं यजेऽहम् ॥ 1॥

अन्वयार्थ : (आकुञ्चित-स्निग्ध-भुजङ्ग-केशं) घुंघराले, चिकने और काले बालों को **(संपाटयन्)** उखाड़ते हुए **(निसर्गभेषं)** और स्वाभाविक दिगम्बर रूप की **(संप्राप्तकाले)** प्राप्ति के समय ही **(आशु)** शीघ्र जिन्होंने **(बोधं)** केवलज्ञान **(समवाप)** को प्राप्त कर लिया था **(तं)** उन **(नाभेयजं)** नाभेय अर्थात् भगवान् आदिनाथ के पुत्र **(भरतं)** भरत महाराज की **(अहं)** मैं **(यजे)** पूजा करता हूँ।

अर्थ : नाभेय (आदिनाथ) के पुत्र भरत भगवान् की मैं पूजा करता हूँ, जिन्होंने घुंघराले, चिकने और सर्पसदृश काले-काले बालों को उखाड़ते हुए शीघ्र ही निसर्ग (यथाजात) भेष की प्राप्ति के समय केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था।

Meaning : I worship Lord ***Bharat***, the son of ***Adinath Ji*** who had instantly attained the omniscience just while plucking/uprooting his curly, oily and serpent like black hair at the time of assuming appearance like the newly born child i.e. nudity-natural form.

आद्यस्य तीर्थाधिपतेर्युगादौ, वाद्यो हि सूनुः पृथुसानुरद्रौ।

आद्यश्च चक्री खलु चक्रभृत्सु,नाभेयजं तं प्रणमामि सत्सु॥ 2॥

अन्वयार्थ : (युगादौ) युग की आदि में जो **(आद्यस्य तीर्थाधिपतेः)** आदिम तीर्थंकर के **(आद्यः सूनुः)** प्रथम पुत्र थे जो कि **(अद्रौ)** पर्वत पर **(पृथुसानुः)** विशाल चोटी **(वा)** के समान **(हि)** निश्चित

रूप से शोभित थे **(सत्सु चक्रभृत्सु)** होने वाले चक्रवर्तियों में **(खलु)** निश्चित ही जो **(आद्यः चक्री च)** प्रथम चक्रवर्ती थे **(तं)** उन **(नाभेयजं)** नाभेय से उत्पन्न भरत राज को **(प्रणमामि)** मैं नमस्कार करता हूँ।

अर्थ : युग के आदि में आदि तीर्थंकर के जो आदिपुत्र थे, जो पर्वत की विशाल चोटी के समान थे तथा होने वाले सभी चक्रवर्तियों में जो स्पष्ट ही प्रथम चक्री थे, उन नाभेय से उत्पन्न भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

Meaning :- Who was the first son of the first supreme soul (***Tirthankar***) at the advent of this era, who was like a huge peak of mountain and who was distinctly the first ***Chakarvarti*** among all hereafter ***Chakarvarties***. I pay my obeisance to that Lord born to ***Adinath***.

षट्खण्डभूमेर्विजयी किलाले, निखातनामा वृषभाख्यशैले।

यन्नामतो भारतवर्षकीर्ति-र्नाभेयजातस्य जयेत्सुकीर्तिः ॥ 3 ॥

अन्वयार्थ : (अले!) अरे! **(षट्खण्डभूमेः)** छह खण्ड की भूमि को **(किल)** वास्तव में **(विजयी)** जिन्होंने जीत लिया था **(वृषभाख्यशैले)** वृषभ नाम के पर्वत पर **(निखातनामा)** जिनका नाम खोदा गया था **(यन्नामतः)** जिनके नाम से **(भारतवर्ष कीर्तिः)** इस भारतवर्ष का नाम चल रहा है। **(नाभेयजातस्य)** ऐसे भरतराज की **(सुकीर्तिः)** श्रेष्ठ कीर्ति **(जयेत्)** जयवन्त रहे।

अर्थ : अरे! जो षट्खण्डभूमि के विजेता थे, जिनका नाम 'वृषभ' नाम के पर्वत पर उकेरा गया था और जिनके नाम से ही इस भारत वर्ष की कीर्ति है, ऐसे नाभेय के पुत्र (भरतदेव) की शुभ कीर्ति सदैव जयवन्त रहे।

Meaning : Oh ! Who was the conqueror of all the six parts of ***Bharat Ksetra***; whose name was carved on the ***Vrasabh*** mountain and by whose name exists the name and fame of ***Bharatvarsha***. Long live the auspicious glory of such son of ***Adinathji*** (i.e. ***Bharatdeva***) for ever.

संस्थापितो येन तुरीयवर्णो, वर्णेन रूढिं लभते सुवर्णम्।

अष्टापदेऽकारि च चैत्यगेहं, नाभेयजं तं भरतं यजेऽहम् ॥ 4 ॥

अन्वयार्थ : **(येन)** जिन्होंने **(तुरीय-वर्णः)** चतुर्थ वर्ण की **(संस्थापितः)** स्थापना की **(वर्णेन)** जिनके शरीर के वर्ण से ही **(सुवर्णं)** सोना **(रूढिं)** 'सुवर्ण' इस रूढ़ि को **(लभते)** प्राप्त होता है। **(च)** और जिन्होंने **(अष्टापदे)** अष्टापद पर्वत पर **(चैत्यगेहं)** चैत्यालय **(अकारि)** बनवाए **(तं)** उन **(नाभेयजं)** आदिनाथ के पुत्र **(भरतं)** भरत की **(अहं)** मैं **(यजे)** पूजा करता हूँ।

अर्थ : जिन्होंने चतुर्थवर्ण (ब्राह्मण वर्ण) की स्थापना की थी, (शेष तीन वर्णों की स्थापना आदिनाथ भगवान् ने पहले की थी)जिनके स्वर्ण समान शरीर के वर्ण से ही सुवर्ण इस रुढ़ि को प्राप्त होता है तथा जिन्होंने अष्टापद पर चैत्यगृहों का निर्माण किया था, उन नाभेय से उत्पन्न भरत भगवान् की मैं पूजा करता हूँ।

Meaning : Who had established the fourth class, (Three classes of indo-Aryan society were early divided during the regime of ***Adinathji***) the Brahman class; By whose gold like colour of the body, the tradition came in vogue of calling good colour of the body as a golden one. And who caused construction of ***Jina*** temples on the "***Astapada***" (Kailash Mountain), I pay my obeisance to that Lord born to ***Adinathji***.

चक्रच्छलेनैव जयस्य लक्ष्मीर्ययौ पुरस्तात् क्रमयोर्विधेश्च।

ललाटपट्टे तु बबन्ध पट्टं, बुद्धेः प्रवन्दे भरतक्रमे च ॥ 5 ॥

अन्वयार्थ : **(चक्रच्छलेन एव)** चक्र के छल से ही मानो **(जयस्य लक्ष्मीः)** विजय की सूचक लक्ष्मी **(पुरस्तात्)** आगे-आगे **(ययौ)** चली थी **(च)** और **(विधेः)** भाग्य की लक्ष्मी **(क्रमयोः)** मानो दोनों पैरों के **(पुरस्तात् ययौ)** आगे चली थी **(बुद्धेःच)** बुद्धि की लक्ष्मी ने **(तु)** तो मानो **(ललाट पट्टे)** ललाट पट्ट **(मस्तक)** पर **(पट्टं)** अपना पट्ट ही **(बबन्ध)** बाँध दिया

था, ऐसे (**भरतक्रमे**) भरतराज के चरण में (**प्रवन्दे**) मेरी प्रकृष्ट वन्दना है।

अर्थ : चक्र के छल से मानो विजय की लक्ष्मी ही आगे चली थी, भाग्य की लक्ष्मी चरणों के आगे-आगे चली थी और बुद्धि की लक्ष्मी ने तो ललाट-पट्ट पर पट्ट ही बाँध दिया था, ऐसे भरतदेव के चरणों में मेरी प्रकृष्ट वन्दना है।

Meaning : The Goddess of victory was marching ahead in the disguise of ***Chakra***, the goddess of fortune was marching ahead of Lord's feet and the goddess of wisdom had indeed tied the badge of victory on whose forehead, I pay my excellent obeisance on the feet of such ***Bharatdeva***.

कैलासशैलं पुरुपादपूतं, शुभ्रं विशालं वृषवद् विरूढम्।

तमारुरुक्षुर्निकटं मुमुक्षुर्नाभेयजं तं परिणौमि मंक्षु॥ 6॥

अन्वयार्थ : (**तं**) उस (**कैलासशैलं**) कैलास पर्वत पर (**निकटं मुमुक्षुः**) निकट मुमुक्षु भरतराज (**मंक्षु**) शीघ्र ही (**आरुरुक्षुः**) चढ़ने की इच्छा करते थे, जो (**पुरुपादपूतं**) भगवान् आदिनाथ के चरणों से पवित्र था (**शुभ्रं**) सफेद था (**विशालं**) विशाल था (**वृषवत्-विरूढं**) और बैल के समान ख्यात था (**तं**) उन (**नाभेयजं**) नाभेय के पुत्र भरतराज को (**परिणौमि**) मैं नमस्कार करता हूँ।

अर्थ : जो कैलाश पर्वत भगवान् आदिनाथ के चरणों से पवित्र हुआ था, जो शुभ्र था, विशाल था तथा जो उच्च बैल के समान ही ख्यात था, उस पर निकट मुमुक्षु शीघ्र ही चढ़ने की इच्छा करते थे अर्थात् वह बार-बार भगवान् के दर्शन को जाते थे, ऐसे, नाभेय पुत्र भरतदेव को मेरा नमस्कार हो।

Meaning :- That ***Kailash*** mountain which was made pious by the feet of Lord ***Adinathji***, which was crystal clear (radiant-white), huge/vast and was famous indeed like the lofty bull, on that ***Bharat*** the proximate desirous of salvation had keen wish for climbing over it soon i.e. he used to go to have a sight of the Lord again and again, my obeisance is paid to

such ***Bharatdeva***, the son of Lord ***Adinathji***.

संसारवार्धौ विनिमग्नताया, हेतुर्विदुर्वैभवलुब्धता या।

तथापि यः पङ्कजवद्व्यलिप्तस्, तं संस्तुमो वो गृहसंस्थमुक्तः॥ 7॥

अन्वयार्थ : (**या**) जो (**वैभवलुब्धता**) वैभव की लालसा है वही (**संसारवार्धौ**) संसार सागर में (**विनिमग्नतायाः**) डूबने का (**हेतुः**) कारण (**विदुः**) आचार्यों ने कहा है। (**तथापि**) फिर भी (**यः**) जो भरत चक्रवर्ती (**पङ्कजवत्**) कमल के समान (**व्यलिप्तः**) निर्लिप्त थे (**वः**) जो आप सभी के लिए (**गृहसंस्थमुक्तः**) घर में स्थित होकर भी मुक्त थे (**तं**) उन भरतराज की (**संस्तुमः**) हम सभी लोग स्तुति करते हैं।

अर्थ : जो वैभव की लुब्धता संसार सागर में डूबने का हेतु कही गई है उसके होते हुए भी जो कमल के समान निर्लिप्त थे और जो सभी के लिए गृह में रहते हुए भी मुक्त थे, उन भरतदेव की मैं स्तुति करता हूँ।

Meaning : That covetousness of grandeur which is instrumental in sinking in the mundane ocean, even after having that in possession, who remained detached/unsmeared like the lotus and who was unconstrained even after living in the house, I eulogize that ***Bharat deva***.

द्रष्टाऽऽर्कचैत्यस्य यथेष्टदाता, शारीरदण्डस्य च यो विधाता।

मेरोरिवाभाज्जिनराट्सभायां, शुद्ध्याऽर्चयेऽहं भरतं पृथिव्याम्॥ 8॥

अन्वयार्थ : (**यः**) जो (**अर्कचैत्यस्य**) सूर्य के अन्दर चैत्यबिम्ब के (**द्रष्टा**) द्रष्टा थे (**च**) और (**शारीरदण्डस्य**) शारीरिक दण्ड का (**विधाता**) सर्वप्रथम नियम बनाने वाले थे (**जिनसभायां**) जो जिनेन्द्र भगवान् के समवशरण में (**मेरोः इव**) मेरु के समान (**अभात्**) सुशोभित हुए थे (**भरतं**) उन भरतराज की (**शुद्ध्या**) शुद्धिपूर्वक (**अहं**) मैं (**अर्चये**) पूजा करता हूँ।

अर्थ : जिन्होंने अपने महल से सूर्य में स्थित चैत्य के दर्शन किए, जो हा, मा धिक् के बाद कर्मभूमि में प्रचलित शारीरिक दण्ड के विधाता थे, जो

जिनेन्द्रदेव की सभा में पृथ्वी पर मेरु के समान शोभित हुए थे, उन भरतदेव की मैं शुद्धि पूर्वक अर्चना करता हूँ।

Meaning : Who had a sight of ***Jina*** temple situated in the Sun from his place, who was the ordainer of the bodily punishment after ***'Ha' 'Ma' 'Dhik'*** which was in vogue in ***Karambhumi*** (land of action), who was adorned like ***Meru*** on the land in the Assembly of Lord ***Jinendra***, I adore that ***Bharatdeva*** with purity.

मालिनी (छन्द)

इति सुखयति कामं भुक्तिमुक्तिप्रदानं
तव गुणगणगानं भव्यजीवैकयानम्।
सततनवसुभावैर्नन्नमीमीष्टदं वै
विधिहतवरमल्लं भारतेशं प्रणम्यम्॥ 9॥

अन्वयार्थ : (इति) इस प्रकार **(तव)** आपके **(गुणगणगानं)** गुण समूह का गान करना **(भव्यजीवैकयानं)** भव्य जीवों के लिए एक यान के समान है **(भुक्ति-मुक्ति प्रदानं)** तथा स्वर्ग सुख और मोक्ष को देने वाला है। यह गुणगान **(कामं)** खूब **(सुखयति)** सुख देता है। **(इष्टदं)** इच्छित फल देने वाले **(विधिहतवरमल्लं)** कर्मों का नाश करने के लिए श्रेष्ठ योद्धा **(प्रणम्यं)** प्रणाम के योग्य **(भारतेशं)** इस भारत के ईश भरतेश को मैं **(सततनवसुभावैः)** निरन्तर नवीन श्रेष्ठ भावों से **(वै)** निश्चय से **(नन्नमीमि)** बार-बार नमस्कार करता हूँ।

अर्थ : इस प्रकार आपके गुण-समूह का गान अत्यधिक सुख देने वाला है, अभ्युदय सुख और मुक्ति को देने वाला है तथा भव्य जीवों के लिए संसार से पार जाने के लिए यान के समान है। इष्ट वस्तु को देने वाले, कर्म को नाश करने में श्रेष्ठ मल्ल तथा प्रणाम के योग्य भरतदेव को मैं नित नवीन उत्कृष्ट भावों के साथ निश्चय से बार-बार नमस्कार करता हूँ।

Meaning : Thus the eulogy of the multitude of your

attributes is bestower of extreme joy, is bestower of extreme pleasure increasing day by day and of final liberation and is like a ship for the persons worthy of liberation for crossing the mundane ocean. The bestower of desired thing, is an excellent wrestler for destroying the sinful karmas and worth to be paid obeisance, I pay my homage to that ***Bharatdeva*** again and again with always new excellent thoughts/feelings.

अनन्त मिथ्यात्व, अनन्त कषाय, तृष्णा, वासना, से संतप्त दुःखी जनों को जिनेन्द्र भगवान की अमृत-शीतल-वाणी के पान से स्थायी शाश्वत सुख प्राप्त होता है। संसार, शरीर और भोगों से सुख की कामना में भ्रमित व्यक्ति को आत्मिक ज्ञान की सच्ची राह से सच्चा सुख श्रुतज्ञान से मिलता है। ब्रह्माण्ड में भरे अदृश्य द्रव्यों और सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान, दर्पण की तरह जिनवाणी में दिखता है। कर्म सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन जिनेन्द्र प्रभु की वाणी से ही उद्भूत हुआ है। समूचे विश्व में कर्म सिद्धान्त, जिनदर्शन के सिवाय किसी भी दर्शन में नहीं है। पाश्चात्य विद्वानों की भी यह उद्घोषणा है।

Grief-sticken people with infinite wrong faith, infinite passions, longing/lust get stable, eternal pleasure by savouring nectarous cold voice/speech of Lord ***Jinendra***. The person deluded/confused in his wish to get pleasure from the world, body and enjoyments, gets true pleasure by scriptural knowledge of the true path of the knowledge of the self. The knowledge of invisible substances and subtle elements filled in the universe is manifested in the ***Jinvani*** i.e. resonant preaching of Lord ***Jinendra*** like mirror. Detailed description of the doctrine of ***Karmas*** has, precisely arisen from the resonant preaching of Lord ***Jinendra***. There is no mention of the doctrine of ***Karmas*** in any philosophy of the whole world except in the Jain philosophy. Western learned also declare it.

शारदाष्टकम् (श्री छन्द)

Shardastakam (Shri metre)

भाषितमर्हज्जिनवरदेवैर्गुम्फितमेतद् गणधरदेवैः।
भक्तिवशोऽहं श्रुतयुतवाणीं नौमि सदा भारति पथि गन्तुम्॥ 1॥

अन्वयार्थ : **(अर्हज्जिनवरदेवैः)** अरिहन्त जिनेन्द्रदेव के द्वारा **(भाषितं)** कहा हुआ श्रुत ही **(गणधर देवैः)** गणधरदेव ने **(एतत् गुम्फितं)** यह गूंथा है। **(भारति)** हे जिनभारती देवी! **(पथि गन्तुं)** मोक्षमार्ग पर चलने के लिए **(श्रुतयुतवाणीं)** श्रुत से सहित वाणी को **(अहं)** मैं **(भक्तिवशः)** भक्ति के वशीभूत हुआ **(सदा)** सदा **(नौमि)** नमस्कार करता हूँ।

अर्थ : अरिहन्त जिनेन्द्रदेव के द्वारा कहा हुआ जो अर्थ समय गणधरदेव ने इस द्वादशाङ्गवाणी के रूप में गुम्फित किया, हे भारति देवि! मोक्षमार्ग पर चलने के लिए उस श्रुत जिनवाणी को भक्तिवश मैं हमेशा नमस्कार करता हूँ।

Meaning : The canonical knowledge which has been twined by ***Gandhar Deva*** (chief disciple of ***Tirthankara***) as told by Lord ***Arihant Jinendra Deva*** in the form of twelve parts of scriptural knowledge, Oh goddess of ***Bharti*** (goddess of knowledge)! I always pay my obeisance to that scriptural ***Jinvani*** out of devotion for marching ahead on the path to salvation.

वीरगिरीशोर्जितमुखपद्माद्, गौतमकुण्डेऽपतदथ पूते।
मोहमहीभृच्चलनसमर्थात्, स्तौमि मुदाऽहं श्रुतपदगङ्गाम्॥ 2॥

अन्वयार्थ : **(अथ)** तथा **(वीर-गिरीशोर्जित-मुख-पद्मात्)** महावीर भगवान् के पर्वत रूपी श्रेष्ठ मुख कमल से **(पूते)** पवित्र **(गौतमकुण्डे)** गौतम गणधर रूपी कुण्ड में **(अपतत्)** जो गिरी। **(मोह-महीभृत्-चलन-समर्थात्)** मोह रूपी पर्वत को हटाने में समर्थ होने से **(श्रुत-पद-गङ्गां)**

श्रुतपद रूपी गंगा की **(अहं)** मैं **(मुदा)** प्रसन्नता से **(स्तौमि)** स्तुति करता हूँ।

अर्थ : श्री महावीर रूप महापर्वत के श्रेष्ठ मुख कमल से जो गणधर रूपी पवित्र कुण्ड में आ गिरी तथा जो मोहरूपी पर्वत गिराने में समर्थ है, ऐसी श्रुतपद रूपी गङ्गा की हर्ष से मैं स्तुति करता हूँ।

Meaning : That which had fallen from excellent lotus - mouth of great mountain, shri ***Mahaveer*** on the deep pious basin of ***Gandhara*** and which is capable of causing fall of the mountain of delusion, such ***Ganges*** of scriptural words, I eulogize with joy.

शोभितवृत्तं नययुतकूलं, हंसयतीनां मधुरसुघोषम्।
चेतनभङ्गोच्छलनसुपूरं, श्रीजिनवाक्यनदं विनमामि॥ 3॥

अन्वयार्थ : (श्रीजिनवाक्यनदं) श्री जिनेन्द्र भगवान् के वचनों की नदी को **(विनमामि)** मैं नमस्कार करता हूँ **(शोभितवृत्तं)** जिस नदी का घेराव शोभित है **(नय-युत-कूलं)** जिसके दो किनारे दो नय से सहित हैं। **(हंसयतीनां)** हंस रूपी यतियों का जहाँ **(मधुरसुघोषम्)** मधुर शब्द होता है और **(चेतन-भङ्गोच्छलन-सुपूरं)** चेतन की तरंगों के उछाल से जिस नदी का पूर बना रहता है।

अर्थ : श्री जिनेन्द्र भगवान् की दिव्यध्वनि नदी के समान है जो गोल घेरे से सुशोभित है अथवा उत्तम चरित्र वाले मुनियों से शोभित है, दो नयों के समान जिसके दो तीर हैं। जहाँ हंस रूप यतियों का मधुर सुघोष होता रहता है और जिसमें चेतना रूप तरङ्गों की उछाल से पूर आता रहता है उस जिनवाणी रूपी नदी को मैं नमन करता हूँ।

Meaning : The Omniscient revelation in the form of ***Omkar*** sound is like a river which is adorned with a round circumference or is adorned with the ascetics of excellent conduct, which possesses two banks like two stand points; where sweet voice of swans of saints of higher austerity goes on sounding and in which leap of the waves of consciousness

goes on coming, I bow down my head before that river of ***Jinvani***.

यत्र निमग्ना विबुधमनुष्याः, स्नापितवन्तो दुरितमनश्यन्।
तत्र गभीरे शुचिनि सुतीर्थे, स्नातुमतोऽहं सपदि यतोऽस्मि॥ 4॥

अन्वयार्थ : **(यत्र)** जिस श्रुत नदी में **(निमग्नाः)** डूबे हुए **(बिबुधमनुष्याः)** विशिष्ट बुद्धिमान मनुष्यों को **(स्नापितवन्तः)** श्रुत जल ने नहलाया है **(दुरितं अनश्यन्)** और उन्होंने अपने पाप का नाश किया है **(अतः)** इसलिए **(तत्र)** उस **(गभीरे)** गम्भीर **(शुचिनि)** पवित्र **(सुतीर्थे)** श्रेष्ठ तीर्थ में **(स्नातुं)** स्नान करने के लिए **(अहं)** मैं **(सपदि)** शीघ्र ही **(यतोऽस्मि)** यत्न करता हूँ।

अर्थ : जिसमें गणधर आदि बुद्धिमान मनुष्य निमग्न हो (जल के द्वारा स्नान कराए गए है) स्नान किए हैं और पापों का प्रक्षालन किए हैं उस पवित्र गम्भीर श्रेष्ठ तीर्थ में स्नान करने के लिए शीघ्र ही मैं भी उद्यमशील हुआ हूँ।

Meaning : In which ***Gandhara*** etc. learned persons have taken bath being immersed in it and washed off their sins, to take bath in that sacred, profound, excellent '***Tirtha***' i.e. ford precisely soon I take strenuous effort.

शीतलनीरं हिमगिरिखण्डं, चन्द्रसिता वा सुखयति नो मे।
श्री जिनवाणी जगति हि यादृग्,जातिजरावासितहृदयं यत्॥ 5॥

अन्वयार्थ : **(हि)** निश्चित ही **(जगति)** इस संसार में **(शीतलनीरं)** शीतल जल **(हिमगिरिखण्डं)** हिमालय पर्वत की बर्फ **(वा)** अथवा **(चन्द्रसिता)** चन्द्रमा की चाँदनी **(मे)** मुझे **(सुखयति नो)** सुखी नहीं करती है **(यादृग्)** जैसा कि **(श्री जिनवाणी)** श्री जिनवाणी करती है **(यत्)** क्योंकि **(जातिजरा-वासित-हृदयं)** मेरा हृदय जन्म जरा के दुःख से युक्त है।

अर्थ : निश्चित ही इस संसार में शीतल जल, हिमालय की बर्फ

अथवा चन्द्रमा की चाँदनी भी मेरे जन्म, बुढ़ापे से दुःखी हृदय को सुख नहीं देते हैं जैसा सुख श्री जिनेन्द्र भगवान् की वाणी से मिलता है।

Meaning : Surely/certainly in this world the cold water, ice of the ***Himalaya*** or moon-light do not give that joy to my grief-sticken heart caused due to birth, old age which is obtained by the voice of the Lord ***Jinendra***.

चेतनचण्डद्युतिमुकुरान्ते, पातितवैश्वं सहजविलासम्।
केवलबोधाधिकगुणमूर्ते!,देहि विशुद्धिं नवगुणलब्धिम्॥ 6॥

अन्वयार्थ : **(चेतन-चण्ड-द्युति-मुकुरान्ते)** जिस चेतना रूपी प्रचण्ड प्रकाश वाले दर्पण के मध्य में **(सहजविलासं)** अपने सहज विलास को लिए हुए **(पातितवैश्यं)** यह विश्व गिराया गया है। **(केवलबोधाधिक गुणमूर्ते!)** ऐसी केवलज्ञानमय गुणों की मूर्ति! **(नवगुणलब्धिम्)** नौ गुणों को प्राप्त कराने वाली अथवा नौ लब्धि वाली **(विशुद्धिं)** विशुद्धि को **(देहि)** मुझे देवे।

अर्थ : जिसकी चेतना की प्रचण्ड कांति रूपी दर्पण के भीतर सम्पूर्ण विश्व आकर गिर पड़ा हो, जिसका वैभव सहज है, ऐसी हे केवलज्ञान से युक्त अनेक गुणों की मूर्ति सरस्वती देवी! मुझे अनन्तज्ञान आदि नवगुणों की लब्धि वाली विशुद्ध देवें।

Meaning : Within whose drastic radiance of mirror the whole world has fallen, whose grandeur is natural, such, O image of several attributes goddess ***Saraswati*** endowed with omniscience! may give me depurity of attainment of infinite knowledge etc. nine attributes.

भानुरुचिः क्वोडुकिरणदीप्तिः, कोकिलवाणी बकवचनं क्व।
वीरमतं क्वेतरमततीर्थं, भव्य! परीक्ष्योचितमवसेयम्॥ 7॥

अन्वयार्थ : **(क्व)** कहाँ तो **(भानुरुचिः)** सूर्य का प्रकाश और कहाँ **(उडुकिरणदीप्तिः)** नक्षत्रों की किरणों का प्रकाश **(क्व)** कहाँ **(कोकिलवाणी)** कोयल की वाणी और कहाँ **(बकवचनं)** बगुला के

बोल **(क्व)** कहाँ **(वीरमतं)** वीर भगवान् का मत और कहाँ **(इतरमततीर्थं)** अन्य मतों का तीर्थ **(भव्य!)** हे भव्य! **(उचितं)** उचित की **(परीक्ष्य)** परीक्षा करके **(अवसेयं)** सत्य मत जान लेना चाहिए।

अर्थ : कहाँ सूर्य की कान्ति, कहाँ नक्षत्रों की किरणों का प्रकाश, कहाँ कोयल की वाणी और कहाँ बगुला के बोल, कहाँ श्रीवीर भगवान् का मत और कहाँ अन्य मतों के तीर्थ। इस सबमें हे भव्यजीव! उचित की परीक्षा करके सत्यमत को जान लेना चाहिए।

Meaning : What a difference between luster of the Sun and light of the rays of planets; on the one hand there is voice of the cuckoo and on the other hand the voice of the heron; on the one hand there is doctrine of Lord ***Veer***, on the other hand there are fords of other doctrines. Oh worthy being! among all of them you should know the true doctrine examining their propriety.

हस्तचतुः-सन्निभमनुयोगं, स्यात्पदमेकासनमनुभावम्।
सर्वविभाषामयतनुसारं, ध्यायतु चित्ते निशदिनमत्र॥ 8॥

अन्वयार्थ : **(अत्र)** यहाँ **(निशदिनं)** प्रतिदिन **(चित्ते)** चित्त में **(ध्यायतु)** उस जिनवाणी का ध्यान करो जिसके **(अनुयोगं)** चार अनुयोग **(हस्तचतुःसन्निभं)** चार हाथ के समान हैं **(एकासनं)** जिसका प्रमुख आसन **(स्यात्पदं)** स्यात् पद वाला है **(अनुभावं)** और यही इसका बल है, वैभव **(सर्वविभाषामयतनुसारं)** जिसका सारभूत शरीर सर्व विभाषामय है।

अर्थ : जिनके चार हाथ के सदृश चार अनुयोग हैं, स्यात् पद ही जिनका एक श्रेष्ठ आसन है और वही श्रेष्ठ वैभव है। ऐसी सरस्वती के समस्त विशिष्ट भाषाओं से युक्त शरीर के सार को यहाँ हमेशा मन में ध्यान करो।

Meaning : Who possess four ***Anuyogas*** (division/ exposition of Jain scripture) like four hands; whose sole excellent posture is the phrase - 'possibly-perhaps' (***Syat pada***) and that very is its excellent grandeur. Always meditate here the essence of the body of such ***Saraswati*** endowed with all distinctive languages.

आचार्य कुन्दकुन्द

आचार्य कुन्दकुन्द ईसा पूर्व प्रथम शती के उत्तरार्द्ध में एक आध्यात्मिक सशक्त आचार्य हुए हैं। दिगम्बर, श्वेताम्बर दो समुदाय में विभक्त हो जाने पर आचार-विचार सम्बन्धी शिथिलता जब काफी विकृत रूप ले चुकी थी तब शिथिलाचार के विरुद्ध सशक्त कदम उठाकर अध्यात्म शास्त्र को लिखने का उपक्रम आपने किया। कठोर अनुशासन के रूप में अष्टपाहुड ग्रन्थ में आपका मानस स्पष्ट दिखता है। गिरनार पर्वत पर श्वेताम्बराचार्य के साथ विवाद में पाषाण मूर्ति को आपने वाचाल कर दिया और 'आद्य दिगम्बराः' का उद्घोष हुआ। इन्हीं कारणों से 'कुन्दकुन्दान्वय' एक गौरवशाली परम्परा बन गयी और गणधर के बाद 'मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो' सर्वमान्य रूप से ग्रहण किया गया।

Kund-Kund Acharya

Acharya ***Kund-Kund*** had been a powerful spiritual saint in the later half of first century before Christ when the laxity of conduct and thought had taken enough perverse shape on partition of the community in two parts - ***Digamber*** and ***Swetamber***, then taking strong step against laxity in observing proper conduct, he initiated writing of spiritual scripture. His mind is clearly manifested in the ***Astapahuda*** treatise as an arduous disciplinarian. At the time of argument with ***Swetambaracharya*** on ***Girnar*** mountain he caused the idol of stone garrulous and the primeval of ***Digambara*** was proclaimed. Due to these reasons ***Kund-Kundanvaya*** (logical connection with ancestry) has become a graceful tradition and after ***Gautam Gandhar***, '***Mangalam Kund-Kundadyo***' has been universally accepted.

कुन्दकुन्दाष्टकम् (स्रग्विणी छन्द)

Kund-Kundastakam (Sragvini metre)

सत्यपन्थाश्च येन प्रतिष्ठापितः,
सत्यवादेन देवी गिरौ निर्जिता।
सत्यसन्देशको यो विनापेक्षया,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 1॥

अन्वयार्थ : **(येन)** जिन्होंने **(सत्यपन्थाः)** सत्यपन्थ को **(प्रतिष्ठापितः)** स्थापित किया है **(च)** और **(सत्यवादेन)** सत्यवाद से **(गिरौ)** ऊर्जयन्त पर्वत पर **(देवी)** देवी को **(निर्जिता)** जीता था **(यः)** जो **(अपेक्षया विना)** अपेक्षा के बिना ही **(सत्यसन्देशकः)** सत्य का उपदेश देने वाले थे **(तं कुन्दकुन्दं)** उन कुन्दकुन्द **(मुनीशं)** आचार्य की **(मुदा)** हर्ष पूर्वक **(स्तुवे)** स्तुति करता हूँ।

अर्थ : ऊर्जयन्त पर्वत पर श्वेताम्बरों से हुए विवाद में जिन्होंने देवी को जीता और सत्य पन्थ अर्थात् दिगम्बर मत को प्रतिष्ठापित किया। जो बिना किसी की अपेक्षा के सत्य के समीचीन उपदेशक थे। उन श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who conquered the goddess on the ***Urjayant*** mountain in the argument with ***Swetambaras*** and established true sect i.e. ***Digamber*** sect; who was a right concordant preacher of truth/reality without any expectation. I joyfully eulogize that ***Kund-Kund*** ascetic.

प्राभृतं भूरिशो येन निर्मापितं,
सत्यदैगम्बरं वर्त्म यत्राधृतम्।
यद्वचोभिर्मता यस्य सत्यात्मता,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 2॥

अन्वयार्थ : (**येन**) जिन्होंने (**भूरिशः**) अनेक प्रकार के (**प्राभृतं**) पाहुडों की (**निर्मापितं**) रचना की (**यत्र**) उन पाहुडों में (**सत्यदैगम्बरं वर्त्म**) सत्य दिगम्बर मार्ग (**आधृतम्**) उन्होंने रखा है। (**यद्वचोभिः**) जिनके वचनों के द्वारा ही (**यस्य**) जिन आचार्य की (**सत्यात्मता**) प्रामाणिकता (**मता**) जानी जाती है (**तं कुन्दकुन्दं**) उन कुन्दकुन्द (**मुनीशं**) मुनीश्वर की (**मुदा**) प्रसन्नता से (**स्तुवे**) मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जिन्होंने अनेक प्रकार के पाहुडों की रचना की जिसमें उन्होंने सत्य दैगम्बर मार्ग को रखा है। जिनके वचनों से ही जिनकी सत्यनिष्ठा का परिचय होता है ऐसे श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who had composed many '***Pahudas***' in which he depicted the true ***Digamber***-path; whose words are self-introduction of his loyalty toward reality. I eulogize such ***Kund-Kund Munishwara*** with joy.

सर्वभव्यार्थिनां मुक्तिमार्गैषिणा
मात्मदृग्बोधसौख्याधिकाकांक्षिणाम्।
येन वृत्तं प्रदत्तं हि निःश्रेयसं,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 3॥

अन्वयार्थ : (**मुक्ति-मार्गैषिणां**) मुक्ति मार्ग के इच्छुक (**सर्वभव्यार्थिनां**) सभी भव्यजीव (**आत्म-दृग्-बोध-सौख्याधिका-कांक्षिणाम्**) जो कि आत्मा के दर्शन-ज्ञान सौख्य गुणों के आकांक्षी हैं उनको (**येन**) जिन्होंने (**हि**) निश्चित ही (**निःश्रेयसं**) कल्याणप्रद (**वृत्तं**) चारित्र (**प्रदत्तं**) प्रदान किया है (**तं कुन्दकुन्दं**) उन कुन्दकुन्द (**मुनीशं**) आचार्य की (**मुदा**) प्रसन्नता से (**स्तुवे**) मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : मुक्तिमार्ग की इच्छा करने वाले, आत्मा के दर्शन, ज्ञान और सुख की पूर्णता के आकांक्षी सभी भव्य जीवों को जिन्होंने मुक्ति देने वाला चारित्र प्रदान किया है उन कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who has given conduct capable of placing persons in salvation to all the worthy people desirous of the path to salvation, aspiring soul's perception, knowledge and complete happiness. I eulogize that ***Kund-Kund Munishwara***, the great ascetic.

योऽत्र देवेन्द्रभूपेन्द्रदुर्वादिभिः,
पूर्वसूरीश्वरैर्मुक्तिकामार्थिभिः।
भूरि संस्तूयते स्मर्यते वन्द्यते,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 4॥

अन्वयार्थ : (**यः**) जो (**अत्र**) यहाँ (**देवेन्द्र-भूपेन्द्र-दुर्वादिभिः**) देवेन्द्र, राजा और दुर्वाद करने वालों के द्वारा तथा (**मुक्ति-कामार्थिभिः**) मुक्ति की इच्छा करने वाले (**पूर्वसूरीश्वरैः**) पूर्व आचार्यों के द्वारा (**भूरि**) खूब (**संस्तूयते**) स्तुत हुए हैं (**स्मर्यते**) स्मरण किए गए हैं (**वन्द्यते**) और वन्दित हैं (**तं कुन्दकुन्दं**) उन कुन्दकुन्द (**मुनीशं**) आचार्य की (**मुदा**) प्रसन्नता के साथ (**स्तुवे**) मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जो इस लोक में देवेन्द्र, राजा और दुष्ट वाद करने वालों से तथा मुक्ति की इच्छा करने वाले पूर्वाचार्यों के द्वारा खूब स्तुति को प्राप्त हुए, याद किए गए और वन्दित हैं उन श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who was amply eulogized, remembered and adored in this world by ***Devendra,*** king and by those who indulged in doctrinal controversy/argument with him as well as by earlier ***Acharyas*** desirous of salvation, I eulogize that ***Kund-Kund Munishwara,*** with great joy.

भव्यजीवाब्जिनीनाञ्च यो भास्करो,
यस्य कुन्दावदाता सुदन्तावली।
नासिका तु प्रमाणं द्विनेत्रं नयौ,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 5॥

अन्वयार्थ : (यः) जो **(भव्य-जीवाब्जिनीनां)** भव्य जीव रूप कमलों के लिए **(भास्करः)** सूर्य है **(च यस्य)** और जिनकी **(सुदन्तावली)** श्रेष्ठ दन्त पंक्ति **(कुन्दावदाता)** कुन्द पुष्प के समान है **(नासिका)** जिनकी नासिका **(तु)** तो **(प्रमाणं)** प्रमाण है **(द्विनेत्रं)** और दोनों नेत्र **(नयौ)** दो नय हैं। **(तं कुन्दकुन्दं)** उन कुन्दकुन्द **(मुनीशं)** आचार्य की **(मुदा)** प्रसन्नता के साथ **(स्तुवे)** मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : भव्य जीव रूपी कमलों के विकास के लिए जो सूर्य के समान हैं, जिनकी श्रेष्ठ दन्त पंक्ति कुन्दपुष्प के समान धवल है, जिनकी नासिका प्रमाण है और दोनों नेत्र दो नयों की तरह हैं, ऐसे श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who is like a Sun for blossoming the lotuses of worthy beings capable of attaining salvation, whose excellent row of teeth is white/clean like the jasmine flowers, whose nose is like ***Praman*** (testimony) and both the eyes are like two stand-points (i.e. ***Naya***), I eulogize that ***Kund-Kund Munishwara*** with joy.

यस्य शास्त्रे पदार्थाश्च तत्त्वानि वा,
द्रव्यपर्यायभावस्वभावा गुणाः।
स्पष्टमाभान्ति वै दर्पणे बिम्बवत्,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 6॥

अन्वयार्थ : (यस्य) जिनके **(शास्त्रे)** शास्त्र में **(पदार्थाः)** पदार्थ **(तत्त्वानि च)** तत्त्व **(वा)** अथवा **(द्रव्य-पर्याय-भाव-स्वभावाः)** द्रव्य, पर्याय, भाव, स्वभाव **(गुणाः)** और गुण **(दर्पणे)** दर्पण में **(बिम्बवत्)** प्रतिबिम्ब की तरह **(स्पष्टं)** स्पष्ट रूप से **(आभान्ति)** प्रकाशित होते हैं **(तं कुन्दकुन्दं)** उन कुन्दकुन्द **(मुनीशं)** आचार्य की **(मुदा)** प्रसन्नता के साथ **(स्तुवे)** मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जिनके शास्त्र में सभी पदार्थ, तत्त्व, द्रव्य और पर्यायों के भाव, स्वभाव तथा गुण दर्पण में बिम्ब के समान निश्चित ही स्पष्ट झलकते हैं, उन श्री

कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning :- In whose scriptures the natural state, the nature and attributes of all matters, elements, substances and modes are certainly and clearly reflected like an image in the mirror, I eulogize that ***Kund-Kund Munishwara*** with joy.

यस्य सारत्रयं शोभते भूतले,
यस्य वाणी प्रमाणात्मिका मन्यते।
शेमुषी यस्य मोहादिभिः शून्यका,
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 7॥

अन्वयार्थ : (यस्य) जिनके **(सारत्रयं)** तीनों सार **(भूतले)** इस पृथ्वी पर **(शोभते)** शोभित है **(यस्य)** जिनकी **(वाणी)** वाणी **(प्रमाणात्मिका)** प्रामाणिक **(मन्यते)** मानी जाती है **(यस्य)** जिनकी **(शेमुषी)** बुद्धि **(मोहादिभिः)** मोह आदि से **(शून्य का)** शून्य है **(तं कुन्दकुन्दं)** उन कुन्दकुन्द **(मुनीशं)** आचार्य की **(मुदा)** प्रसन्नता के साथ **(स्तुवे)** मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जिनके समयसार, प्रवचनसार और पञ्चास्तिकाय ये तीनों सार इस भूतल पर शोभित हैं, जिनकी वाणी प्रमाणात्मक मानी जाती है, जिनकी बुद्धि मोह आदि विकारों से रहित है, उन श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Whose ***Samaysar***, ***Pravachansar*** and ***Panchastikaya*** all these three are embellished on the surface of this earth; whose voice/speech is regarded authentic; whose wisdom is free from perversions of delusion etc. I eulogize that ***Kund-Kund Munishwara*** with joy.

शुद्धयोगार्पणाय प्रयत्नः सदा
शुद्धजीवास्तिकायाय धीसम्पदा।
शुद्धतत्त्वार्थतायी च यः सर्वदा
कुन्दकुन्दं मुनीशं स्तुवे तं मुदा॥ 8॥

अन्वयार्थ : **(शुद्धयोगार्पणाय)** शुद्ध योग की मुख्यता के लिए **(सदा प्रयत्नः)** जिनका सदा प्रयास रहता है **(शुद्ध-जीवास्तिकायाय)** शुद्ध जीवास्तिकाय के लिए **(धीसम्पदा)** जिनकी बुद्धि का वैभव है **(च)** और **(यः)** जो **(सर्वदा)** हमेशा **(शुद्धतत्त्वार्थतायी)** शुद्ध तत्त्वार्थ का विस्तार करते हैं **(तं कुन्दकुन्दं)** उन कुन्दकुन्द **(मुनीशं)** आचार्य की **(मुदा)** प्रसन्नता के साथ **(स्तुवे)** मैं स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जिनका प्रयास सदा शुद्धोपयोग की मुख्यता के लिए है, जिनकी बुद्धि रूपी सम्पदा शुद्ध जीवास्तिकाय के लिए है और जो शुद्ध तत्त्वार्थ का ही विस्तार करते हैं, उन श्री कुन्दकुन्द मुनीश्वर की हमेशा मैं प्रसन्नता के साथ स्तुति करता हूँ।

Meaning : Whose attempt is for the dominance of possessionless right conductful inclination (i.e. pure conscious activity); whose wealth of wisdom exists for pure '***Jivastikaya***' (i.e. ***Jiva*** having a body of magnitude i.e. pure soul) and who only expands elements ascertained as they are, I always eulogize that ***Kund-Kund Munishwara*** with joy.

आचार्य समन्तभद्र

ईसा की द्वितीय शताब्दी में आप एक तार्किक दार्शनिक आचार्य हुए हैं। अनेक जनपदों में अनेक दर्शनों से वाद-विवाद करके जिनदर्शन की विजय पताका आपने फहराई। आपने चन्द्रप्रभ भगवान् की प्रतिमा प्रकट करके अपने हृदय की निश्छल भक्ति को दिखाया। आज भी 'फटे महादेव' के नाम से वाराणसी में वह स्थान प्रसिद्ध है। आप संस्कृत भाषा के प्रथम दार्शनिक स्तुतिकार हैं। आप ही प्रथम सारस्वताचार्य के रूप में ख्यात हैं। न्याय ग्रन्थों की संस्थापना आपसे हुई। अतः परवर्ती समस्त आचार्यों से आप सदा स्तुत्य हैं।

Samantbhadracharya

He had been a logician philosopher in the second century after Christ. Holding discussion/debate with several many philosophies in several ***Janpada***, he hoisted the victory-flag of ***Jina*** philosophy. He showed non-deceitful delusion of his heart by causing manifestation of the idol of Lord ***Chandraprabhu***. That place is still famous by the name of ***Fate Mahadeva*** in Varansi. He is the first philosopher composer of eulogy in ***Sanskrit***. He verily is famous as a ***Saraswatacharya*** i.e. preceptor of ***Jinvani***. The creation of treatises on justice was started from him, hence, all ***Acharyas*** of later period eulogize him.

समन्तभद्राष्टकम् (आर्याच्छन्दः)

Samantbhadrastakam (Arya metre)

सन्तः समन्तभद्रास्तर्काऽऽगमनयेभ्यः कुमुच्चन्द्राः।

जिनमतसम्मुखचन्द्राः पथदर्शी मे भवेद् भुवि भद्राः॥ 1॥

अन्वयार्थ : (**सन्तः**) सत् पुरुष (**समन्तभद्राः**) समन्तभद्र आचार्य (**तर्कागमनयेभ्यः**) तर्क, आगम और नयों के लिए (**कुमुच्चन्द्राः**) पृथ्वी पर प्रसन्न चन्द्रमा हैं (**जिनमतसम्मुखचन्द्राः**) जो जिनेन्द्र मत को दिखलाने के लिए चन्द्रमा है (**भद्राः**) ऐसे पुण्य पुरुष (**भुवि**) इस पृथ्वी पर (**मे**) मेरे (**पथदर्शी**) पथ प्रदर्शक (**भवेत्**) हों।

अर्थ : श्रेष्ठ समन्तभद्र आचार्य जो कि तर्क, आगम और नय की छटा बिखराने के लिए पृथ्वी पर प्रसन्न /पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं, जो जिनेन्द्र भगवान् के मत रूपी चन्द्रमा के सम्मुख रहते हैं, ऐसे वे कल्याणकारक आचार्य देव इस पृथ्वी पर मेरे पथदर्शक हों।

Meaning : The excellent **Acharya Samantbhadra** who is like a full moon for spreading the lustre of logic, canon and standpoints on the earth; who remains infront of the moon of doctrine of Lord **Jinendra**, that such benevolent **Acharya Deva** may be my guide/leader on this earth.

प्राणातिपातकृपणाः परमतेभगण्डखण्डैकप्रणाः।

भव्याब्जकाय चण्डा ईडेऽहं तकं मार्तण्डाः॥ 2॥

अन्वयार्थ : (**प्राणातिपात-कृपणाः**) जो प्राणों का घात करने में कृपण हैं (**पर-मतेभ-गण्ड-खण्डैक-प्रणाः**) जो परमत रूपी हाथियों के गण्ड स्थल को खण्डित करने का एक मात्र प्रण लिए थे (**भव्याब्जकाय**) भव्य कमलों के लिए (**चण्डाः मार्तण्डाः**) जो प्रचण्ड सूर्य हैं (**तकं**) उन

समन्तभद्र आचार्य की (**अहं**) मैं (**ईडे**) स्तुति करता हूँ।

अर्थ : जो जीवों के प्राणों का घात करने में कृपण हैं अर्थात् जो प्राणि-हिंसा नहीं करते हैं, पर-मत रूपी हाथी के गण्डस्थल को खण्डित करने का जिनका एक मात्र प्रण है तथा जो भव्य जीवरूपी कमलों को खिलाने के लिए प्रचण्ड मार्तण्ड हैं, उन आचार्य देव की मैं स्तुति करता हूँ।

Meaning : Who is too miser in killing living beings i.e. who does not commit violence on the life of beings, whose only vow is to contradict/break the cheeks/temples of elephant of other doctrines and who is like a vehement sun for blossoming the lotus of worthy beings capable to attain salvation, I eulogize that **Acharya Deva**.

यस्यार्चितपदसेवा कल्पवल्लीव गी वरा प्रमुदे हि।

न्यायाक्षः कविदेवो नन्द्यात् सौख्यं प्रभो! देहि॥ 3॥

अन्वयार्थ : (**यस्य**) जिनके (**अर्चितपदसेवा**) पूजित चरणों की सेवा (**कल्पवल्ली इव**) कल्पवल्ली के समान है (**वरा गीः**) जिनकी श्रेष्ठ वाणी (**हि**) निश्चित ही (**प्रमुदे**) आनन्द के लिए है (**न्यायाक्षः**) जिनके पास न्याय रूपी नेत्र हैं (**कविदेवः**) जो कवियों से पूज्य हैं (**नन्द्यात्**) वह समन्तभद्र आचार्य सदा जयवन्त रहें (**प्रभो!**) हे स्वामिन् (**सौख्यं**) मुझे सुख (**देहि**) देओ।

अर्थ : जिनके पूजित पदों की सेवा कल्पवल्ली के समान है, जिनकी श्रेष्ठ वाणी प्रसन्नता के लिए है, जिनके पास न्याय की आँख है और जो कवियों में देव हैं। अर्थात् श्रेष्ठ हैं ऐसे आचार्य देव वृद्धि को प्राप्त हों। हे स्वामिन्। मुझे उत्तम सुख देओ।

Meaning : Service of whose adorable feet is like a **Kalpa-creeper** (wish fulfilling creeper/tree), whose excellent voice is capable of bestowing pleasure, who possess the eye of justice and who is god among poets i.e. super-excel-

lent. Such **Acharya** may attain growth/success. O Lord! bestow best pleasure on me.

देवागमसद्ग्रन्थाः स्वीकृता दुष्टपथभ्रमद्भिः पथिभिः।

पुष्यंस्त्वं निर्ग्रन्थं मतं ततः सम्मतं कृतिभिः॥ 4॥

अन्वयार्थ : (**दुष्ट-पथ-भ्रमद्भिः**) दुष्ट पथों पर भ्रमण करने वाले (**पथिभिः**) पथिकों से भी (**देवागमसद्ग्रन्थाः**) जिनके 'देवागम' आदि समीचीन शास्त्र (**स्वीकृताः**) स्वीकार किए गए हैं (**त्वं**) आप (**निर्ग्रन्थं मतं**) निर्ग्रन्थ मत को (**पुष्यन्**) पुष्ट करते रहे हैं (**ततः**) इसलिए (**कृतिभिः**) पुण्यशाली जीवों से आप (**सम्मतं**) सम्मान्य हैं।

अर्थ : दुष्ट पथों पर भ्रमण करने वाले राहगीरों के द्वारा भी जिनके रचे गए देवागम सदृश श्रेष्ठ ग्रन्थ स्वीकृत हैं। आपने निर्ग्रन्थ मत को पुष्ट बनाया है इसलिए आप श्रेष्ठजनों के द्वारा माननीय हैं।

Meaning : Whose composed excellent treatises like '**Devagam**' are accepted even by wayfarer walking on the mischievous roads. You have nourished the unattached and possessionless doctrine, hence you are respectable by the excellent people.

नामुञ्चो दृग्द्रविणं विस्फेटयितुं वपुषि जठरव्याधिम्।

मत्वा द्रविणकुलेऽहं जन्माप्यस्ति विषमव्याधिः॥ 5॥

अन्वयार्थ : (**वपुषि**) शरीर में (**जठरव्याधिम्**) जठर व्याधि (भस्मक रोग) को (**विस्फेटयितुं**) नाश करने के लिए (**दृग् द्रविणं**) सम्यग्दर्शन रूपी धन को (**न अमुञ्चः**) आपने नहीं छोड़ा। चूँकि (**अहं**) मैं (**द्रविणकुले**) द्रविण कुल में जन्मा हूँ (**मत्वा**) ऐसा मानकर (**जन्म अपि**) जन्म ही (**विषमव्याधिः**) विषम रोग (**अस्ति**) है, ऐसा आपने माना।

अर्थ : मैं द्रविण कुल में उत्पन्न हुआ हूँ, अतः सबसे विषम व्याधि यह जन्म धारण करना ही है, ऐसा मानकर शरीर में उत्पन्न हुई उदर व्याधि को दूर

करने के लिए आपने सम्यग्दर्शन रूपी धन को नहीं छोड़ा था।

Meaning : I have taken birth in the '**Dravin**' family-lineage, thinking so taking birth is, precisely the most intricate disease. Hence, you did not abandon the wealth of right belief for getting rid of stomach disease in the body.

चित्रं प्रभावकं वाऽऽ स्थया साकमेष यत्प्रवरवृत्तम्।

अभिनौमि कथा किं वा व्रतेन तं तन्महावृत्तम्॥ 6॥

अन्वयार्थ : (**यत्प्रवर-वृत्तं**) जिनका श्रेष्ठ चरित्र (**आस्थया साकं**) आस्था, श्रद्धा के साथ ही (**चित्रं**) विचित्र (**प्रभावकं वा**) अथवा प्रभावक था (**व्रतेन**) व्रतों के साथ (**तन्महावृत्तं**) उस महाचरित्र की (**किं वा कथा**) क्या कथा की जाए (**तं**) उन समन्तभद्र आचार्य को मैं (**एष**) यह साक्षात् (**अभिनौमि**) नमस्कार करता हूँ।

अर्थ :आस्था अर्थात् सम्यग्दर्शन के साथ ही जिनका श्रेष्ठ आचरण विचित्र और प्रभावक था फिर व्रतों के साथ उनके महान् आचरण के प्रभाव की क्या बात करें। उन आचार्य देव को मैं यह साक्षात् नमन करता हूँ।

Meaning : Whose excellent conduct along with faith i.e. right faith was peculiar and effective, then what to speak of the effectiveness of his great conduct attached with vow. I manifestly bow down before him.

प्रथमसारस्वतार्यः संस्तुतिकारः प्राज्ञः कविराद्यः।

प्राभूद्यो प्रमुखार्यः श्रुतधरार्यदत्तज्ञानमासाद्य॥ 7॥

अन्वयार्थ : (**प्रथम सारस्वतार्यः**) जो प्रथम सारस्वत आचार्य थे (**संस्तुतिकारः**) जो प्रथम स्तुतिकर्ता थे (**प्राज्ञः**) जो प्रज्ञावान् थे (**आद्यः कविः**) जो प्रथम कवि थे (**श्रुतधरार्यदत्त-ज्ञानं**) श्रुतधर आचार्यों के ज्ञान को (**आसाद्य**) प्राप्त करके (**यः**) जो (**प्रमुखार्यः**) प्रथम आचार्य (**प्राभूत्**) हुए थे।

अर्थ : जो प्रथम सारस्वताचार्य हैं, जो प्रथम स्तुतिकार के रूप में आद्य कवि माने गये हैं, जो प्रज्ञावान् हैं तथा जो श्रुतधर आचार्यों के दिए गए ज्ञान को प्राप्त करके श्रेष्ठ आचार्य हुए हैं।

Meaning : Who is the first **Saraswatacharya**; who has been regarded as the first poet in the form of first composer of eulogy; who is extremely intelligent and who became excellent **Acharya** grasping the knowledge given by great ascetics well-versed in scriptures.

नानुसूयान्मदाद्वा महज्जिनमतं भवान् प्रचारितवान्।
तीर्थकरत्वमुपेत्य च समाप द्युर्दयया सत्वान्॥ 8॥

अन्वयार्थ : **(भवान्)** आपने **(महज्जिनमतं)** उत्कृष्ट जिनमत को **(न अनुसूयात्)** न ही ईर्ष्या से **(वा मदात् न)** अथवा अहंकार से नहीं **(प्रचारितवान्)** प्रचारित किया था **(च)** तथा **(सत्त्वान् प्रति)** जीवों के प्रति **(दयया)** दयाभाव रहने से **(तीर्थकरत्वं)** तीर्थकर्तापन को **(उपेत्य)** प्राप्त करके आप **(द्युः)** स्वर्ग **(समाप)** चले गए।

अर्थ : आपने महान् जिनमत का प्रचार किया किन्तु ऐसा आपने अन्य मत के प्रति ईर्ष्या होने से अथवा जिनमत का मद होने से नहीं किया। जीवों के प्रति दया भाव जाग्रत होने से आपने न्यायतीर्थ स्थापित करके देवगति को प्राप्त किया।

Meaning : He has propagated well the Jain doctrines but did so neither out of spite nor because of jealousy towards other doctrines or out of pride of being follower of Jina doctrines. Out of compassion awakened towards living beings, he established the ford of justice and departed for the life-course of celestial being.

शैशवे शान्तिवर्माऽऽ, ख्यातं प्रख्यापितं शान्तवर्त्म।
मुनौ हि निरस्तमोहो भूत्वा विजहार वृषमोहः॥ 9॥

अन्वयार्थ : **(शैशवे)** शिशुकाल में **(शान्तिवर्म आख्यातं)** आपको शान्तिवर्मा कहा जाता था। **(शान्तवर्त्म)** आपने शान्ति का मार्ग **(प्रख्यापितं)** बतलाया **(मुनौ हि)** मुनि अवस्था में **(निरस्तमोहः)** निर्मोही **(भूत्वा)** होकर तथा **(वृषमोहः)** धर्म से मोह धारण करके **(विजहार)** आपने विहार किया था।

अर्थ : बचपन में जो शान्तिवर्मा के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपने मुनि बनकर धर्म से मोह रखते हुए तथा विषयों से मोह रहित होकर विहार किया तथा शान्ति-सुख का सच्चा मार्ग बताया।

Meaning : He was famous by the name of **Shanti Varma** during his childhood. He, by becoming Muni keeping attachment with religion and being free from delusion/attachment of sensual enjoyments moved about here and there and showed the right path of peace and pleasure.

आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज

भट्टारक परम्परा से प्रायः लुप्त हुई मुनि परम्परा को आपने पुनर्जीवित किया है। अंग्रेजों के शासन में जब मुनि का विहार प्रतिबंधित था तब आपने अपने दृढ़ चारित्र के बल से सम्पूर्ण भारत वर्ष में विहार करके दिगम्बरत्व का प्रचार किया। जैन मंदिर में हरिजन प्रवेश का सरकार का आदेश आपने अपनी दूरदर्शिता से निरस्त कराया। महान उपवास तप को धारण करके आपने चारित्र की महती प्रभावना की। 35 वर्ष के मुनि जीवन में 27 वर्ष 2 माह 23 दिन आपने उपवास से बिताए। आपने कुल 9938 उपवास किए हैं। श्रीधवल, जयधवल आदि सैद्धान्तिक ग्रन्थों को ताम्रपत्र पर उल्लिखित कराके श्रुत संरक्षण का श्रेष्ठ कार्य आपने किया। जीवन के अंतिम समय में 36 दिन की सल्लेखना के साथ आपने पार्थिव शरीर का त्याग किया।

Acharya Santisagar Ji

He has resuscitated the Muni tradition which was almost disappeared and replaced by ***Bhattarak*** tradition. When movement of ***Jain Muni*** was prohibited during the English regime, at that time he propagated ***Digamberatva*** (statehood of nude Jain saints) moving about throughout whole of India on the strength of his firm conduct. By his farsightedness, he caused cancellation of the governments order providing for the entry of ***Harijans*** into temples. By adopting austerity of fast, he greatly glorified the religion. During 35 years of his ascetic life he observed fasts for 27 years 2 months and 23 days. He observed total 9938 fasts. He accomplished the excellent job of the protection of scriptures by causing carving the treatises dealing with fundamental principles of Jainism like ***Shri Dhaval***, ***Jai Dhaval*** on the copper plates. He abandoned the mortal body with ***Sallekhna*** (resolve holy death) of 36 days at the end of his life.

शान्त्यष्टकम् (वंशस्थच्छन्द)

Shantayastkam (Vanshastha metre)

सुभारते येलुगमे निवासको हि भीमगौडा सुजनेष्टपाटिलः।
सुसत्यवत्यात्मज एव भूतले स सातगौडा मुनिशान्तिसागरः ॥1॥

अन्वयार्थ : (**सुभारते**) इस श्रेष्ठ भारत देश में (**येलुगमे**) दक्षिणा-पथ के येलुगम नामक ग्राम में (**निवासकः**) निवास करने वाले (**सुजनेष्ट-पाटिलः**) श्रेष्ठ व्यक्तियों के इष्ट पाटिल (**भीमगौड़ा**) भीमगौडा (**हि**) तथा (**सुसत्यवत्यात्मजः**) श्रीमती सत्यवती के पुत्र (**एव**) ही (**भूतले**) इस धरा पर (**स सातगौड़ा**) वह सातगौडा (**मुनिशान्तिसागरः**) मुनि शान्तिसागर हुए हैं।

अर्थ : इस श्रेष्ठ भारत देश में दक्षिणापथ के येलुगम नामक ग्राम में निवास करने वाले श्रेष्ठ व्यक्तियों के इष्ट पाटिल भीमगौडा तथा श्रीमती सत्यवती के पुत्र ही इस धरा पर वह सातगौड़ा मुनि शान्तिसागर हुए हैं।

Meaning : **Satgodha**, the son of **Patil Bhimgoda**, the favourite of excellent persons and **Smt. Satyavati** resident Yelugam Village situated on the way to south in this excellent country of Bharat, was precisely **Muni Shantisagar Ji** on this earth.

सुरोपमाङ्गश्च बलिष्ठदेहवान् तथाऽन्तरङ्गं जिनवर्त्मनीरितम्।
महीभुवां यो निरपेक्षबांधवः स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत् ॥ 2 ॥

अन्वयार्थ : (**यः**) जो (**सुरोपमाङ्गः**) देवों-सी उपमा वाले शरीर (**च**) और (**बलिष्ठदेहवान्**) बलिष्ठदेह वाले थे। (**तथा अन्तरङ्गं**) तथा जिनका मन (**जिनवर्त्मनि**) जिनमार्ग में (**ईरितं**) दौड़ता रहता था। जो (**महीभुवां**) धरा पर उत्पन्न हुए जीवों के (**निरपेक्षबांधवः**) निरपेक्ष बंधु

थे। **(स)** वह **(शांतिसिन्धुः)** शांतिसागर आचार्य **(मे)** मेरे **(हृदि)** हृदय में **(सदा)** हमेशा **(वसेत्)** वास करें।

अर्थ : जो देवों-सी उपमा वाले शरीर और बलिष्ठ देह वाले थे। तथा जिनका अन्तरङ्ग जिनमार्ग में दौड़ता रहता था। जो धरा पर उत्पन्न हुए जीवों के निरपेक्ष बंधु थे। वह शांतिसागर आचार्य मेरे हृदय में हमेशा वास करें।

Meaning : Who possessed the body having simile of celestial beings and of strong and sturdy body and whose inner heart used to run on the path of Jina. Who was an impartial brother (i.e. without having any interest of his own) of beings born on this earth. That **Shri Shantisagar Acharya** may always reside in my heart.

नवाब्दिकेऽल्पायुषि यद्विवाहितो मृतेऽपि तस्या न तथा पुनः कृतः।

येनाऽऽयुषो मुक्तिरमा सुसेविता स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 3॥

अन्वयार्थ : (यत्) चूँकि **(नवाब्दिके)** नववर्ष की **(अल्पायुषि)** अल्प आयु में वह **(विवाहितः)** विवाहित हुए थे। **(तस्याः)** उस (स्त्री) के **(मृतेऽपि)** मर जाने पर भी **(तथा न पुनः कृतः)** उन्होंने पुनः विवाह नहीं किया **(येन)** जिन्होंने **(आयुषः)** आयु पर्यन्त **(मुक्तिरमा)** मुक्ति रूपी स्त्री की **(सुसेविता)** अच्छी तरह सेवा की **(सः)** वह **(शान्तिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागर आचार्य **(मे)** मेरे **(हृदि)** हृदय में **(सदा)** हमेशा **(वसेत्)** वास करें।

अर्थ : चूँकि नव वर्ष की अल्प आयु में वह विवाहित हुए थे। उस स्त्री के मर जाने पर उन्होंने पुनः विवाह नहीं किया। जिन्होंने आयु पर्यन्त मुक्ति रूपी स्त्री की अच्छी तरह सेवा की वह श्री शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में हमेशा वास करें।

Meaning : As he was married in the small age of nine years, he did not marry again even after death of that woman; who served well the woman of salvation during his whole life. That **Shri Shantisagar Ji** may always reside in my heart.

दिगम्बरीभूय सरन् स्वयं पुरा प्रबोधयन् लुप्तमुनिप्रवृत्तिकान्।

निजात्मसिद्धिं समवाप सुन्दरीं स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 4॥

अन्वयार्थ : (स्वयं पुरा) जो स्वयं ही पहले **(दिगम्बरीभूय)** दिगम्बर दीक्षा लेकर **(सरन्)** विहार करते हुए और **(लुप्तमुनिप्रवृत्तिकान्)** लोप को प्राप्त हो रही मुनि सम्बन्धी प्रवृत्तियों को **(प्रबोधयन्)** समझाते हुए **(निजात्मसिद्धिं)** अपनी आत्मसिद्धि वाली **(सुन्दरीं)** सुन्दरी को **(समवाप)** प्राप्त किए। **(सः)** वह **(शान्तिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागर आचार्य **(मे)** मेरे **(हृदि)** हृदय में **(सदा)** हमेशा **(वसेत्)** निवास करें।

अर्थ : जो स्वयं ही पहले दिगम्बर दीक्षा लेकर विहार करते रहे और लोप को प्राप्त हो रही मुनि संबंधी प्रवृत्तियों को समझाते हुए अपनी आत्मसिद्धि सुन्दरी को प्राप्त किए। वह श्री शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में हमें निवास करें।

Meaning :- First, who himself went on moving taking initiation of **Digamber** saint and causing to understand others the disappearing tendencies concerning to Jain Muni, had attained the damsel of self-accomplishment. That **Shri Shantisagar Ji Acharya** may always reside in my heart.

शठैर्जनैर्भीमविशालपन्नगैः पिपीलिकाभिः प्रचुरोपसर्गतः।

तपोधनोऽक्षोभत योगतो न यः स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 5॥

अन्वयार्थ : (शठैः जनैः) दुष्ट जनों के द्वारा **(भीमविशालपन्नगैः)** भयंकर बड़े-बड़े सर्पों द्वारा और **(पिपीलिकाभिः)** चींटियों के द्वारा किए गए **(प्रचुरोपसर्गतः)** प्रचुर उपसर्ग से **(यः तपोधनः)** जो तपःपूत **(न अक्षोभत)** क्षोभ को प्राप्त नहीं हुए थे। **(सः)** वह **(शान्तिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागर आचार्य **(मे)** मेरे **(हृदि)** हृदय में **(सदा वसेत्)** हमेशा वास करें।

अर्थ : दुष्ट जनों के द्वारा भयंकर बड़े-बड़े सर्पों द्वारा और चींटियों के द्वारा किए गए प्रचुर उपसर्ग से जो तपःपूत क्षोभ को प्राप्त नहीं हुए थे वह श्री

शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में हमेशा वास करें।

Meaning : Who great austere did not get disturbed/ perturbed by the ample calamities brought by evil people, by terrible snakes and by ants. That **Shri Shantisagar Ji Acharya** may always reside in my heart.

महाव्रतप्राज्यविभूतये कला सुधीगणानां परिवेषतो वृतः।

शशाङ्कशोभेवे विशोभते स्म यः स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 6॥

अन्वयार्थ : (यः) जो **(महाव्रतप्राज्यविभूतये)** महाव्रतों की विशाल विभूति के लिए **(कला)** चन्द्रमा की कला समान थे **(सुधीगणानां)** विद्वानों के समूहों के **(परिवेषतः)** मण्डल से **(वृतः)** घिरे रहते थे। **(शशाङ्कशोभा इव)** चन्द्रमा की शोभा के समान जो **(विशोभते स्म)** सुशोभित होते थे **(सः)** वह **(शान्तिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागराचार्य **(मे हृदि)** मेरे हृदय में **(सदा वसेत्)** सदा निवास करें।

Specific Meaning : Who was like the phase of the moon for grand grandeur of great vows; used to be surrounded by the mass of learneds; who remained embellished like the splendour of the moon, that **Shri Shantisagar Ji Acharya** may always reside in my heart.

अर्थ : जो महाव्रतों की विशाल विभूति के लिए चन्द्रमा की कला समान थे। विद्वानों के समूहों के मण्डल से घिरे रहते थे। चन्द्रमा की शोभा के समान जो सुशोभित होते थे वह श्री शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में सदा निवास करें।

Meaning : Just as the phases of the moon are precisely its grandeur due to which it glitters in the whole world and gives calmness, similarly the eminent grandeur of great vows was like his phase and just as the moon surrounded by many stars and planets in the sky looks graceful' similarly **Acharya Deva** looked graceful like the Moon surrounded by the learneds saints etc. ascetics.

शिलासु तिग्मे शिशिरे तरोस्तले गिरौ गुहायां समधाद्यमद्वयम्।

तपस्तपस्यन् समतां विचिन्तयन् स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 7॥

अन्वयार्थ : (तिग्मे) ग्रीष्मकाल में **(शिलासु)** शिलाओं पर **(शिशिरे)** शीतकाल में **(तरोस्तले)** वृक्ष के तल में, **(गिरौ)** पर्वत पर **(गुहायां)** गुफाओं में **(तपः तपस्यन्)** अनेक प्रकार के तप से तपस्या करते हुए **(समतां विचिन्तयन्)** समताभाव का चिंतवन करते हुए **(यमद्वयम्)** अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग यम को **(समधात्)** जिन्होंने धारण किया था **(सः)** **(शांतिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागराचार्य **(मे हृदि)** मेरे हृदय में **(सदा वसेत्)** निरन्तर स्थित रहें।

अर्थ : ग्रीष्म काल में शिलाओं पर शीतकाल में वृक्ष के तल में, पर्वत पर, गुफाओं में अनेक प्रकार के तप से तपस्या करते हुए समता भाव का चिन्तवन करते हुए अन्तरंग और बहिरंग यम को जिन्होंने धारण किया था वह श्री शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में निरन्तर स्थित रहें।

Meaning : Observing many types of austerities on the rocks in the summer season under the tree in the cold season, on mountain, on caves etc. and mainataining/meditating equanimous disposition who had assumed internal and outer renunciation/austerities, that **Shri Shantisagar Ji** may always reside in my heart.

समाधिमादाय सुबुद्धिपूर्वकस्तपः श्रुतं सारमवाप्य देहतः।

चकार भिन्नञ्च चिदात्मसंपदां स शान्तिसिन्धुर्हृदि मे सदा वसेत्॥ 8॥

अन्वयार्थ : (सुबुद्धिपूर्वकः) जिन्होंने अच्छी तरह बुद्धि पूर्वक **(समाधिम् आदाय)** समाधि को ग्रहण करके **(च देहतः)** और देह का **(सारं)** फल **(तपःश्रुतं)** तप और श्रुत **(अवाप्य)** प्राप्त करके **(चिदात्मसंपदां)** चैतन्य आत्म सम्पदा को **(भिन्नं)** भिन्न **(चकार)** किया था **(सः)** वह **(शान्तिसिन्धुः)** श्री शान्तिसागर आचार्य **(मे हृदि)** मेरे हृदय में **(सदा वसेत्)** हमेशा निवास करें।

Specific Meaning : The only fruit of assuming the body is adoration of scripture and observing austerity. This fruit is obtained by accepting '**Samadhi/Sallekhna**' (holy death) and from that very, the soul appears to be separate from the body. Who wisely adopted/accepted such '**Samadhi**' that **Shri Shantisagar Ji Acharya** may always reside in our heart.

अर्थ : जिन्होंने अच्छी तरह बुद्धिपूर्वक समाधि को ग्रहण करके और देह का फल तप और श्रुत प्राप्त करके चैतन्य आत्म सम्पदा को भिन्न किया था वह श्री शान्तिसागर आचार्य मेरे हृदय में हमेशा निवास करें।

Meaning : Who accepting wisely well the '**Samadhi**' i.e. holy death at the end his life and getting the fruit of the body the austerity and scriptural knowledge, had separated the wealth of the soul (from the body) that **Shri Shantisagar Ji Acharya** may always reside in my heart.

भाद्रे शुक्ले द्वितीयायां कुन्थले पर्वते शुभे।

पक्षैकशून्यपक्षे हि विक्रमे स दिवं ययौ॥ 9॥

अन्वयार्थ : (शुभे) श्री देशभूषण-कुलभूषण महाराज की समाधि स्थली होने से शुभ **(कुन्थले पर्वते)** श्री कुन्थलगिरिक्षेत्र पर **(भाद्रे)** भाद्रमास के **(शुक्ले)** शुक्ल पक्ष की **(द्वितीयायां)** दोज को **(विक्रमे)** विक्रमसंवत्सर **(पक्षैकशून्यपक्षे)** 2102 'अङ्कानां वामतो गतिः' के अनुसार 2012 में **(सः)** वह मुनिश्रेष्ठ **(हि)** स्पष्टतः **(दिवं)** स्वर्ग को **(ययौ)** चले गये।

अर्थ : श्री देशभूषण, कुलभूषण महाराज की समाधि स्थली होने से शुभ श्री कुंथलगिरि क्षेत्र पर भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की दोज की विक्रमसंवत्सर 2102 'अंकानां वामतो गति' के अनुसार 2012 में मुनिश्रेष्ठ स्पष्टतः स्वर्ग को चले गए।

Meaning :- That excellent Muni clearly departed for heaven from **Kunthalgiri Siddha Ksetra**, an auspicious land due to trance-place of **Shri Deshbhusan-Kulbhusan Maharaj** on the 2nd day of the light half of the lunar month **Bhadra**, Vikram samvat 2012.

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी

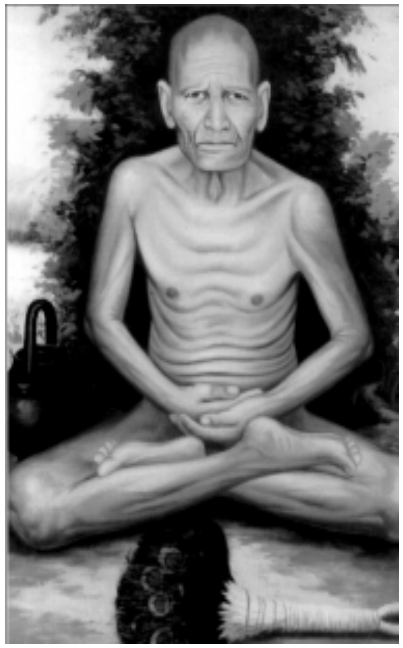

आचार्य शान्तिसागर जी की परम्परा में आचार्य श्री वीरसागरजी एवं आचार्य श्री शिवसागरजी हुए हैं। आचार्य श्री शिवसागरजी के प्रथम मुनि शिष्य श्री ज्ञानसागरजी हुए। आपने ब्रह्मचर्य जीवन में ही अनेक महाकाव्यों की रचना करके साहित्य जगत् में कालिदास और भास की उच्चकोटि की ख्याति प्राप्त की। जयोदय, वीरोदय, सुदर्शनोदय, ग्रन्थत्रयी के नाम से प्रसिद्ध हैं। अत्यन्त निस्पृह और सरल स्वभावी होना आपका सदा प्रमुख प्रभावात्मक गुण रहा है। स्वयं अपने प्रथम शिष्य मुनि विद्यासागर को आचार्य पद देकर उनके चरणों में बैठकर सल्लेखना की विनती करके आपने ज्ञात आचार्य परम्परा में एक पृथक् कीर्तिमान स्थापित किया है।

Acharya Jnansagar Ji

Acharya Veersagar Ji and ***Acharya Shri Shivsagar ji*** were Muni in the tradition of ***Acharya Shantisagar ji***. ***Shri Jnansagar ji*** was the first Muni disciple of ***Acharya Shri Shivsagar ji***. He earned a higher quality of fame at par with ***Kalidas*** and ***Bhas*** in the world of literature by composing epics when he was merely a celibate. ***Jayodaya, Veerodaya, Sudarsanodaya*** are famous by the name of treatise-trio. Extremely attachmentlessness and simple nature always remained his chief effective attribute. Bestowing himself his status of ***Acharya*** to his first disciple ***Muni Vidyasagarji*** and sitting in his feet requested him to grant him ***Sallekhna*** (holy death), he established a distinct grand record in the known tradition of ***Acharya***.

ज्ञानाष्टकम् (वसन्ततिलका छन्द)

Jnanastkam (Basanttilka metre)

श्रीमच्चतुर्भुजभुजारमणास्पदीया
सौभाग्यवद्-घृतवरी तनयश्च तस्याः।
योऽभूत् कवित् कविवरो यमधर्ममस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 1॥

अन्वयार्थ : (श्रीमच्चतुर्भुजभुजारमणास्पदीया) श्रीमान् चतुर्भुज की भुजाओं में रमण के स्थान को प्राप्त **(च)** तथा **(सौभाग्यवद्घृतवरी)** सौभाग्यवती घृतवरी स्त्री थी **(तस्याः)** उनका **(तनयः)** पुत्र **(यः तु)** जो कि **(कवित्)** आत्मा को जानने वाला **(कविवरः)** कवियों में श्रेष्ठ **(यमधर्मम:)** यमरूपी धर्म की लक्ष्मी वाला **(अभूत्)** था **(तज्ज्ञानसागरयतेः)** उन श्रीज्ञानसागरयति के **(पदयोः)** चरणों में **(नमोऽस्तु)** मेरा नमस्कार हो।

अर्थ : श्रीमान् चतुर्भुज की भुजाओं में रमण के स्थान को प्राप्त तथा सौभाग्यवती घृतवरी स्त्री थी। उनका पुत्र जो कि आत्मा को जानने वाला, कवियों में श्रेष्ठ, यमरूपी धर्म की लक्ष्मी वाला था, उन श्री ज्ञानसागर यति के चरणों में मेरा नमस्कार हो।

Meaning : Having enjoyed dalliance in the arms of **Shriman Chaturbhuj** and son of mother **Ghritvari**, was a perceiver of the soul, excellent among poets and possessor of the religion of the goddess of **Yama** (i.e. all renunciations), I pay my Obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar**, the great ascetic.

भावार्थ : श्रेष्ठी चतुर्भुज और माता घृतवरी के श्रेष्ठ पुत्र पं. भूरामल जी हुए हैं, वही आगे जाकर श्री ज्ञानसागर आचार्य कहलाए।

Implied Meaning : **Bhooramal ji** was an excellent son of Seth **Chaturbhuj** and mother **Ghritvari** who later on called by the name of **Jnansagar Acharya**.

वीरोदयप्रभृतयो भुवि यस्य शस्ता
ग्रन्थाश्च लक्षणभृता विदुषां प्रसक्ताः।
व्याहन्ति मंक्षु तिमिरारिरिवाघवस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 2॥

अन्वयार्थ : (यस्य) जिनके **(ग्रन्थाः)** ग्रन्थ **(वीरोदय प्रभृतयः)** वीरोदय आदि **(भुवि)** पृथ्वी पर **(शस्ताः)** व्याकरण, साहित्य आदि के लक्षणों से परिपूर्ण हैं, तथा **(विदुषां प्रसक्ताः)** विद्वानों को आसक्त करने वाले हैं **(तु)** और जो **(मंक्षु)** शीघ्र ही **(तिमिरारिःइव)** सूर्य के समान **(अघवस्तु)** पाप अन्धकाररूपी पदार्थों का **(व्याहन्ति)** नाश करने वाले हैं **(तज्ज्ञानसागरयतेः)** उन श्री ज्ञानसागर मुनिराज के **(पदयोः)** चरणों में**(नमोऽस्तु)** नमस्कार हो।

अर्थ : जिनके ग्रंथ वीरोदय आदि पृथ्वी पर प्रशंसनीय है, व्याकरण, साहित्य आदि के लक्षणों से परिपूर्ण तथा विद्वानों को आसक्त करने वाले हैं और जो शीघ्र ही सूर्य के समान पाप अन्धकाररूपी पदार्थों का नाश करने वाले हैं, उन श्री ज्ञानसागर मुनिराज के चरणों में नमस्कार हो।

Meaning : Whose treatise **Veerodaya** etc. are praiseworthy on this earth, are full of characteristics of grammar and literature and are capable of attracting the learneds and who is the destroyer of the darkness of matters of sin, I pay my Obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar**, the great ascetic.

भिन्नार्त्तरौद्रहृदयो जननार्त्तदूरो
मिथ्याप्रपञ्चरहितः शुभभावपूरः।
शुद्धात्मवृत्तिरसिकः सुखमात्मनोऽस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 3॥

अन्वयार्थ : (**भिन्नार्त्तरौद्रहृदयः**) जिनका हृदय आर्त्त, रौद्रध्यान से रहित है, (**जननार्त्तदूरः**) जो जन्म के दुःखो से दूर हैं (**मिथ्याप्रपञ्चरहितः**) जो मिथ्या प्रपञ्चों से रहित हैं, (**शुभभावपूरः**) जो शुभभावों से वृद्धिंगत हैं (**शुद्धात्मवृत्तिरसिकः**) शुद्धत्मा में प्रवृत्ति करने में जिन्हें रस आता है (**तज्ज्ञानसागरयतेः**) उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के (**पदयोः**) चरणों में (**नमोऽस्तु**) मेरा नमन हो ताकि (**आत्मनः**) मेरी आत्मा को (**सुखं**) सुख (**अस्तु**) हो।

अर्थ : जिनका हृदय आर्त्त, रौद्रध्यान से रहित है, जो जन्म के दुःखों से दूर है, जो मिथ्या प्रपंचों से रहित हैं, जो शुभभावों से वृद्धिंगत हैं, शुद्धात्मा में प्रवृत्ति करने में जिन्हें रस आता है, उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमन हो ताकि मेरी आत्मा को सुख हो।

Meaning : Whose heart is devoid of painful and cruel concentration, who is far off from the griefs of births, who is free from illusions/entanglements of falsity, who is endowed with auspicious thoughts, who takes interest in the tendency of pure soul, I pay my Obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar**, so that my soul may be benefited with the well-being (good fortune).

पंचाक्षकृष्णफणिने पृथुवैनतेयः
कामानलस्य जलदो जिनभानुभा यः।
गङ्गापवित्रजलवद्विमलं मनस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 4॥

अन्वयार्थ : (**यः**) जो (**पंचाक्षकृष्णफणिने**) पाँच इन्द्रियरूपी काले सर्प के लिए (**पृथुवैनतेयः**) विशाल गरुड़ के समान हैं (**कामानलस्य**) जो काम-वासना रूपी अग्नि को बुझाने के लिए (**जलदः**) मेघ के समान हैं (**जिनभानुभा**) जिनकी आभा जिनेन्द्र भगवान् रूपी सूर्य के समान है (**मनः तु**) तथा जिनका मन (**गङ्गापवित्रजलवत्**) गङ्गा के पवित्र जल के समान (**विमलं**) निर्मल है, (**तत् ज्ञानसागरयतेः**) उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के

(**पदयोः**) चरणों में (**नमः अस्तु**) मेरा नमन हो।

अर्थ : जो पाँच इन्द्रिय रूपी काले सर्प के लिए विशाल गरुड़ के समान हैं, जो काम-वासना रूपी अग्नि को बुझाने के लिए मेघ के समान हैं, जिनकी आभा जिनेन्द्र भगवान् रूपी सूर्य के समान है तथा जिनका मन गङ्गा के पवित्र जल के समान निर्मल है, उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमन हो।

Meaning : Who like a huge **Garur** for the black serpent of the five senses, who is like a cloud for extinguishing the fire of lust, whose lustre is like the sun of Lord **Jinendra** and whose mind is pure like the sacred water of the **Ganges**, I pay my Obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar Acharya**.

भूरामलेऽपि विमलः कलिरूढिपङ्कात्
ज्ञानार्णवे विमलचिन्मयभङ्गलीनः।
यस्मात् सदैव कुशलं जगतां समस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 5॥

अन्वयार्थ : (**भूरामले अपि**) जो ब्रह्मचारी अवस्था में पं. भूरामल होने पर भी (**कलिरूढिपङ्कात्**) कलिकाल सम्बन्धी रूढ़ि के कीचड़ से (**विमलः**) रहित रहे, जो (**ज्ञानार्णवे**) श्री ज्ञानसागर होने पर (**विमलचिन्मयभङ्गलीनः**) निर्मल चिन्मय की तरङ्गों में लीन रहे (**यस्मात्**) जिनसे (**सदैव**) हमेशा (**जगतां**) इस जगत् का (**कुशलं**) कल्याण (**समस्तु**) होता हो (**तत् ज्ञानसागरयतेः**) उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के (**पदयोः**) चरणों में (**नमःअस्तु**) मेरा नमस्कार हो।

अर्थ : जो ब्रह्मचारी अवस्था में पं. भूरामल होने पर भी कलिकाल सम्बन्धी रूढ़ि के कीचड़ से रहित रहे, जो श्री ज्ञानसागर होने पर निर्मल चिन्मय की तरङ्गों में लीन रहे, जिनसे हमेशा इस जगत् का कल्याण होता हो उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमस्कार हो।

Meaning : Who even being **Pandit Bhooramal** in the state of celibate, remained free from the mud of convention of the kali age; who even being **Shri Jnansagar** remained immersed in the waves of pure consciousness of soul; who is always instrumental in the well-being of the world, I bow down on the feet of that **Acharya Jnansagar**.

चित्ते दया विनिवसत्यभिभूतमेति
दुष्टापकीर्तिरघताऽपि विभीतिमेति।
आचार्यवर्य! समतासुखवस्तु नस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 6॥

अन्वयार्थ : (**चित्ते**) जिनके चित्त में (**दया**) दया (**विनिवसति**) रहती है (**दुष्टापकीर्तिः**) दुष्ट अपयश जिनसे (**अभिभूतं**) पराजय को (**एति**) प्राप्त होता है (**अघता**) पाप भाव (**अपि**) भी जिनसे (**विभीतिं**) भय को (**एति**) प्राप्त होता है (**आचार्यवर्य!**) ऐसे हे आचार्यश्रेष्ठ (**नः**) हमको (**तु**) भी (**समतासुखवस्तु**) समता सुख की वस्तु मिले अतः (**तत् ज्ञानसागरयतेः**) उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के (**पदयोः**) चरणों में (**नमः अस्तु**) मेरा नमस्कार हो।

अर्थ : जिनके चित्त में दया रहती है, दुष्ट अपयश जिनसे पराजय को प्राप्त होता है, पाप भाव भी जिनसे भय को प्राप्त होता है, ऐसे हे आचार्य हमको भी समता सुख की वस्तु मिले, अतः उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमस्कार हो।

Meaning : Whose heart is full of compassion; by whom the wicked infamy gets defeated; by whom the sinful thoughts get frightened, O such an excellent **Acharya**! We may also get the pleasure of equanimity hence, I pay my Obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar ji Acharya**.

यत्नात् शशास वृषवीरशिवार्यसंघे
सिद्धान्तसंस्कृतकथादिसुशास्त्रसंघम्
पूज्योऽपि योऽत्र मृदुतालयकेतुरस्तु

तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 7॥

अन्वयार्थ : (**वृषवीरशिवार्यसंघे**) श्री आचार्य धर्मसागर, वीरसागर, एवं शिवसागरजी के संघ में (**सिद्धान्तसंस्कृतकथादिसुशास्त्रसंघम्**) सिद्धान्त, संस्कृत, प्रथमानुयोग आदि श्रेष्ठ शास्त्रों को (**यत्नात्**) यत्नपूर्वक (**शशास**) जो पढ़ाते थे। (**यः**) जो (**अत्र**) इस लोक में (**पूज्यः अपि**) पूज्य होते हुए भी (**मृदुतालयकेतुः**) मृदुतारूपी महल की पताका (**अस्तु**) हैं (**तत् ज्ञानसागरयतेः**) उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के (**पदयोः**) चरणों में (**नमः अस्तु**) मेरा नमस्कार हो।

अर्थ : श्री आचार्य धर्मसागर, वीरसागर एवं शिवसागरजी के संघ में सिद्धान्त, संस्कृत, प्रथमानुयोग आदि श्रेष्ठ शास्त्रों को यत्नपूर्वक जो पढ़ाते थे। जो इस लोक में पूज्य होते हुए भी मृदुता रूपी महल की पताका हैं, उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमन हो।

Meaning : Who used to teach with great exertion the excellent scriptures/texts dealing with the fundamentals of Jain philosophy, Sanskrit, **Prathmanuyoga** etc. in the congregation of **Acharya Dharamsagarji, Veersagarji** and **Shiv sagarji**, who even being adorable in this world, is flag of the palace of modesty/softness, I bow down on the feet of that **Shri Jnansagarji Acharya**.

त्वं चित्तगेहकमलं मुनिप! प्रविश्य
सद्ध्यानतोरणसमागत आप्रतिष्ठ।
भिक्षाचरोऽपि विददाति सुवस्तु नस्तु
तज्ज्ञानसागरयतेः पदयोर्नमोऽस्तु॥ 8॥

अन्वयार्थ : (**मुनिप!**) हे मुनिश्रेष्ठ! (**त्वं**) आप (**सद्ध्यान-तोरणसमागतः**) समीचीन ध्यानरूपी तोरण द्वार से आए हुए (**चित्तगेहकमलं**) मेरे चित्तरूपी गृह कमल में (**प्रविश्य**) प्रवेश करके (**आप्रतिष्ठ**) विराजमान होओ। (**भिक्षाचरः अपि**) जो भिक्षाचर्या करते हुए भी (**नः**) हमको (**सुवस्तु**) श्रेष्ठवस्तु (**तु**) अवश्य (**विददाति**) देते हैं (**तत् ज्ञानसागरयतेः**)

उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के **(पदयोः)** चरणों में **(नमः अस्तु)** मेरा नमस्कार हो।

अर्थ : हे मुनिश्रेष्ठ! आप समीचीन ध्यानरूपी तोरण द्वार से आते हुए मेरे चित्तरूपी गृह कमल में प्रवेश करके विराजमान होओ। जो भिक्षाचर्या करते हुए भी हमको श्रेष्ठवस्तु अवश्य देते हैं उन श्री ज्ञानसागर आचार्य के चरणों में मेरा नमस्कार हो।

Meaning : O excellent ascetic! Be ensconce in the lotus home of my heart entering it from the ornamented arch of the gateway of right/befitting meditation, who even observing mendicancy gives us excellent thing, I pay my obeisance to the feet of that **Shri Jnansagar Acharya**.

मालिनी छन्द

सुनयकमलचन्द्रं विश्वशान्त्यैकमन्त्रं
विविधविबुधमान्यं चित्तभूपुण्यधान्यम्।
भवजलजतुषारं मूर्तिमध्यात्मसारां
वृणु सुगुणमगम्यं ज्ञानसूरिं प्रणम्य॥ 9॥

अन्वयार्थ : **(सुनयकमलचन्द्रं)** समीचीन नय रूपी कमलों को खिलाने के लिए चन्द्र के समान **(विश्व-शान्त्यैक-मन्त्रं)** विश्व की शान्ति के लिए एक मात्र मन्त्र **(विविध-विबुध-मान्यं)** अनेक ज्ञानियों से मान्य **(चित्तभू-पुण्य-धान्यम्)** चित्त रूपी पृथ्वी पर पुण्य की धान्य स्वरूप **(भवजलज-तुषारम्)** संसार रूपी कमल के लिए **(अध्यात्मसाराम् मूर्तिम्)** अध्यात्म की सार स्वरूप मूर्ति **(ज्ञानसूरिम्)** ज्ञानसागर आचार्य को **(प्रणम्य)** प्रणाम करके **(अगम्यं)** इन्द्रियों से जानने योग्य **(सुगुणम्)** श्रेष्ठ गुणों का **(वृणु)** तुम वरण (ग्रहण) करो।

अर्थ : सुनयरूपी कमल को खिलाने के लिए चन्द्रमा के समान विश्वशान्ति का एक मात्र मन्त्र, अनेक विद्वानों से मान्य, चित्तरूपी पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाली पुण्य रूपी धान्य स्वरूप, संसाररूपी कमल को नष्ट करने के

लिए तुषार के समान, अध्यात्म की सारभूत मूर्ति श्री ज्ञानसागर आचार्य को प्रणाम करके, उनके इन्द्रियों से अगोचर श्रेष्ठ गुणों का हे भव्य! वरण करो।

Meaning : O accomplishable soul! Choose/adopt his excellent merits not perceptible by senses by paying obeisance to the substantial image of spirituality, who is like the moon for blooming the lotus of right view point; is the only esoteric formula of world peace, recognized by several learneds; is like the grains of virtue being produced on the land of heart; is like the frost for destroying the lotus of world.

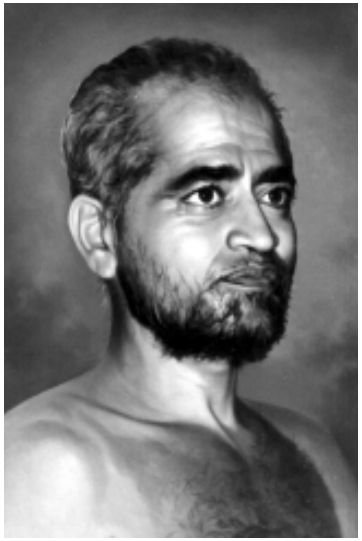

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के प्रथम शिष्य बनकर आपने अल्प उम्र में ही भाषा, साहित्य और सिद्धान्त पर एकछत्र अधिकार प्राप्त किया है। 'मूकमाटी' महाकाव्य आधुनिक हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर आपकी कालजयी कृति बन गयी है। उच्चतम शिक्षा प्राप्त युवा और युवतियों को वैराग्य की शिक्षा आपके रत्नत्रय की प्रभावना से सहज ही मिल जाती है। अपने गुरु वचनों के आशीष को फलित करके आपने 89 मुनि और 172 आर्यिका दीक्षायें देकर गुरुकुल बनाया है। आपके सभी शिष्य बाल ब्रह्मचारी हैं। सर्वोदय, भाग्योदय, प्रतिभास्थली आदि तीर्थों के निर्माण की प्रेरणा से आपने सामाजिक चेतना को धर्म संस्कारों से जाग्रत किया है। वर्तमान के समस्त आचार्यों में आप ज्येष्ठतम, श्रेष्ठतम आचार्य हैं।

Acharya Vidyasagar Ji

As the first disciple of ***Acharya Shri Jnansagar ji Maharaj*** he (***Vidyasagarji***) has achieved undisputed right over the language, literature, religious doctrines, precisely in his young age. His ***Mook Mati*** epic having earned the supreme place in the modern Hindi literature, has become his ever lasting work of fame. His glorification of gems-trio (***Ratanatraya***) is a natural instrument for teaching the highly educated young men and women the lesson of aversion from worldly life. Having fruited the blessing-words of his Guru, he has formed a congregation (seminary) by giving initiation to 89 ***Muni*** and 172 ***Aryikayen***. All of his disciples are celibates from early childhood. He has awakened the social consciousness by sanctifying religious rites through stimulation/encouragement for the construction of ***Sarvodaya, Bhagyodaya, Pratibha-sthali*** etc. ***Teerth*** (places of pilgrimage). He is the senior most, most excellent ***Acharya*** among all the existing ***Acharyas***.

विद्याष्टकम् (वसन्ततिलकाच्छन्दः)

Vidyastkam (Basanttilka metre)

सुश्रीमतीह जननी च पिता मलप्पा
जज्ञे द्वितीयतनयो भुवि योऽद्वितीयः।
विद्याधरोऽपि सुतरां हृदयस्थविद्यो
विद्यादिसागरमुनीन्द्र! हरारिविद्याः॥ 1॥

अन्वयार्थ : (**इह**) इस लोक में (**सुश्रीमती**) श्रीमती (**जननी**) माँ (**च**) और (**मलप्पा**) मलप्पा (**पिता**) पिता थे। (**द्वितीयतनयः**) जिनका द्वितीय पुत्र (**भुवि**) इस पृथ्वी पर (**जज्ञे**) उत्पन्न हुआ (**यः**) जो कि (**अद्वितीयः**) अद्वितीय था (**विद्याधरः अपि**) जिसका नाम विद्याधर था फिर भी (**सुतरां**) अच्छी तरह (**हृदयस्थविद्यः**) सभी विधाएँ उन्हें हृदयस्थ थी। (**विद्यादिसागर मुनीन्द्र**) ऐसे विद्यासागर आचार्य! आप (**अरिविद्याः**) मेरी दुष्ट विद्याओं का (**हर**) नाश करें।

अर्थ : इस भारतदेश के दक्षिण प्रान्त में श्रेष्ठ माता श्रीमती और मलप्पा पिता थे। जिनका द्वितीय पुत्र विद्याधर हुआ। जो पृथ्वी पर द्वितीय पुत्र होकर भी अद्वितीय था। विद्यायें जिनके अधरों पे रहते हुए भी अच्छी तरह से उन्हें हृदयस्थ थीं, इस विरोधाभास का परिहार यह है कि विद्याधर उनका नाम था और उन्हें सभी विद्यायें हृदयस्थ थीं। ऐसे श्री विद्यासागर आचार्य! हमारी दुष्ट विद्याओं का नाश करें।

Meaning : There were an excellent mother **Shrimati** and Father **Malappa** in the southern province of this country Bharat. Their second son was **Vidyadhara**, who even being a second son was unparallel/unequalled. The learnings, even being remaining on the tip of whose lips, were assimilated with

in his heart. The evasion of this contradictory statement is that his name was **Vidyadhara** and all the learnings were resting in his heart. Such **Vidyasagar Acharya** may annihilate our wicked learnings.

पापास्पदानि निविड़ानि विभञ्जनार्थं
पुण्यास्पदानि विविधानि विवर्धनार्थम्।
कर्माणि वर्यवर! ते शरणं दधेऽहं
प्रीणातु मां भवहरं चरणारविन्दम्॥ 2॥

अन्वयार्थ : **(पापास्पदानि)** पाप के स्थानभूत **(कर्माणि)** कर्म **(निबिडानि)** सघन हैं (तेषां) **(विभञ्जनार्थं)** उनका विनाश करने के लिए तथा **(पुण्यास्पदानि)** पुण्य के स्थान भूत **(विविधानि कर्माणि)** अनेक प्रकार के कर्म हैं (तेषां) **(विवर्धनार्थं)** उनकी वृद्धि के लिए **(वर्यवर!)** हे श्रेष्ठों में श्रेष्ठ! आचार्य देव! **(ते)** आपकी **(शरणं)** शरण को **(अहं दधे)** मैं धारण करता हूँ।**(भवहरं)** संसार के नाशक **(चरणारविन्दं)** आपके चरण कमल **(मां)** मुझे **(प्रीणातु)** प्रसन्न करें।

अर्थ : हे श्रेष्ठ पुरुषों में श्रेष्ठ! मैं आपकी शरण को धारण करता हूँ क्योंकि मुझे पाप के स्थानभूत सघन कर्मों का विनाश करना है और पुण्य के स्थानभूत अनेक प्रकार के कर्मों की वृद्धि करना है। इस संसार का विनाश करने वाले आपके चरण कमल मुझे प्रसन्न करें।

Meaning : O most eminent among eminent persons! I take your refuge because I have to annihilate the dense and thick **Karmas**, the adobe of sins and have to increase many kinds of **Karmas** which are instrumental and abode of virtues. Your lotus feet capable of destroying this world may bestow pleasure on me.

सद्दृष्टिबोधचरणावरणैकभूषा-
सद्वीर्यवासिततपोधरणैकवेषम्।

यस्यांगदेवनिलयस्य विभूषणं स्यात्
तस्य प्रवन्द्यचरणं परिणौमि भक्त्या॥ 3॥

अन्वयार्थ : **(यस्य)** जिनके **(अंगदेवनिलयस्य)** चैतन्य आत्मा का **(विभूषणं)** अलंकार **(सद्दृष्टि-बोध-चरणावरणैकभूषा-सद्वीर्यवासित-तपोधरणैकवेषम्)** सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का आवरण ही एक आभूषण तथा अच्छी शक्ति के साथ तप धारण करना ही एक वेष (पहनावा) **(स्यात्)** हो **(तस्य)** उन आचार्य देव के **(प्रवन्द्यचरणं)** वन्दनीय चरणों को **(भक्त्या)** भक्ति से **(परिणौमि)** मैं नमस्कार करता हूँ।

अर्थ : सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र का आवरण ही जिनका भेष है। समीचीन शक्ति से युक्त तप को धारण करना ही जिनका प्रमुख गहना है। जिस चैतन्य निलय के ये ही आभूषण हैं। उनके वन्दनीय चरणों को मैं भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

Meaning : Whose dress/appearance is precisely, the veil of right faith, right knowledge and right conduct; whose chief ornament is assuming the austerity with appropriate/right strength, these very are the ornaments of which abode of consciousness, I pay my obeisance to his adorable feet with devotion.

यस्मान्भवद्विशददेहमनोविचेष्टास्
स्याद्वादगुम्फितवचाः प्रमुदे विशुद्धाः।
तस्मात् सदैव सुजनैः परिवेष्टमानश्
चन्द्रो यथा वियति राजति तारकाभिः॥ 4॥

अन्वयार्थ : **(यस्मात्)** चूँकि **(भवद्-विशद-देह-मनोविचेष्टाः)** आपके सुन्दर शरीर और मन की चेष्टाएँ **(विशुद्धाः)** विशुद्ध हैं **(स्याद्वाद-गुम्फितवचाः)** और आपके वचन स्याद्वाद से युक्त हैं। **(तस्मात्)** इसलिए **(सदैव)** हमेशा आप **(सुजनैः)** श्रेष्ठ व्यक्तियों से **(परिवेष्टमानः)** घिरे रहते हुए **(प्रमुदे)** उनके आनंद के लिए हैं **(यथा)** जैसे **(चन्द्रः)** चन्द्रमा

(वियति) आकाश में **(तारकाभिः)** ताराओं से घिरा हुआ **(प्रमुदे)** सबके आनंद के लिए **(राजति)** सुशोभित होता है।

अर्थ : चूँकि आपके सुन्दर शरीर और मन की चेष्टाएँ विशुद्ध हैं तथा वचन स्याद्वाद से गुंथे रहते हैं इसीलिए आप सदैव श्रेष्ठजनों से घिरे हुए सुशोभित हैं, जिस प्रकार आकाश में अनेक ताराओं के साथ घिरा हुआ चन्द्र सुशोभित होता है।

Meaning : Because your bodily and mental activities are pure and your words are interweaven with many-fold predictions (**Syadvada**) hence, you always remain graceful surrounded by excellent people just like the moon looks graceful surrounded by many stars.

संसारसिन्धुमतुलं तरितुं तु कोऽलं
यस्मिन् विमूढमनसा विगतोऽतिकालः।
विद्यापते! गुरुगुरो! कृपया महाध्वा
प्राप्तो मयाऽपि भवतो भवतः सुरक्षा॥ 5॥

अन्वयार्थ : **(अतुलं)** अपार **(संसारसिन्धुं)** संसार सागर को **(तरितुं)** तैरने के लिए **(तु कः अलं)** कौन समर्थ हो? **(यस्मिन्)** जिस संसार सागर में **(विमूढमनसा)** मूढ़बुद्धि से **(अतिकालः)** अत्यधिक काल **(विगतः)** बीत गया है। **(गुरुगुरो!)** हे गुरुओं के गुरु **(विद्यापते!)** आचार्य विद्यासागरजी **(भवतः)** आपकी **(कृपया)** कृपा से **(मया)** मैंने **(अपि)** भी **(महाध्वा)** उत्कृष्ट मार्ग **(प्राप्तः)** प्राप्त किया है **(भवतः)** इस संसार से **(सुरक्ष)** आप मेरी रक्षा करें।

अर्थ : यह संसार सागर अपार है, इसे तैरने के लिए कौन समर्थ हो सकता है। इस संसार सागर में मेरा मूढ़बुद्धि से बहुत काल बीता है। हे अनेक विद्याओं के स्वामिन्! हे गुरुओं के गुरु! आपकी कृपा से मुझे भी अब इस संसार सागर से पार करने का महान् रास्ता मिल गया है। इसलिए इस संसार से आप मुझे बचायें।

Meaning : This ocean of world is shoreless, who is capable in crossing it. Plenty of my time has elapsed in this world by my stupefied wisdom. O master of several learnings! O Guru of Gurus! Now I have also found the excellent way for crossing this ocean of world. Therefore, kindly save me from this world.

नाशीर्वचः कमपि पश्यति नापि दृग्भ्या-
मात्यन्तिकं विरतभावमुखं विधत्ते।
तस्मादहं भगवतोप्यनुभामि शस्यो
नम्रे जने वितनुते रतिमेष सूरिः॥ 6॥

अन्वयार्थ : भगवान् **(कमपि)** किसी को भी **(नाशीर्वचः)** आशीष वचन नहीं देते **(नापि)** और ना ही **(दृग्भ्यां)** अपनी आँखों से **(पश्यति)** किसी को देखते हैं तथा **(आत्यन्तिकं)** अत्यधिक **(विरतभावमुखं)** विरक्त भाव वाला मुख **(विधत्ते)** धारण करते हैं **(तस्मात्)** इसलिए **(भगवतः अपि)** भगवान् से भी **(शस्यः)** प्रशंसनीय **(अहं अनुभामि)** मैं आपको मानता हूँ **(एष सूरिः)** यह आचार्य कम से कम **(नम्रे जने)** नम्र हुए व्यक्ति में तो **(रतिं)** राग **(वितनुते)** उत्पन्न करते हैं।

अर्थ : भगवान् न तो किसी को आशीर्वचन कहते हैं, न ही आँखों से देखते हैं और अत्यन्त उदासीन भावरूप मुख को धारण करते हैं, इसलिए मैं भगवान् से भी ज्यादा प्रशंसनीय इन आचार्य देव को समझता हूँ क्योंकि ये आचार्य देव अपने नम्रजनों में रति को बढ़ाते हैं।

Meaning : The Lord **Jinendra** neither tells words of blessing to any one nor casts a glance at any one with eyes and assume face extremely emotionless showing indifference, hence, I regard this **Acharya Deva** more praiseworthy than the Lord **Jinendra** because this **Acharya Deva** increases affection of his humble devotees.

येनैध्यते विनयमूलमुदस्य दोषं
ज्ञानार्कभूरिकिरणैर्भुवि पुण्यसस्यम्।

क्षिप्तं क्षणं प्रतिनवं जगतां हिताय

किं चिन्त्यते नु महते सुगुरोर्हिताय ॥ 7 ॥

अन्वयार्थ : (**येन**) जिन्होंने (**दोषं**) दोष को (**उदस्य**) उखाड़कर (**विनयमूलं**) विनय जड़ को (**एध्यते**) बढ़ाया है (**ज्ञानार्कभूरिकिरणैः**) ज्ञान रूपी सूर्य की अनेक किरणों से (**भुवि**) पृथ्वी पर जिन्होंने (**पुण्यसस्यं**) पुण्य की फसल को बढ़ाया है (**प्रतिनवं क्षणं**) जिनका प्रत्येक नया क्षण (**जगतां**) संसार के (**हिताय**) हित के लिए (**क्षिप्तं**) निकला है ऐसे (**महते**) महान् (**सुगुरोः**) श्रेष्ठ गुरु के (**हिताय**) हित के लिए (**किं नु**) क्या (**चिन्त्यते**) सोचा जाए।

अर्थ : जो दोषों को उखाड़कर विनय रूपी जड़ को बढ़ाते हैं और ज्ञान रूपी सूर्य की बहुत-सी किरणों से पुण्य रूपी फसल को जो बढ़ाते हैं। जिनका प्रत्येक नया समय जगत् के हित के लिए गुजरता है, ऐसे श्रेष्ठ गुरु के हित के लिए क्या चिन्ता करना? अर्थात् ऐसे गुरु का अपना हित तो स्वयं हो रहा है उसमें दूसरों को सोचने की जरूरत नहीं है।

Meaning : Who uprooting the faults, increases the root of modesty and who aggrandizes the crops of virtue through plentiful rays of the Sun of knowledge; each of whose ensuing moment is passed for the beneficence of the world, what to care for the well-being of such an excellent Guru i.e. beneficence of such a Guru is happening on its own, others need not think about it.

यावत्प्रतिष्ठत इला गगनाम्बुराशि-

र्मार्तण्डकारितदिवारजनीविभागः।

यावत्प्रवन्द्यजिनचैत्यवृषञ्च भूमौ

तावत्तनोतु सुगुरोर्गुणकीर्तिगानम् ॥ 8 ॥

अन्वयार्थ : (**यावत्**) जब तक (**इला गगनाम्बुराशिः**) पृथ्वी, आकाश का परिमाण तथा समुद्र (**मार्तण्ड-कारित-दिवा-रजनी-विभागः**)

सूर्य के द्वारा किया हुए दिन-रात का विभाजन (**प्रतिष्ठते**) हो रहा है (**च यावत्**) और जब तक (**भूमौ**) पृथ्वी पर (**प्रवन्द्य-जिनचैत्य-वृषम्**) वन्दनीय जिनचैत्य तथा जिनधर्म हैं (**तावत्**) तब तक (**सुगुरोः**) श्रेष्ठ गुरु के (**गुण-कीर्ति-गानम्**) गुणों की कीर्ति का गान (**तनोतु**) फैलता रहे।

अर्थ : जब तक यह धरती है, आकाश है, समुद्र की राशि है और सूर्य के द्वारा किया गया दिन-रात का विभाग है तथा जब तक वन्दनीय जिनचैत्य और जिनधर्म भूमि पर है तब तक मेरे श्रेष्ठ गुरु के गुणों की कीर्ति का गायन फैलता रहे।

Meaning : Till there exist this earth, the sky, a great number of seas and division of day and night done by the sun and till there exist adorable Jina temples and Jin Dharma on the earth till then the music of the fame of the virtues/merits of my Guru may spread.

मन्दाक्रान्ता छन्द

विद्यावार्धेः शुभकरकृपाबाणविद्धं शिरो मे

बोधेर्लाभो विबुधचरितं चास्तु तुल्यात्मभावः।

कामारातीभमददलने साहसं पापताति -

दूरे प्रास्तां हृदयसरसीष्टं चिरं वर्धतां वा ॥ 9 ॥

अन्वयार्थ : (**मे शिरः**) मेरा मस्तक (**विद्यावार्धेः**) विद्यासागर आचार्य के (**शुभ-कर-कृपा-बाण-विद्धं**) शुभ हाथों की कृपा रूपी बाणों से विद्ध रहे (**बोधेः**) बोधि का (**लाभः**) लाभ हो (**विबुधचरितं**) गणधरों का चरित्र (**अस्तु**) मेरे लिए हो और (**तुल्यात्मभावः**) सभी में समान आत्म भाव हो। (**कामारातीभ-मद-दलने**) काम शत्रु रूपी हाथी के मद का नाश करने में (**साहसं**) साहस हो (**पाप-तातिः**) पापों का समूह (**दूरे प्रास्तां**) दूर रहे (**वा**) तथा (**हृदयसरसि**) हृदय सरोवर में (**इष्टं**) अभीष्ट की (**चिरं**) चिरकाल तक (**वर्धतां**) वृद्धि हो।

अर्थ : आचार्य श्री विद्यासागरजी के शुभ हाथों की कृपा रूपी बाणों

से मेरा शीश हमेशा विद्ध रहे। मुझे सम्यग्ज्ञान का लाभ हो, मुझे विशिष्टज्ञानियों का चरित्र प्राप्त हो, सभी में मेरा समान भाव रहे, काम रूपी शत्रु हाथियों का मद नाश करने का मुझमें साहस आये, पाप का समूह मुझसे दूर ही रहे और मेरे हृदय रूपी सरोवर में चिरकाल तक इष्ट की वृद्धि होवे।

Meaning : My head may always remain pierced with the arrows of kindness of the auspicious hands of **Acharya Shri Vidyasagar ji**. I may be benefited by the right knowledge. I may have the conduct of distinctive learneds (in spiritual subjects); I may have equanimity for all; I may get the courage to annihilate the rut of enemy elephants of lust, the heap of sins may, precisely, remain aloof from me and everlasting increase of the cherished objects may occur in the lake of my heart.

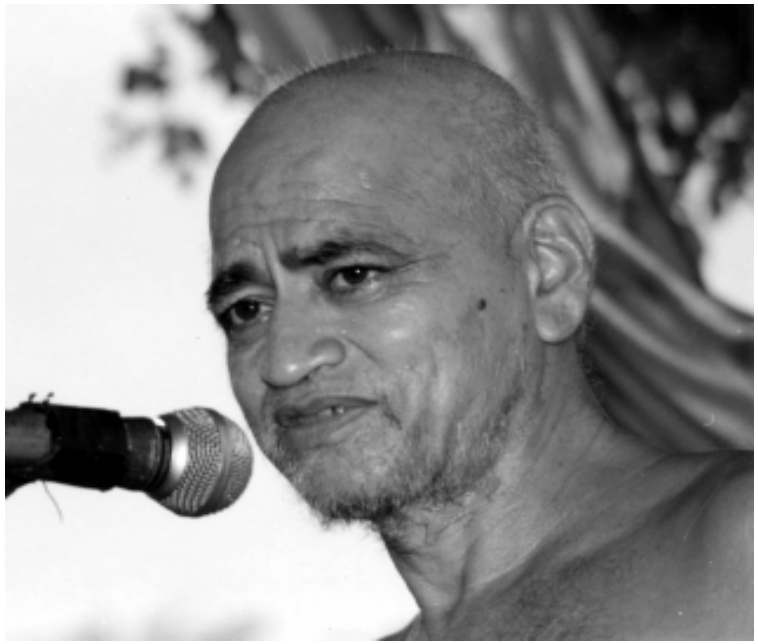

'मौनं सर्वार्थसाधनम्' यह प्राचीन उक्ति है। मौन से आध्यात्मिक साधना को बल मिलता है। अहिंसा महाव्रत की प्रथम भावना वचन गुप्ति अर्थात् मौन से ही प्रारम्भ होती है। वचनों से आत्म शक्ति का अपव्यय होता है। शुद्धोपयोग में आत्मानुभव के लिए अंतर बाह्य जल्प से मुक्त होना आवश्यक है।

लिखा भी है।

श्रमण वही जो श्रम करे, मुनि जो मन से मौन।
यति पाले गुण यत्न से, मात्र लिंग से कौन?॥

Silence

"***Maunam sarvarthasadhanam***" is an ancient saying i.e. all purposes are accomplished by keeping mum. Spiritual accomplishment is empowered by keeping mum The first observance (***Bhavna***) of the non-violence great vow begins with the control of speech (***Vachan Gupti***) i.e. silence. Our own strength of soul is unreasonably wasted by speech. It is essential to be free from interior and outer meaningless talks/prattle. It is also written -

Shraman is that who labours, the Muni who keeps mum,
The ***Yati*** follows virtue with effort with mere gender not the minimum.

मौनाष्टकम् (उपजाति छन्द)

Maunastkam (Upjati metre)

ब्रुवन्ति ये ते मुनयो न धीरा, तिष्ठन्ति मौने सुधियोऽतिवीराः।
विद्यागुरोरार्षवचः किलैत, दस्तीति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 1॥

अन्वयार्थ : (**ये मुनयः**) जो मुनि (**ब्रुवन्ति**) बोलते हैं (**ते**) वह (**धीराः**) धैर्यवान (**न**) नहीं है (**मौने**) जो मौन में (**तिष्ठन्ति**) रहते हैं वह (**सुधियः**) उत्कृष्ट बुद्धि वाले (**अतिवीराः**) वीर पुरुष होते हैं। (**एतत् आर्ष वचः**) यह आर्ष वचन (**किल**) निश्चित ही (**विद्यागुरोः**) आचार्य गुरु विद्यासागरजी के हैं (**इति**) इस प्रकार (**परमार्थ मित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं**) मौन (**अस्ति**) है।

अर्थ : जो मुनि बोलते हैं वे धीर नहीं हैं और जो बुद्धिमान मौन रहते हैं वे अतिवीर हैं। यह आर्षवचन आचार्य श्री विद्यासागर गुरु के हैं। इसलिए मौन ही परमार्थ का मित्र है।

Meaning : Ascetics who speak are not sober and who wise keep mum are extremely brave. These authentic words based on scripture are of **Acharya Vidyasagar Ji**, Hence, the silence is precisely the friend of highest truth/reality.

बलं कियत्तन्मनसीति मानं, तथाप्यनुग्राहकशक्तिशापम्।
विज्ञायते मौनमनोमुनीनां, ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 2॥

अन्वयार्थ : (**तन्मनसि**) उनके मन में (**बलं कियत्**) कितना बल है (**इति**) इस प्रकार का मापदण्ड (**तथा**) उसी प्रकार (**अनुग्राहक-शक्तिशापं**) उपकार की शक्ति और शाप (**अपि**) भी (**मौनमनोमुनीनां**) मौन मन वाले मुनियों का (**विज्ञायते**) ही जाना जाता है। (**ततः**) इसलिए (**परमार्थ मित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं**) मौन (**अस्ति**) है।

अर्थ : मन में बल कितना है इसका माप तथा अनुग्रह और शाप की शक्ति भी मौन मन वाले मुनियों में ही जानी जाती है। इसलिए मौन ही परमार्थ का मित्र है।

Meaning : How much strength is there in the mind, its measure and power to grace or curse is, precisely found in the ascetics whose mind adheres to non-speaking. Hence, the silence is, precisely the friend of highest truth.

मौनाभिसन्ध्याश्रितमानसानां नो राग-विद्वेषमथापि तेषाम्।
क्रोधो न मानो न मदो विलोभस्ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥3॥

अन्वयार्थ : (**मौनाभिसन्ध्याश्रित-मानसानां**) मौन संकल्प के आश्रित मन वालों को (**रागविद्वेषं**) राग और द्वेष (**नो**) नहीं होते हैं (**अथ**) और (**तेषां**) उनको (**क्रोधः**) क्रोध (**न**) नहीं होता (**मानः न**) मान नहीं होता (**मदःविलोभः अपि**) और मद, लोभ भी नहीं होता है (**ततः**) इसलिए (**परमार्थमित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं अस्ति**) मौन है।

अर्थ : मौन संकल्प के आश्रित मानस वाले उन मुनियों के राग, विद्वेष नहीं होता है और क्रोध, मान, मद तथा लोभ भी नहीं होता है इसलिए परमार्थ का मित्र मौन ही है।

Meaning : The mind of the ascetics resorting to silence do not have attachment and aversion and also there is no anger, pride, vanity and greed hence, the silence is, precisely the friend of highest truth.

मौनेन वै वाग्बलिनो लभन्ते, चान्तर्मुहूर्ते परिवर्त्तनं ते।
श्रुतस्य पूर्णस्य सदा गणेशास्ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 4॥

अन्वयार्थ : (**गणेशाः**) गणधर परमेष्ठी (**पूर्णस्य श्रुतस्य**) पूर्णश्रुत का (**सदा**) सदैव (**अन्तर्मुहूर्ते**) अन्तर्मुहूर्त में (**परिवर्तनं**) पाठ (**लभन्ते**) कर लेते हैं (**वै**) निश्चित ही (**मौनेन**) मौन के कारण (**ते**) वह (**वाग्बलिनः**) वचनबली होते हैं (**ततः**) इसलिए (**परमार्थमित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं अस्ति**) मौन है।

अर्थ : निश्चित ही गणधर परमेष्ठी वचन बली होते हैं, जिससे वे अन्तर्मुहूर्त में सम्पूर्ण द्वादशाङ्ग का पाठ कर लेते हैं। मौन के कारण ही उन्हें यह लाभ होता है, इसलिए परमार्थ का मित्र मौन है।

Meaning : Certainly the **Gandhar Parmesthi** are bold at speech through which they recite the complete twelve parts of scriptural knowledge within an **Antar Muhurta** (48 minutes). Precisely, due to silence they gain this benefit. Hence silence is, precisely the friend of the highest truth.

यद्दृश्यते रूपमिहापि किञ्चिज्, जानाति तन्नेति ममात्मरूपम्।
यज्ज्ञायकोऽहं सुविचार्य नूनं, ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 5॥

अन्वयार्थ : (**इह**) यहाँ (**यत् किञ्चित्**) जो कुछ (**अपि**) भी (**रूपं**) रूप (**दृश्यते**) देखा जाता है (**तत्**) वह (**मम**) मेरे (**आत्मरूपं**) आत्म रूप को (**न जानाति**) नहीं जानता है (**इति**) इस प्रकार (**नूनं**) निश्चय से (**सुविचार्य**) अच्छी तरह विचार करके (**यत्**) चूँकि (**अहं ज्ञायकः**) मैं ज्ञायक हूँ (**ततः**) इसलिए (**परमार्थमित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं अस्ति**) मौन है।

अर्थ : यहाँ मुझे जो कुछ भी रूप दिखाई देता है वह तो मेरे आत्म स्वरूप को जानता नहीं है। ऐसा अच्छी तरह विचार करके मैं ज्ञायक होता हूँ, इसलिए परमार्थ का मित्र मौन है।

Meaning : Whatever form is seen by me here, after all it does not know self-form of my soul. In this way thinking well, I become only a knower, hence, precisely the silence is the friend of highest truth.

प्रगृह्य दीक्षां समुपैति मौनं, तीर्थंकरोऽपीति किमन्यवृत्तैः।
येनैव कैवल्यविभूतिमेति, ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 6॥

अन्वयार्थ : (**तीर्थंकरः अपि**) तीर्थंकर भी (**दीक्षा**) दीक्षा को (**प्रगृह्य**) ग्रहण करके (**मौनं**) मौन को (**समुपैति**) प्राप्त हो जाते है (**इति**) इस प्रकार (**अन्यवृत्तैः**) अन्य चरित्र से (**किम्**) क्या हो? (**येन एव**) जिस मौन से ही (**कैवल्य विभूतिं**) केवलज्ञान के वैभव को (**एति**) वह पाते हैं (**ततः**) इसलिए (**परमार्थमित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं अस्ति**) मौन है।

अर्थ : जब तीर्थंकर देव भी दीक्षा ग्रहण करके मौन को प्राप्त हो जाते हैं तो फिर अन्य चारित्र से क्या? इस मौन से ही कैवल्य की विभूति को वे प्राप्त

होते हैं, इसलिए परमार्थ का मित्र मौन ही है।

Meaning : When **Tirthankar Deva** also keeps mum after assuming the initiation then what is there by other conduct? They attain the grandeur/glory of omniscience by this silence alone, hence, precisely the silence is the friend of highest truth.

ऋद्धिश्च मौनेन वचः प्रसिद्धि, र्मुनौ व्रतं वास्ति सुखस्य वृद्धिः।
प्रवादनं व्याकुलताफलं यत्, ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 7॥

अन्वयार्थ : (**मौनेन**) मौन से ही (**ऋद्धिः**) ऋद्धि होती है (**वचः प्रसिद्धिः**) वचन सिद्धि होती है (**च**) और (**मुनौ**) मुनि में (**व्रतं**) व्रत (**वा**) तथा (**सुखस्य**) सुख की (**वृद्धिः**) वृद्धि (**अस्ति**) मौन से होती है (**यत्**) चूँकि (**प्रवादनं**) बोलना तो (**व्याकुलताफलं**) आकुलता का फल है (**ततः**) इसलिए (**परमार्थमित्रं**) परमार्थ का मित्र (**मौनं अस्ति**) मौन है।

अर्थ : मौन से ही ऋद्धि होती है, मौन से ही वचनों की प्रसिद्धि अर्थात् वचन सिद्धि होती है, मौन से ही मुनि में व्रत होता है और सुख की वृद्धि मौन से होती है। चूँकि बोलना तो विशेष आकुलता का फल है इसलिए परमार्थ का मित्र मौन है।

Meaning : The miraculous power is attained precisely by the silence, the celebrity of words i.e. accomplishment of the speech is gained by the silence, the vow in Muni is observed by the silence and the pleasure is augmented by the silence. Since speaking is indeed, the result of specific agitation/uneasiness, hence, precisely the silence is the friend of highest truth.

मौनैकतानाः समतैकशाणा, निरीहनिर्भीकतया चरन्ति।
ये हि प्रणम्या भुवि तेऽभिनन्द्यास्ततोऽस्ति मौनं परमार्थमित्रम्॥ 8॥

अन्वयार्थ : (**ये**) जो (**मौनैकतानाः**) मौन का विस्तार करते हैं (**समतैकशाणाः**) समता की एक कसौटी वाले हैं (**निरीहनिर्भीकतया**) और निरीह तथा निर्भीक होकर (**भुवि**) पृथ्वी पर (**चरन्ति**) विचरण करते हैं

(ते हि) वह ही **(प्रणम्याः)** प्रणाम करने योग्य हैं **(अभिनन्द्याः)** और अभिनन्दन के योग्य हैं **(ततः)** इसलिए **(परमार्थमित्रं)** परमार्थ का मित्र **(मौनं अस्ति)** मौन है।

अर्थ : जो मौन का एकमात्र विस्तार करने वाले और समता की एक कसौटी वाले होते हुए निरीह, निर्भय होकर विचरण करते हैं, वे ही इस पृथ्वी पर प्रणाम और अभिनन्दन के योग्य हैं, इसलिए मौन ही परमार्थ का मित्र है।

Meaning : Who being expander-solely of silence and possess criteria of equanimity, roam fearlessly being harmless, they very are the worthy of paying obeisance and applause; hence, the silence is the friend of highest truth.

कार्ये चावश्यके पापे, भो! भोगे भोजने भृशम्।
मौनं पाल्यं महद्भिर्हि, मान्यं संयमबृंहणम्॥ 9॥

अन्वयार्थ : (भोः) अरे भाई! **(आवश्यके कार्ये)** आवश्यक कार्य में **(पापे)** पाप में **(भोगे)** भोग में **(भोजने)** भोजन में **(मौनं)** मौन **(भृशं)** अच्छी तरह **(पाल्यं)** पालना चाहिए। **(संयमबृंहणं)** संयम को बढ़ाने वाला मौन **(हि)** निश्चित ही **(महद्भिः)** महान् व्यक्तियों से **(मान्यं)** मान्य है।

अर्थ : अरे भाई! आवश्यक कार्यों में अर्थात् षट् आवश्यकों के पालन में, पाप कार्य में, भोग में, भोजन में अच्छी तरह मौन का पालन करना चाहिए। संयम को बढ़ाने वाला यह मौन महान् व्यक्तियों के द्वारा सदा मान्य है।

Meaning : O brother! We should observe silence well while performing six essentials, i.e. while engaged in sins, in sexual enjoyments, in taking meals etc. This silence which increases the restraint, is always recognized by great persons.

वस्तु के दो पहलू/ धर्म हैं-नित्य और अनित्य। हे आत्मन् ! समता की आराधना करने के लिए पाप-पुण्य के फलों में विषाद-हर्ष से बचने के लिए वस्तु के नित्य और अनित्य धर्मों का नित्य चिन्तन करो।

Enlightenment of self

The thing/object has two aspects/characteristics - eternal and transient. O soul! always ponder on the eternal and transient characteristics of the objects for saving own-self from sorrows and joys in the fruits of sin and virtue for adoring the equanimity.

निजबोधाष्टकम् (उपजाति छन्द)

Nijbodhastkam (Upjati metre)

प्रशान्तभावाभ्युदयेन चित्ते, शंकाम! चारित्रमिदं दधच्च।

निरीहवृत्त्यर्पितभावनातः, स्वर्गापवर्गं सुलभं लभस्व॥ 1॥

अन्वयार्थ : **(शंकाम!)** शान्ति की इच्छा करने वाले आत्मन्! **(प्रशान्त-भावाभ्युदयेन)** प्रशान्त भावों के वैभव से **(चित्ते)** अपने मन में **(इदं चारित्रं)** इस चारित्र को **(दधत्)** धारण करते हुए **(च)** और **(निरीहवृत्त्यर्पित-भावनातः)** निरीह वृत्ति की मुख्य भावना से **(सुलभं)** आसानी से प्राप्य **(स्वर्गापवर्गं)** स्वर्ग और मोक्ष को **(लभस्व)** तुम प्राप्त करो।

अर्थ : शान्ति की इच्छा करने वाले आत्मन्! प्रशांत भावों के अभ्युदय से अपने चित्त में इस चारित्र को धारण करते हुए निरीह वृत्ति की मुख्यता की भावना से स्वर्ग और अपवर्ग को सुलभता से प्राप्त कर लो।

Meaning : O soul! desirous of peace! From the rise of tranquil thoughts assuming this conduct in ownself's heart, attain the heaven and salvation easily available by the preeminent feeling of innocent/harmless tendency.

यावन्न चित्तं खलु मारितं तु, मतञ्च वित्तं न निजात्मरूपम्।

न चिंतितं चारुचिदात्मकञ्च, शिवं न तावन् मुनिनाशु यातम्॥ 2॥

अन्वयार्थ : **(यावत्)** जब तक **(चित्तं)** चित्त को **(खलु)** निश्चत से **(तु मारितं न)** तो मारा नहीं गया **(च)** और **(निजात्मरूपं)** अपने आत्म स्वरूप को **(वित्तं)** धन **(न मतं)** नहीं माना **(च)** और **(चारुचिदात्मकं)** मनोहर चैतन्य आत्मा धन का **(न चिंतितं)** चिन्तन नहीं किया गया **(तावत्)** तब तक **(मुनिना)** मुनि **(शिवं)** कल्याण को **(न यातं)** नहीं प्राप्त होता

है।

अर्थ : जब तक मुनि अपने चित्त का दमन नहीं करता है, अपने आत्म स्वरूप को ही धन नहीं मानता है और श्रेष्ठ चैतन्य आत्मा धन का चिंतन नहीं करता है तब तक शीघ्र ही शिव अर्थात् मोक्ष को प्राप्त नहीं होता है।

Meaning : Till the ascetic does not suppress his mind, does not regard his self-soul precisely as his wealth and does not meditate his conscious soul till then he does not attain the salvation i.e. final emanicipation soon.

मानापमाने सदने रणे वा, कालेऽप्यकालेऽयसि काञ्चने वा।

पङ्के प्रियाङ्के गगने गिरीशे, यतिर्विधत्ते तुल्यात्मवृत्तिम्॥ 3॥

अन्वयार्थ : **(मानापमाने)** मान-अपमान में **(सदने रणे वा)** अथवा गृह और युद्धस्थल में **(काले अकाले अपि)** काल में, अकाल में **(वा)** अथवा **(अयसि काञ्चने)** लोहे और स्वर्ण में **(पङ्के)** कीचड़ में **(प्रियाङ्के)** प्रिया की गोद में **(गगने)** आकाश में **(गिरीशे)** पर्वत पर **(यतिः)** यति **(तुल्यात्मवृत्तिं)** समान आत्मवृत्ति को **(विधत्ते)** धारण करता है।

अर्थ : सम्मान और अपमान में, महल या युद्ध मैदान में, काल और अकाल में, कीचड़ में और प्रिया की गोद में, आकाश में और पर्वत में यति सदा समान वृत्ति को धारण करता है।

Meaning : The **Yati** i.e. ascetic always assumes the tendency of equanimity between honour and dishonour, between palace and battle field, between proper and improper time, between mud and the lap of beloved, between sky and mountain.

भोगाभिलाषानलदाहतप्तः, प्राप्नोति यांस्तैश्च तथाप्यतृप्तः।

दुष्त्याज्यभोगान् परिभंगुरांस्तान्, विना विचारं त्यज दूरतस्त्वम्॥ 4॥

अन्वयार्थ : **(भोगाभिलाषानलदाह-तप्तः)** भोगों की अभिलाषा रूपी अग्नि की दाह से तप्त हुआ प्राणी **(यान्)** जिन भोगों को **(प्राप्नोति)** प्राप्त करता है **(तैः)** उन भोगों से **(तथापि)** फिर भी वह **(अतृप्तः)** तृप्त

नहीं होता है। **(दुष्त्याज्यभोगान्)** बड़ी कठिनता से त्यागने योग्य इन भोगों को **(तान् परिभंगुरान्)** जो कि क्षणभंगुर हैं **(त्वम्)** हे आत्मन्! तुम **(विचारं विना)** विचार किए बिना **(दूरतः)** दूर से ही **(त्यज)** छोड़ दो।

अर्थ : भोगों की इच्छा रूपी अग्नि की दाह से तप्त होते हुए तुमने जिन विषयों को प्राप्त किया, उनसे तुम फिर भी अतृप्त रहे। भोगों को प्राप्त करके उनका छोड़ना कठिन है और वे भोग क्षणभंगुर हैं, इसलिए हे आत्मन्! तुम विचार किए बिना ही इन्हें दूर से ही छोड़ दो।

Meaning : Which sensual enjoyments you procured by getting heated from the inflammation of fire of desires of enjoyments, you still remained dissatisfied with them. It is difficult to abandon enjoyments if once you get them and these enjoyments are transitory. Hence, O soul! you renounce them without thinking (to get them) precisely, keeping them at a distance.

बन्धस्य भो ! भावकभाव्यभावो, ज्ञज्ञेयभावो हि शिवस्य हेतुः।
प्रकीर्तितः प्रत्यय एक एव, समासतः श्रीगुरुणा कृपातः॥ 5॥

अन्वयार्थ : (भोः) अरे आत्मन्! **(बन्धस्य)** बन्ध का **(हेतुः)** कारण **(भावक-भाव्य-भावः)** भावक-भाव्य भाव है तथा **(शिवस्य)** मोक्ष का हेतु **(हि)** निश्चय से **(ज्ञज्ञेय भावः)** ज्ञेय-ज्ञायक भाव है **(श्रीगुरुणा)** श्री गुरु ने **(कृपातः)** कृपा करके **(एकः एव)** एक यह ही **(प्रत्ययः)** हेतु **(समासतः)** संक्षेप से **(प्रकीर्तितः)** कहा है।

अर्थ : भो! आत्मन्! बन्ध का हेतु भाव्य-भावक भाव है और मोक्ष का हेतु ज्ञेय-ज्ञायक भाव है, यह एक ही प्रत्यय बन्ध और मोक्ष के विषय में श्री गुरु विद्यासागरजी ने कृपा करके संक्षेप से बता दिया है।

Meaning : O soul! the cause of bondage is the disposition of felt and feeler and the cause of the salvation is the volition of knowledge and the knower. This one single cause about bondage and salvation has been briefly stated by **Shri Guru Vidyasagar ji** being kind enough.

विशेषार्थ - भाव करने वाला आत्मा भावक कहलाता है और रागादि

भाव उत्पन्न करने योग्य आत्मा में लगे भावकर्म भाव्य हैं। पर पदार्थ के निमित्त से आत्मा में रागद्वेष आदि भाव होते हैं यही भाव्य भावक संबंध है, यही संसार का कारण है। इसके विपरीत केवल पर पदार्थ को आत्मा 'ज्ञायक' स्वभाव से जाने और 'ज्ञेय' जानने योग्य पदार्थ आत्मा के मात्र ज्ञान का विषय बनें तो यह ज्ञेय-ज्ञायक संबंध होता है जो कि मोक्ष का कारण है।

विध्यात्ममध्ये विविधं विदित्वा, प्रज्ञाश्रितेनात्मचिदं विदित्वा।
निजानुभूत्यात्मकचित्तवृत्त्या,तां छिन्धि शीघ्रं भवसन्ततिर्या॥ 6॥

अन्वयार्थ : (विध्यात्म-मध्ये) कर्म और आत्मा के बीच **(विविधं)** भिन्न प्रकार **(विदित्वा)** जानकर **(प्रज्ञाश्रितेन)** प्रज्ञा के बल से **(आत्मचिदं वित्)** चैतन्य आत्म धन को **(इत्वा)** प्राप्त करके **(निजानुभूत्यात्मक-चित्तवृत्त्या)** स्वानुभूति रूप चित्त वृत्ति से **(या भवसन्ततिः)** जो संसार की परम्परा है **(तां)** उसको **(शीघ्रं)** शीघ्र ही **(छिन्धि)** हे आत्मन्! छेद दो।

अर्थ : कर्म और आत्मा के बीच अनेक प्रकार की भिन्नता को जानकर प्रज्ञा के बल से चैतन्य आत्म धन को प्राप्त करके अपनी आत्मा की अनुभूति स्वरूप चित्तवृत्ति से तुम उसे शीघ्र ही छेद डालो जो भव की सन्तति है अर्थात् संसार की परम्परा है।

Meaning : Knowing the manifold difference between the **Karma** and the soul, pierce it soon which is continued succession of births i.e. the tradition of world, by the trend of thoughts of the realization of self-soul on the strength of intellect attaining the conscious soul's wealth.

सञ्चिन्त्य नित्यत्वमयं स्वभावं, त्वं भव्य! सुस्थो भव मुञ्च दैन्यम्।
द्रव्यस्य जातिर्न तथाऽस्ति हानिः,पर्यायमेव व्ययते समेति॥ 7॥

अन्वयार्थ : (भव्य!) हे भव्य! **(त्वं)** तुम **(नित्यत्वमयं स्वभावं)** नित्यत्वमय स्वभाव को **(सञ्चिन्त्य)** सोचकर **(दैन्यं)** दीनता **(मुञ्च)** छोड़ दो **(सुस्थःभव)** तथा अपने में स्थित होओ। क्योंकि **(द्रव्यस्य)** द्रव्य की **(न जातिः)** उत्पत्ति नहीं होती है **(तथा)** उसी प्रकार **(हानिः न अस्ति)** नाश भी नहीं है **(पर्यायं एव)** वह द्रव्य पर्याय को ही **(व्ययते)**

विनष्ट करता है **(समेति)** और प्राप्त करता है।

अर्थ : प्रत्येक द्रव्य के नित्यात्मक स्वभाव का चिन्तन करके हे भव्य! तुम दीनता छोड़कर अपने में स्थित होओ क्योंकि द्रव्य न तो कभी उत्पन्न हुआ है और न उसकी कभी हानि होगी, पर्याय की उत्पत्ति होती है और द्रव्य पर्याय को ही छोड़ देता है।

Meaning : Pondering over eternal nature of each & every substance, O **Bhavya** (accomplishable)! be stable in your self abandoning the humility because the substance has neither been generated nor will ever be destroyed. The mode generates and the substance, precisely abandones the mode.

अनित्यचक्षुः प्रविधार्य नित्यं, वृथाकुलत्वं कुरु माभिमानम्।

सर्वे पदार्थाः परिणामयुक्ता, विनश्वराश्च प्रतिभासितेति॥ ४॥

अन्वयार्थ : (सर्वे पदार्थाः) सभी पदार्थ **(परिणामयुक्ताः)** परिणमन स्वभाव से सहित हैं **(च)** और **(विनश्वराः)** नश्वर हैं **(इति प्रतिभासिता)** इस प्रकार का प्रतिभास होता है इसलिए **(अनित्यचक्षुः)** अनित्य रूप दृष्टि को **(प्रविधार्य)** विचार करके **(नित्यं)** हमेशा **(वृथा)** व्यर्थ में **(आकुलत्वं)** आकुलता तथा **(अभिमानं)** अभिमान को **(मा कुरु)** मत करो।

अर्थ : सभी पदार्थ परिणमनशील हैं और विनश्वर हैं इस प्रकार प्रतिभासित होता है। इसलिए हमेशा अनित्य भावना की आँख को अवधारित करके व्यर्थ में आकुलता और अभिमान मत करो।

Meaning : It appears that all matters are transformable and are perishable. Hence, always ascertaining the eye of transient reflection do not indulge in confusion and pride.

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज की चेतन एवं अचेतन कृतियों का इस प्रशस्ति पत्र में उल्लेख किया है, जो कि शोधार्थियों के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

The animate & inanimate creation of ***Acharya Jnansagar ji*** has been described in this encomium ***(Prashasti Patram)***, which is of paramount importance for the research scholars.

आचार्य श्रीज्ञानसागरप्रशस्तिपत्रम्

Acharya Jnansagar Prashasti-Patram (Encomium)

उपजाति

श्रीमूलसंघे स्वसमाधिमुख्ये, श्री कुन्दकुन्दान्वय उत्तमेऽस्मिन्।
श्रीशान्तिसिन्धुर्भुवि भव्यबन्धु, र्निरुद्धभट्टारकराजपान्थः॥ 1॥

अर्थ : जिसमें अपनी आत्मा की समाधि मुख्य है ऐसे श्रेष्ठ मूलसंघ श्री कुन्दकुन्द आचार्य की परम्परा में भव्य जीवों के बन्धु आचार्य श्री शान्तिसागर जी इस धरातल पर हुए हैं, जिन्होंने भट्टारकों के राजमार्ग को रोक दिया है।

Meaning : In the tradition of an ancient and excellent group of **Digamber Jain Saints**, headed by **Acharya Kund-Kund** in which meditation of self-soul is pre-eminent, a brother/well-wisher of accomplishable souls (**Bhavya Jeeva**) **Acharya Shri Shantisagar ji** existed on this earth who put the break on the highway (significance) of **Bhattarakas**.

शार्दूलविक्रीडित

तत्पट्टेऽजनि वीरसागरसुधीः स्याद्वादरत्नाकरः
श्रीवीराधिपधर्मकेतुपवनः संसेव्यपादोत्पलः।
तत्पट्टेऽभवदागमार्थकुशलः सैद्धान्तिकस्तत्त्ववित्
श्रीमानाप्तपदद्वयस्य नितरां ध्याता शिवार्यो वरः॥ 2॥

अर्थ : उनके पट्ट पर श्री वीरसागर आचार्य हुए जो स्याद्वाद रत्नाकर थे, जो वीर भगवान् की धर्मध्वजा को फहराने के लिए वायु के समान थे और जिनके चरण कमल सभी से सेवा के योग्य थे। उनके पट्ट पर फिर आगम के अर्थ में निपुण, सैद्धांतिक तत्त्व को जानने वाले, श्रीमान् जिनेन्द्रदेव के चरण युगल को सदा ध्याने वाले श्रेष्ठ आचार्य श्री शिवसागरजी हुए हैं।

Meaning : **Shri Veersagarji Acharya** took his seat after him who was the ocean of the doctrine of manifold predictions (**Syadvad Ratnakar**), who was like the wind for hoisting the flag of religion of Lord **Mahaveera** and whose lotus feet were worthy to be served by all. After him his seat was inherited by an excellent **Acharya Shri Shivsagar ji** who was expert at the meaning of canon, a good theoretician of Jain doctrines and a constant meditator of lotus feet of Lord **Jinendra Deva**.

आर्या

तस्य प्रथमः शिष्यो ज्ञानसागरश्चागमनेत्रो दिव्यः।
निस्पृहनिरीहचेता यद्वार्ताहं कथयामीतः॥ 3॥

अर्थ : उनके प्रथम शिष्य आचार्य ज्ञानसागरजी हुए हैं, जो दिव्य, आगमचक्षु, निस्पृह और निरीह चित्त के धारक थे। उन्हीं की वार्ता यहाँ से मैं करता हूँ।

Meaning :- His first disciple was **Acharya Shri Jnansagar** who was divine by nature, expert at scriptural knowledge, was above all desires and a man possessing innocent/harmless heart. I discuss only about him from here onward.

चौपाई

देशे भारतवर्षे प्रान्ते, राजस्थाने सौख्ये शान्ते।
राणौलीग्रामे कौ रम्यः, पुत्रो जज्ञे सदोपगम्यः॥ 4॥

अर्थ : इस भारतवर्ष के सुख शान्ति युक्त राजस्थान प्रान्त में इस भूतल पर एक राणौली नाम का रमणीय ग्राम है, जहाँ सभी को प्रिय पुत्र उत्पन्न हुआ।

Meaning : There is a fascinating village named **Ranoli** on this earth in the pleasureful and peaceful **Rajasthan** province of this country Bharat, where that son, dear to all, was born.

वसन्ततिलका

श्रीमच्चतुर्भुजभुजारमणास्पदीया
सौभाग्यवद्घृतवरी तनयस्तदीया।

भूरामलाह्वयविपश्चिदपास्तकामो

योऽभूत् कवित् कविवरः समकालिदासः ॥ 5 ॥

प्रमाणिका

अधीत्य संस्कृतागम-प्रमाणतर्कदर्शनम्।

विलिख्य लेखवृत्तिगद्यपद्यभूरिभारतीम् ॥ 6 ॥

पदे च पाठके प्रतिष्ठितः स नैकसंघके।

तथापि वीरसागरात् समाप्य सप्तमं व्रतम् ॥ 7 ॥

अर्थ : श्री मान् श्रेष्ठी चतुर्भुज की भुजाओं में रमण के स्थान को प्राप्त सौभाग्यवती घृतवरी माँ का पुत्र भूरामल नाम का हुआ,जो विद्वान्, काम वासना से रहित, आत्मा का ज्ञाता, कवियों में श्रेष्ठ, कालिदास कवि के समान था। संस्कृत, आगम, प्रमाण, शास्त्र, तर्क शास्त्र, दर्शन शास्त्र को पढ़कर उन्होंने अनेक लेख, टीकाएँ और गद्य-पद्य में जिनवाणी को ब्रह्मचारी अवस्था में लिखकर अनेक आचार्य संघों में उपाध्याय के कार्य में प्रतिष्ठित रहे। फिर उन्होंने श्री वीरसागर आचार्य से सप्तम प्रतिमा के व्रत लिए।

Meaning : Having enjoyed dalliance in the arms of **Shriman Chaturbhuja** and the son born to Saubhagvati mother **Ghritvari** named **Bhooramal** who was learned, free from passion of lust, knower of the soul, excellent among poets and was like the poet **Kalidas**. Having studied Sanskrit, canon, scriptures of testimony (**Praman Shastra**), logic (science of reasoning), philosophy, he wrote/composed many articles, commentaries in the prose and poetry related to **Jinwani**, remained engaged with honour in the work of teaching in various **Acharya's** congregations. Afterwards he took the vow of the seventh stage of spiritual development from **Acharya Veersagar ji**.

अभूल्लघोर्मुनेरिव स्वतः ततः कलापकः।

महाव्रतेन भूषितः शिवार्यतः सतां मतः ॥ 8 ॥

अर्थ : पश्चात् वे स्वयं क्षुल्लक बन गए। श्री शिवसागरसूरि से वे महाव्रतों से भूषित हुए और सज्जनों के मान्य हुए।

Meaning : Afterwards he himself became **Ksullaka**. He was adorned with the great vows by **Acharya Shivsagar Ji Suri** i.e. initiation of Muni was granted to him and was recognized/honoured by virtuous persons.

अलंकृतश्च सूर्युपाधिना च वृत्तचक्रिणा।

पुनातु मे मनो यथा दिवाकरः क्षितेस्तमः ॥ 9 ॥

अर्थ : आचार्य और चारित्र चक्रवर्ती की उपाधि से वे अलंकृत हुए। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी के अंधकार को दूर कर पवित्र करता है, उसी प्रकार वे मेरे मन को पवित्र करें।

Meaning : He was adorned with the status of **Acharya** and **Charitra Chakarvarti** (emperor of right conduct). Just as the Sun removing the darkness of the earth makes it pure, similarly he may make my mind pure.

अनुष्टुप्

भाषायां संस्कृते तेन कृतमेकादश तथा।

काव्यं सल्लक्षणोपेतं विविधं विषयाभृतम् ॥ 10 ॥

अर्थ : उन्होंने संस्कृत भाषा में श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त अनेक प्रकार के विषयों से भरे ग्यारह काव्य लिखे हैं।

Meaning : He has composed eleven compositions in verse containing various types of subjects in **Sanskrit** with excellent distinguishing features.

उपजाति

जयोदयाख्यं चरितं जयस्य, महासुकाव्यं रचितं वरस्य।

छन्दोऽभिपूर्णं रसतोऽभिषिक्तं, जीयादलंकारयुतं जगत्सु ॥ 11 ॥

अर्थ : श्रेष्ठ जयकुमार का चरित्र जयोदय नामक महाकाव्य में है। वह काव्य समीचीन छन्दों से पूर्ण और अनेक रसों से भरा है। अलंकारों से युक्त जगत् में वह काव्य जयवन्त रहे।

Meaning : The character of most eminent **Jaikumar** has

been depicted in **Jayodaya** epic. This epic is full of befitting metres and various types of **Rasas** i.e. literary elegance, long live this epic possessed of rhetorics in this world.

वीरोदयाख्यं महनीयकाव्यं, शर्माभ्युदायोऽपि च वीरपस्य।

तथा स्वरूपं हि कथं भवेत्त-,दृषेः समाख्यं लघुकायकाव्यम्॥ 12॥

अर्थ : वीरोदय नाम का महान् काव्य है और वीर शर्माभ्युदय भी एक काव्य है। 'ऋषि का स्वरूप कैसा हो' यह लघुकाय काव्य का नाम है।

Meaning : There is **Veerodaya** named great work in verse and also **Veer Sharmabhyudaya**, **Rishi ka Swaroop Kaisa ho** is a mini composition in verse.

अनुष्टुप्

सुदर्शनमहाकाव्यं विशुद्धादर्शदर्शवत्।

भद्रोदयं च जानीयात् सर्गतुल्यं हि भद्रदम्॥ 13॥

अर्थ : निर्मल दर्पण में दर्शन के समान 'सुदर्शन महाकाव्य' है और भद्रोदय काव्य कल्याणप्रद है, इसमें सर्ग सुदर्शन काव्य के समान हैं।

Meaning : Like the sight in the clear mirror, is **Sudarsana** epic and the **Bhadrodaya** epic is conducive to well-being of all. It contains cantos/chapters like **Sudarsana** epic..

गद्यपद्यमयं चम्पू-काव्यं व्यक्तं दयोदयम्।

वरं सम्यक्त्वसाराख्यं शतकं कापथघट्टनम्॥ 14॥

अर्थ : 'दयोदय' नाम का गद्य-पद्य मय चम्पू काव्य स्पष्ट ही है। 'सम्यक्त्वसार' शतक नाम का श्रेष्ठ काव्य कुपथ का विरोधी है।

Meaning :- The **Dayodaya** named **Champu** composition in prose and verse is precisely clear in itself (**Champu** is a type of composition treating the same subject in alternate passages of prose and verse). The excellent work in verse named **Samyaktva SarShatak** is opposed to wrong path.

चौपाई

मुनिमनोरञ्जनाऽशीतिस्तु, मनोमुनेर्मोदाय सदाऽस्तु।

एवं द्वादशभक्तिसंख्यको, भक्तिसंग्रहो ग्रन्थो ग्रथितः॥ 15॥

अर्थ : मुनि के मन को सदा प्रसन्न करने के लिए 'मुनि मनोरञ्जनाशीति' है। बारह भक्ति की संख्या वाला 'भक्ति संग्रह' ग्रन्थ लिखा है।

Meaning : For keeping the mind of the Muni as ever pleasing there is **Muni Manoranjnashiti**. He has written **Bhakti Sangraha** treatise containing **12 Bhakti** (devotion) in number.

हितसम्पादकमिष्टं काव्यं, निःप्रतिमं सर्वं विज्ञेयम्।

अथ मातरि भाषायामुक्तं, यत्तदहं प्रवदामि समस्तम्॥ 16॥

अर्थ : 'हित सम्पादक' यह भी इष्ट काव्य है, ये सभी अतुलनीय जानना। अब हिन्दी भाषा में जो लिखा है, वह सब कहता हूँ।

Meaning : **Hita Sampadaka** is also a cherished work in verse. All these works should be known as unequalled/immeasurable. Now I tell that all which has been written in Hindi language.

भाग्यपरीक्षाविधो विधेयो, गुणसुन्दरवृत्तान्तो ध्येयः।

पवित्रमानवजीवनसंज्ञः पठनीयः सर्वैः भुवि सद्यः॥ 17॥

अर्थ : 'भाग्य परीक्षा' नाम का ग्रन्थ विधेय है, 'गुणसुन्दर वृत्तान्त' ध्यान रखने योग्य है। 'पवित्र मानव जीवन' नाम का ग्रन्थ तो सभी को इस पृथ्वी पर शीघ्र पठनीय है।

Meaning : The **Bhagya Pariksha** named treatise is worth following. **Gunsundar Vrattant** is worthy to be kept in mind. Well, the treatise named **Pavitra Manav Jeevan** is worthy to be read instantly by all on this earth.

काव्यं श्रेष्ठं ऋषभचरित्रं, चरितार्थं पुरुषार्थपरत्वम्।

अथ गद्ये यद्रचितं तेन, तन्निगदामि त्वं शृणु सर्वं॥ 18॥

अर्थ : 'ऋषभ चरित्र' एक श्रेष्ठ काव्य है जो कि पुरुषार्थ प्रधान और

चरितार्थ है। अब गद्य में उन्होंने जो लिखा है उसे पूर्ण कहता हूँ सुनो–

Meaning : The **Risabh Charitra** is an excellent work in verse consisting predominantly human effort which has been given a practical shape. Now I tell all that which has been written by him in prose, hear -

सचिद्विवेचनमहो च मुख्यं, सचिद्विचाराख्यं शिवसख्यम्।
कुन्दकुन्द एवं जिनधर्मः, सरलविवाहविधोचितमर्म॥ 19॥
इतिहासस्य पृष्ठो वै नाम, शोधनिबंधो लघुपरिमाणः।
समयसारशास्त्रस्य सुटीका, विहितापैतविवादा सैका॥ 20॥

अर्थ : अहो 'सचित्त विवेचन' और 'सचित्त विचार' ये दोनों ही कृति मोक्ष की सखा हैं और मुख्य हैं। 'कुन्दकुन्द एवं जिनधर्म', 'सरल विवाह विधि', 'इतिहास के पन्ने' यह शोध निबंध लघु परिमाण वाला है। श्री 'समयसार' ग्रन्थ की प्रमुख टीका लिखी है जो विवाद रहित है।

Meaning : Oh! **Sachitt Vivechan** and **Sachitta Vichar** both these works are friends of salvation and are eminent. Research easy **Kund-Kund Evam Jina Dharma**, **Saral Vivaha Vidhi, Itihas ke Panne** are in short form. He has written a prominent commentary on **Samaysar** treatise which is indisputable.

वसन्ततिलका

गद्याकृतिर्विदितरत्नकरण्डशास्त्रे
शब्दार्थभावयुतमानवधर्मसंज्ञा।
भावानुवाद उदयादिविवेकनामा
पद्यात्मकः समयसारविशुद्धशास्त्रे॥ 21॥

अर्थ : शब्दार्थ और भाव के साथ 'मानवधर्म' नाम से 'रत्नकरण्डक श्रावकाचार' पर गद्य में टीका है तथा 'समयसार' ग्रन्थ पर पद्यात्मक विवेकोदय नाम का **भावानुवाद है।**

Meaning : There is commentary on **Ratankarandak**

Shravakachar in prose by the name of **Manav Dharma** with words-meaning and gist (literal sense) and **Vivekodaya** named free translation (depicting literal sense) in verse of **Samaysar** treatise.

सारे कृतिः प्रवचनस्य मनोऽभिरामा
सुश्लोकभारसहिता किल देववाण्याम्।
तत्त्वार्थसूत्रसमयस्य च पञ्चमी वा
सर्वा ललाटतिलकैव हि रोचमाना॥ 22॥

अर्थ : 'प्रवचनसार' की टीका है जो मन को सुंदर लगती है तथा उसी के साथ संस्कृत के श्लोक भी उन गाथाओं के विषय में हैं। 'तत्त्वार्थसूत्र' की हिन्दी टीका है जो कि पाँचवी है। ये सभी ललाट पर लगे तिलक के समान सबको रुचिकर हैं।

Meaning : There is commentary on **Pravachansar** which seems beautiful to the mind and along with it there are **Sanskrit** couplets related to respective precepts. There is **Hindi** commentary on **Tattvartha Sutra** which is fifth of its kind. These all are extremely interesting to all like the **Tilaka** (an ornamental coloured mark on the forehead) drawn on the forehead.

शार्दूलविक्रीडित

कर्त्तव्याय पथप्रदर्शनमिदं गद्यात्मकाख्यानकं
तेनाऽकारि चरित्रवृद्धिजनकं विद्यार्थिनां दीपवत्।
नित्यं षोडशतीर्थनायकजिन-श्रीशान्तिनाथस्य भो!
भव्यानां भुवि भुक्तिमुक्तिमतुलां दातुं विधानं क्षमम्॥ 23॥

अर्थ : 'कर्त्तव्यपथ प्रदर्शन' नाम से गद्यात्मक आख्यान लिखा है जो कि विद्यार्थियों के लिए दीप के समान हैं और चरित्र की वृद्धि को करने वाला है। सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ का विधान भी (संस्कृत में) रचा है जो कि इस भूतल पर भव्यों को अतुलनीय भुक्ति और मुक्ति देने में समर्थ है।

Meaning : He has written a legend in prose by the name of

Kartavya Path Pradarsana which is like a lamp for students and elevates their character. He has also composed **Shri Shantinath Vidhana** of the sixteenth **Tirthankara** (Particular procedural worshipping composition in sanskrit) which is capable of bestowing immeasurable enjoyments and liberation on the accomplishable souls (**Bhavya Jeeva**) on the surface of this earth.

स्तोत्रं देवागमं चाष्टौ प्राभृतं नियमस्य च।

एषां पद्यानुवादञ्च भक्तीनामपि चाकरोत्॥ 24॥

अर्थ : देवागम स्तोत्र, अष्टपाहुड, नियमसार और स्व रचित भक्तियों के पद्यानुवाद आपने किए हैं।

Meaning : He has also translated **Devagam Stotra, Astapahud, Niyamsar** and self composed eulogical prayers in verse.

उपजाति

विद्यार्णवस्तु प्रथमोऽस्ति शिष्यो

विवेकवार्धिश्च विजयो मुनिश्च।

आर्योऽथ देशव्रतिषूत्तमीय

एकस्तथा सन्मतिनामधेयः॥ 25॥

वा क्षुल्लके पूज्यपदेऽधिरूढः

श्रीसम्भवो वै विनयः सुखाख्यः।

स्वरूपमोदाख्य इ चिन्मयी वा

कृता कृतिर्वर्णिसमाधिबह्वी॥ 26॥

अर्थ : श्री विद्यासागर मुनि आपके प्रथम शिष्य हुए। मुनि श्री विवेक सागरजी, मुनिश्री विजयसागरजी भी आपके शिष्य हुए। श्री सन्मतिसागर नाम के एक ऐलकजी, क्षुल्लक श्री सम्भवसागरजी, विनयसागरजी, सुखसागरजी एवं स्वरूपानन्दजी आपसे दीक्षित चैतन्य कृतियाँ हैं। इसके अलावा आपने बहुत से व्रतीजनों की समाधि करायी है।

Meaning : **Muni Shri Vidyasagar** was his first disciple,

Muni Shri Viveksagar ji, **Muni Shri Vijayasagar ji**, also became his disciples. **Elaka named Sanmatisagar ji, Ksullaka Shri Sambhavsagar Ji, Vinaysagar ji, Sukhsagar ji** and **Swaroopanand ji** are conscious creations initiated by him. Besides, he has successfully caused completed **Samadhi** (holy death) of several devouts.

उपजाति

षण्मासपूर्वं हि कृतप्रयासः

समाधिसिद्ध्यै स्वपदं प्रदाय।

विद्यार्णवायाऽभवदस्तमानः

'प्रणम्य' तं स्वः सुविराजमानः॥ 27॥

अर्थ– छह महीने पहले से आपने समाधि को साधने का प्रयास किया तथा मुनि विद्यासागरजी को अपना आचार्य पद देकर मान रहित हो उनको प्रणाम करके अन्त में स्वर्ग में विराजमान हो गए।

Meaning : He attempted a good deal of perseverance to accomplish the **Samadhi** (holy death) before six months (of his demise through holy death) and entrusting his status/rank of **Acharya** to **Muni Shri Vidyasagar ji** and being free from pride of dignity paid his obeisance to him (**Shri Vidyasagar ji**) and at last ensconced in the paradise (i.e. departed from the world).

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पूजन

(शार्दूल विक्रीडित छन्द)

निर्ग्रन्थोनिरतात्मसौख्य-निलयो, मुक्त्यातुरस्तारकस्।
तीर्थोद्धारक! वीतकामकलहो, विज्ञोऽपि गोरक्षकः।
सन्मार्गं हृदि शान्तितो नयति यो, भव्यांश्च मुक्तिश्रिये
विद्यासागर-पूज्यपाद-कमलं, संस्थाप्य संपूजये॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्र!अत्र अवतर अवतर संवौषट्!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जन्मान्तकापन्नभयातिभीता, जवञ्जवे जन्तव आर्तनीता।
विद्यागुरोऽर्चन्ति हरोपविद्या,भवान्तमद्भिश्चरणं हि सर्वाः॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतं मया चन्दनपूतलेप्यं, न शीतमाप्तं मनसाऽपि किञ्चित्।
ततोऽघ-सन्तप्तमनोविशान्त्यै, तवाऽर्च्यते मङ्गलपादपद्मम्॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय संसार ताप विनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञेयप्रभावेन हि खण्डितो य-, दखण्डितज्ञानविमण्डनाय।
विधौतविद्योतनतण्डुलौघैः, पादाम्बुजं वै सुगुरोऽर्च्यते ते॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

लोके तु सत्वाः कुसुमास्त्रदोषै,र्भ्रमन्ति नित्यं भवभूमिमध्ये।
कामाष्टकं शर्तुममर्त्य-शत्रुं,पुष्पैस्त्वदीयं चरणं यजेऽहम्॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वरं विशुद्धं रुचिरं मयेदं, भुक्तं मुहु र्मोहवशेन सर्वम्।
क्षुद्रोगशान्त्यै भुवि नात्र वैद्यो, नैवेद्यमानीय पदे यजेऽहम्॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उन्मत्तवन्मोह-तमः प्रसारान्, निधाय दुःखं भवभार ऊढः।
अलब्धभूतिं चरणं विलब्धुं, मयाऽर्च्यते दीपकरोचिषा ते॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एकं निमित्तं भवरोगसूते, र्देहात्ममध्ये विपरीतबुद्धिः।
भक्त्यानले कल्मषमोहधूपं, क्षिप्त्वा पवित्रं शरणं दधेऽहम्॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वातादमक्षोटमनूनमैलां, प्रस्थाप्य शुद्धं तपनीयपात्रे।
अमूल्य-निर्वाण-फलं समाप्तुं, पदानुरागी तव पूजयेऽहम्॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्याम्बुधे! ते हिम-चन्दनं वाः, सुतण्डुलं वा कुसुमं प्रदीपम्।
धूपं फलं चारुचरुं मिलित्वा, प्रपूज्यते प्राप्तुमनर्घधाम॥ 9॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य विद्यासागरमुनीन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(छन्द - चौपाई)

गुरुगुणधामगुरो!भुवि भक्तः, को गातुं गुणगानं शक्तः।
नामालापोऽपि यतः पापं, हन्ति ततोऽहं ब्रुवे प्रतापम्॥ 1॥

दक्षिणभागे भारतदेशे, रम्ये कर्नाटक - प्रदेशे।
ग्रामे सदलगि सत्कुलगेहे, बहुलक्षणयुत जननी-देहे॥ 2॥

शरत्रियामावसिते दिव्यः, शिशुरजनि हि शशिकान्ति भव्यः।
पितुर्मलप्पासीत्सुनाम, सुश्रीमती च मातुर्नाम॥ 3॥

रूप्यसमं रूपं ते रुचितं, सकलजनानामङ्के ललितम्।
नासया हि जितचम्पकपुष्पं, रागाकीर्णकपोलं रक्तं॥ 4॥

(दोहा)

कंठे नो रेखात्रयं किन्तु रत्नमयधाम।
विद्याधर!भूमौ ततो विश्रुतनामाभाणि॥ 5॥

(चौपाई)

सुखतो विगते सति शिशुकाले, किं सत्यं किं हेयमिहाले।
इत्यूहापोहं मम चित्तं, तुदते किं करणीयं युक्तम्॥ 6॥

सह कालेन हि जातं वित्तं, क्षययुतमघखानि वैं चित्तम्।
काले कलौ कलिः प्रतिपादं, कालो व्यर्थमेति संवादे॥ 7॥

कारागारं वनितापत्यं, भोगं भंगुर - मखिलमसत्यम्।
गृहतो मनसि मराले मत्वा, पुरमजमेरं प्रति लघु गत्वा॥ 8॥

भवता देशव्रतं गृहीतं, देशभूषणाद्यतेः समीपम्।
रुचितो यजतः पठतो वीतं, वर्षं मुक्त्वा तत् सामीप्यम्॥ 9॥

किशनगढेऽगमदथ पठनार्थं, तत्रस्थितसुमुनेः करुणार्थम्।
याचतेस्म संज्ञं ज्ञानाब्धिं, कविं वरिष्ठञ्चागम-विज्ञम्॥ 10॥

(दोहा)

नमो ज्ञानसागरचिदे, विगतमोहरतिमान!
शान्तचित्त! निःस्पृहबुधे, निखिलगुणौघनिधान!॥ 11॥

(चौपाई)

सम्प्राप्यारं पदं प्रशीतं, हृष्टस्तृषातुरै र्वाः पीतम्।
शुभलक्षणलाञ्छनयुत-गात्रं, दृष्ट्वाभूदुपकारकपात्रम्॥ 12॥

शिष्टमधुरमितनम्रैर्वाक्यै, र्भक्त्याचरणसपर्याकार्यैः।
लब्ध्वा हृदये परां प्रसत्तिं, संप्रवर्ध्य गुरुवचनसुभक्तिम्॥ 13॥

कामाक्रोशारीन्विदित्वा, बाह्यान्तरसङ्गाङ्गं हित्वा।
तत्पादे मुनिदीक्षावाप्ता, सर्वसिद्धिदा जिनरूपाप्ता॥ 14॥

यथाजातदैगम्बररूपं, भवता हितं ततं चिद्रूपम्।
चेतनसूतसुधां सुपातुं, त्रासितसर्वजनानवपातुम्॥ 15॥

अवतरितो भुवि भुवन-हितार्थं, यथा कौमुदी जलेरुहार्थम्।

कल्याणाभिनिवेशकचक्षुः, शिथिलाचरणविनाशकभिक्षुः॥ 16॥

(दोहा)

महाव्रताभूषित - वपु - र्विद्याब्धस्त्वन्नाम।
सत्यवचोगुण-धारको देहि शान्तिसुखधाम॥ 17॥

(चौपाई)

धर्मध्याने तत्त्वे सारे, संवेगे चिन्मयसंसारे।
यस्य मनो लगति श्रुत-पाठे, परहित सम्पादन करणार्थे॥ 18॥

ज्ञानगुरूणां प्रथमः शिष्यः, त्वं सुशोभितः पट्टे यस्य।
सम्प्रति त्वमन्तरमतियोगी, मनो जनानामक्ष-विभोगि॥ 19॥

संस्कृतपद्ये कृतमनवद्यं, षट्शतकं बहु-हिन्दी-पद्यम्।
'मूकमाटी' कृतिरद्भुतपात्री, पराध्यात्म-जिनदर्शनदात्री॥ 20॥

क्षुद्रैकान्तगिरामयिभेत्ता, जन्मजरारीणामतिहर्ता।
जय जय जय जिनशासन भक्त, जय जय निर्मम चानासक्त॥ 21॥

देहि देहि रत्नत्रय-भूतिं, भवतु भवतु मम तवानुभूतिः।
नय नय नय मा श्री प्रासादं, भव भव भव हर्षाय सदा त्वम्॥ 22॥

कलिकाले भो! महद् - विचित्रं दर्शनमेतादृशमाचार्यम्।
बहूक्तेन किं धन्यंमन्यः, शमभावाय हि पुनः 'प्रणम्य'॥ 23॥

पूजार्हं पूजा कृता गुणपुंजं प्रणमामि।
पूजातः पूज्यस्य यत् पूज्योऽहं विभवामि॥ 24॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥